खण्ड-ख (व्याकरण, अनुवाद तथा रचना)

1 माहेश्वर सूत्र एवं वर्णों का उच्चारण-स्थान

[भाषा-शिक्षा हेतु व्याकरणशास्त्र के अध्ययन को अपूर्व साधन माना गया है। भाषा में अनेक ध्वनियाँ होती हैं। इन ध्वनियों के प्रतीक को वर्ण कहते हैं। अनेक वर्णों के मिलने पर शब्द बनता है और अनेक शब्दों के मिलने पर भाषा। भाषा को नियन्त्रित करने के लिए ही व्याकरण के नियम बनाये गये हैं। संस्कृत हमारे विश्व की सर्वाधिक समृद्ध और प्राचीनतम् भाषा है। संस्कृत भाषा का व्याकरण अति वैज्ञानिक है।]

संस्कृत व्याकरण को माहेश्वरशास्त्र कहा जाता है। माहेश्वर का अर्थ है– शिवजी। पाणिनि की उपासना से प्रसन्न होकर शिवजी ने १४ बार अपना डमरू बजाया, उससे जो ध्वनि निकली, वह चौदह सूत्रों के रूप में है। १४ माहेश्वर सूत्र निम्नलिखित हैं–

१- अइउण्, **२-** ऋऌक्, **३-** एओङ्, **४-** ऐऔच्, **५-** हयवरट्, **६-** लण्, **७-** ञमङणनम्, **८-** झभञ्, **९-** घढधष्, **१०-** जबगडदश्, **११-** खफछठथचटतव्, **१२-** कपय्, **१३-** शषसर्, **१४-** हल्,

अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ ये नौ वर्ण स्वर हैं। शेष ३३ व्यंजन हैं।

वर्ण एवं प्रत्याहार

वर्ण-विचार

वर्ण का अर्थ है–अक्षर अथवा ध्वनि। मुख से निकली हुई उस छोटी से छोटी ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसका विभाग न हो सके। जैसे–अ, इ, उ, क्, च्, ट्, त् इत्यादि।

संस्कृत में स्वर और व्यञ्जन दो प्रकार के वर्ण होते हैं–

स्वर (अच्)–जिन वर्णों के उच्चारण करने में अन्य वर्ण की सहायता न ली जाय, उन्हें स्वर कहते हैं। स्वर तीन प्रकार के होते हैं–(१) ह्रस्व, (२) दीर्घ, (३) प्लुत।

(१) ह्रस्व स्वर–जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उसे ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये पाँच हैं–अ, इ, उ, ऋ, ऌ।

(२) दीर्घ स्वर–जिस स्वर के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगे, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं। ये आठ हैं–आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

(३) प्लुत स्वर–जिस स्वर के उच्चारण में तीन मात्रा का समय लगे, उसे प्लुत स्वर कहते हैं। प्लुत स्वर के बाद ३ का अंक बना होता है जैसे–ओ३म्।

स्वरों के ज्ञान के लिए छात्र/छात्राएँ निम्न श्लोक कंठस्थ करें–

एकमात्रो भवेत् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्।।

व्यञ्जन (हल्)–जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर की सहायता लेनी पड़े, उसे व्यञ्जन कहते हैं। व्यञ्जन चार प्रकार के माने गये हैं–स्पर्श, ऊष्म, अन्त:स्थ और संयुक्त।

(१) स्पर्श व्यञ्जन–स्पर्श व्यञ्जन वे हैं जिन वर्णों के उच्चारण में मुख के विभिन्न भागों का स्पर्श होता है। इनकी संख्या २५ है–

क वर्ग– क ख ग घ ङ।
च वर्ग– च छ ज झ ञ।
ट वर्ग– ट ठ ड ढ ण।
त वर्ग– त थ द ध न।
प वर्ग– प फ ब भ म।

(२) ऊष्म व्यञ्जन–ऊष्म व्यञ्जन वे हैं, जिन वर्णों के उच्चारण में वायु की रगड़ से ऊष्मा उत्पन्न होती है। इनकी संख्या ४ है– श, ष, स, ह।

(३) अन्तःस्थ व्यञ्जन–इनकी संख्या चार है– य, र, ल, व।

(४) संयुक्त व्यञ्जन–दो व्यञ्जनों के योग से बनने वाले वर्ण संयुक्त व्यञ्जन कहलाते हैं। ये तीन हैं– क्+ष = **क्ष**, त्+र = **त्र**, ज्+ञ = **ज्ञ**।

(ं) अनुस्वार–वर्ण के ऊपर लगे बिन्दु को अनुस्वार कहते हैं। जैसे–कं, नं, शं आदि।

(:) विसर्ग–वर्ण की अंतिम ध्वनि 'ह' को प्रकट करने के लिए विसर्ग (:) का प्रयोग होता है।

(ँ) अनुनासिक–क वर्ग से प वर्ग तक सभी वर्गों के अन्तिम वर्ण को अनुनासिक कहते हैं, क्योंकि इनका उच्चारण करने के लिए श्वास को अंशत: नासिका से बाहर निकालना पड़ता है। ये वर्ण हैं–ङ् , ञ् , ण् , न् , म् ।

वर्णों का उच्चारण-स्थान

उच्चारण स्थान	वर्ण
• **कण्ठ**	अ क ख ग घ ङ ह :
• **तालु**	इ च छ ज झ ञ य श
• **मूर्धा**	ऋ ट ठ ड ढ ण र ष
• **दन्त**	ऌ त थ द ध न ल स
• **ओष्ठ**	उ प फ ब भ म
• **नासिका**	ञ म ङ ण न
• **कण्ठ+तालु**	ए ऐ
• **कण्ठ+ओष्ठ**	ओ औ
• **दन्त+ओष्ठ**	व

प्रत्याहार बनाना

जिनकी सहायता से कम-से-कम शब्दों में अधिकतम बात कही जा सके, उन्हें प्रत्याहार कहते हैं। माहेश्वर सूत्रों में से किसी भी बिना हलन्त वाले वर्ण का पहला अक्षर ले लें और किसी हलन्त वर्ण का दूसरा अक्षर ले लें। इन दो वर्णों के नाम के प्रत्याहार से बीच वाले सभी वर्णों का, जो हलन्त न हों, बोध होता है। जैसे–अइउण्, ऋऌक्, एओङ्, ऐऔच्, में से यदि अ को च से मिला दें तो अच् प्रत्याहार बनता है। अच् के अन्तर्गत अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ सभी स्वर आ जाते हैं। इस तरह हल् के अन्तर्गत सभी व्यञ्जन आते हैं।

प्रत्याहारों की संख्या ४२ है। विवरण निम्नलिखित है—

१. **अक् –** अ इ उ ऋ ऌ ।
२. **अच् –** अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ।

३. **अट् –** अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ।
४. **अण् –** अ इ उ ।
५. **अण् –** अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ।
६. **अम् –** अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न ।
७. **अल् –** अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ।
८. **अश् –** अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ।
९. **इक् –** इ उ ऋ ऌ ।
१०. **इच् –** इ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ओ ऐ औ ।
११. **इण् –** इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ।
१२. **उक् –** उ ऋ ऌ ।
१३. **एङ् –** ए ओ ।
१४. **एच् –** ए ओ ऐ औ ।
१५. **ऐच् –** ऐ औ ।
१६. **खय् –** ख फ छ ठ थ च ट त क प ।
१७. **खर् –** ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ।
१८. **ङम् –** ङ ण न ।
१९. **चय् –** च ट त क प ।
२०. **चर् –** च ट त क प श ष स ।
२१. **छव् –** छ ठ थ च ट त ।
२२. **जश् –** ज ब ग ड द ।
२३. **झय् –** झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ।
२४. **झर् –** झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ।
२५. **झल् –** झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ।
२६. **झश् –** झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ।
२७. **झष् –** झ भ घ ढ ध ।
२८. **बश् –** ब ग ड द ।
२९. **भष् –** भ घ ढ ध ।
३०. **मय् –** म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ।
३१. **यञ् –** य व र ल ञ म ङ ण न झ भ ।
३२. **यण् –** य व र ल ।
३३. **यम् –** य व र ल ञ म ङ ण न ।
३४. **यय् –** य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ।
३५. **यर् –** य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स।
३६. **रल् –** र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ।
३७. **वल् –** व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष ह ।

३८. **वश् –** व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ।
३९. **शर् –** श ष स ।
४०. **शल् –** श ष स ह ।
४१. **हल् –** ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ।
४२. **हश् –** ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ।

प्रयत्न

वर्णों के उच्चारण करने की चेष्टा को प्रयत्न कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है। आभ्यन्तर और बाह्य। आभ्यन्तर से तात्पर्य उस चेष्टा से है, जो ध्वनि निकलने से पहले मुख के अन्दर होता है। बाह्य प्रयत्न मुख से वर्ण के निकलते समय होता है।

(क) आभ्यन्तर प्रयत्न– यह प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है–

१. स्पृष्ट– इस प्रयत्न में जिह्वा उच्चारण स्थानों को स्पर्श करती है, इसलिए इन्हें स्पर्श वर्ण कहते हैं। इसमें क से म तक के वर्ण आते हैं।
२. ईषत्-स्पृष्ट– इस प्रयत्न में जिह्वा उच्चारण स्थान को थोड़ा स्पर्श करती है। इसमें य र ल व वर्ण आते हैं।
३. विवृत– यह प्रयत्न स्वरों का है। इनके उच्चारण में मुँह खोलना पड़ता है।
४. ईषत्-विवृत– इसमें जिह्वा को कम उठाना पड़ता है। इसमें श ष स ह वर्ण आते हैं।
५. संवृत– इसमें वायु का मार्ग बन्द रहता है, यह केवल 'अ' स्वर में प्रयुक्त होता है।

(ख) बाह्य प्रयत्न– उच्चारण की उस चेष्टा को बाह्य प्रयत्न कहते हैं, जो मुख से वर्ण निकलते समय होती है। यह ११ प्रकार का होता है—विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त और त्वरित।

अभ्यास-प्रश्न

(क) १. अ, च, ब में से किसी **एक** का उच्चारण-स्थान लिखिए।
२. तालु से किन वर्णों का उच्चारण होता है?
३. त और थ का उच्चारण किस स्थान से होता है?
४. कण्ठ से किन वर्णों का उच्चारण होता है?
५. माहेश्वर सूत्रों की संख्या कितनी है?
६. अन्त:स्थ के अन्तर्गत कितने वर्ण आते हैं?
७. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
अ, ङ, व
८. निम्नलिखित में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
ठ, त, प
९. अच्, हल्, चर् में से किसी **एक** प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्णों का उल्लेख कीजिए।
१०. इ, ट, क में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए।
११. इक्, जश्, यण् में से किसी **एक** प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्णों को लिखिए।
१२. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए—
: (विसर्ग), इ, न ।

१३. उ, ए, ऋ में से किसी **एक** प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्णों को लिखिए।

१४. हल्, इक्, उक्, में से किसी **एक** प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्णों को लिखिए।

१५. प्रत्याहार किसे कहते हैं?

१६. स्वरों के उच्चारण में कौन-सा प्रयत्न होता है?

१७. नासिका के सहारे किन वर्णों का उच्चारण होता है?

१८. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
उ, ग, त

१९. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
इ, ब, र

२०. निम्नलिखित प्रत्याहारों में से किसी **एक** प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्ण लिखिए–
अक, एच्, झष्

२१. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
अ, ठ, य

२२. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
अ, ज, ष

२३. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
श्, ष्, स्

२४. निम्नलिखित प्रत्याहारों में से किसी **एक** के अन्तर्गत आने वाले वर्णों को लिखिए–
अच्, यण् , एङ्

२५. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** का उच्चारण स्थान लिखिए–
इ ऋ ऌ

२६. निम्नलिखित वर्णों में से किसी **एक** वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए–
उ, ख, ध

२७. निम्नलिखित प्रत्याहारों में से किसी **एक** प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्णों को लिखिए–
अक्, खर्, इक्

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के चार विकल्प दिये गये हैं। सही विकल्प को चुनकर लिखिए :

१. 'अण्' प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन-कौन से वर्ण आते हैं?
(अ) अ, न **(ब)** अ, इ, उ **(स)** अ, य **(द)** मात्र अ वर्ण।

२. न एवं ण का उच्चारण स्थान है–
(अ) दन्त **(ब)** कण्ठ **(स)** नासिका **(द)** ओष्ठ।

३. जश् प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन-कौन से वर्ण आते हैं–
(अ) ङ, ण, न **(ब)** ज, ब, ग, ड, द **(स)** ज, ब, प, न **(द)** ज, भ, ग, ड।

४. एच् प्रत्याहार में वर्ण होते हैं–
(अ) ए ओ ऐ औ **(ब)** ए ओ ऐ औ ह य व र **(स)** ए ओ **(द)** ए ओ ङ ऐ औ च्।

५. इक् प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण हैं–
(अ) इ, उ, ण, ऌ **(ब)** अ, इ, उ, ण **(स)** इ, उ, ऋ, ऌ **(द)** इ, उ, ऋ, क् ।

६. शर् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्ण हैं–
(अ) श ष स **(ब)** च ट त व श **(स)** श ष स ह **(द)** श ष ।

७. अक् प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण हैं–
(अ) इ उ ऋ ऌ **(ब)** अ इ उ ऋ ऌ **(स)** अ इ उ ण ऋ ऌ क् **(द)** अ इ उ ऋ ऌ क।

८. यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्ण हैं–
(अ) ह य व र **(ब)** य व र ल **(स)** व र ल **(द)** ह य व।

९. 'चर' प्रत्याहार के अन्तर्गत आनेवाले वर्ण हैं–
(अ) श, ष, स, ह **(ब)** ज, ब, ग, ड, द **(स)** च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स् **(द)** य्, व्, र्, ल्।

१०. झश् प्रत्याहार के अन्तर्गत आनेवाले वर्ण हैं–
(अ) झ, भ, घ, ढ, ध **(ब)** झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द
(स) झ, भ, घ, ढ, ध **(द)** झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ।

११. अङ् प्रत्याहार के अन्तर्गत आनेवाले वर्ण हैं–
(अ) अ, इ, उ **(ब)** अ, इ, उ, ऋ, ऌ **(स)** अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ **(द)** ए ओ।

१२. माहेश्वर सूत्रों की संख्या है–
(अ) चौबीस **(ब)** चौदह **(स)** बारह **(द)** पाँच।

(ग) निम्न में शुद्ध वाक्य पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

१. अ और क् का उच्चारण स्थान एक नहीं है। ( )
२. च् वर्ण का उच्चारण स्थान तालु है। ( )
३. प् वर्ण का उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ है। ( )
४. ल् और स् का उच्चारण दाँतों के सहारे होता है। ( )
५. मूर्धा से उच्चरित होने वाले वर्णों में ट् ड् और र् है। ( )
६. इ और य् का उच्चारण स्थान एक है। ( )

●●●

2 सन्धि-ज्ञान
(स्वर एवं व्यंजन संधियों का परिचय)

विद्या + आलय = विद्यालय । इति + आदि = इत्यादि। जगत् + ईश = जगदीश। इन शब्दों को यदि शीघ्रता से पढ़ा जाय तो पृथक्-पृथक् उच्चारण नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में उनका मिल-जुलकर नया उच्चारण होता है। इस नये उच्चारण में जो परिवर्तित ध्वनि बन जाती है, उसे सन्धि के द्वारा बना हुआ मानते हैं। इस प्रकार 'सन्धि' शब्द का अर्थ है–जोड़ अथवा मेल। सन्धि शब्दों के मिले हुए उच्चारण का एक रूप है, अत: दो शब्दों के मिलने से जो वर्ण सम्बन्धी परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

सन्धि के भेद–सन्धि के तीन भेद हैं–

१. स्वर सन्धि (अच् सन्धि)–जब पहले शब्द का अन्तिम स्वर दूसरे शब्द के आदि स्वर से मिलता है, तो इसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे–

देव + आलय: = देवालय: = अ + आ = आ।

२. व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि)–जब पहले शब्द का अन्तिम व्यञ्जन दूसरे शब्द के आदि व्यञ्जन या स्वर से मिलता है, तो इसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। जैसे–दिक् + गज = दिग्गज (क् + ग = ग्ग)

३. विसर्ग सन्धि–जब व्यञ्जन का विसर्ग में या विसर्ग का व्यंजन में परिवर्तन होता है, तो विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे–प्राय: + चित = प्रायश्चित्।

स्वर (अच्) सन्धि

स्वर अनेक हैं और उनके अलग-अलग मिलने के अनुसार अलग-अलग सन्धियाँ होती हैं,

जैसे– दीर्घ सन्धि, गुण सन्धि, यण सन्धि, वृद्धि सन्धि, अयादि सन्धि।

1. दीर्घ सन्धि

सूत्र–''अक: सवर्णे दीर्घ:।''

यदि ह्रस्व या दीर्घ अ इ उ ऋ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ इ उ ऋ ही आवे तो उनके स्थान पर दीर्घ हो जाता है।

जैसे– (१) अ या आ के बाद अ या आ आने पर = आ

धन + अर्थी	= धनार्थी	=	अ + अ = आ
दैत्य + आकार:	= दैत्याकार:	=	अ + आ = आ
विद्या + अर्थी	= विद्यार्थी	=	आ + अ = आ
राम + अवतार:	= रामावतार:	=	अ + अ = आ
तथा + अपि	= तथापि	=	आ + अ = आ

(२) इ या ई के बाद इ या ई आने पर = ई

क्षिति + ईश:	= क्षितीश:	=	इ + ई = ई
गिरि + ईश:	= गिरीश:	=	इ + ई = ई
श्री + ईश:	= श्रीश:	=	ई + ई = ई

(३) उ या ऊ के पश्चात् उ या ऊ= ऊ
वधू + उत्सवः = वधूत्सवः
लघु + उर्मिः = लघूर्मिः
भानु + उदयः = भानूदयः
साधु + उक्तम् = साधूक्तम्
गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः
विधु + उदयः = विधूदयः

(४) ऋ या ॠ के पश्चात् ऋ या ॠ = ॠ
मातृ + ऋणम् = मातॄणम्
होतृ + ऋकारः = होतॄकारः

अभ्यास-प्रश्न-1

१. सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
सूर्यास्तम्, धनार्थी, महात्मा, नदीशः, रवीन्द्रः, महीशः,कपीशः, पुस्तकालयः, देवालयः, दिवाकरः, तथापि, देवर्षिः, लघूर्मिः भानूदयः।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
विद्या + अर्थी, क्षेत्र + अधिकारः, गिरि + ईशः, पितृ + ऋणम्, विधु + उदयः, सु + उक्तिः, हरि + ईशः, हिम + अद्रिः।

३. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य पर सही (✔) का चिह्न लगाइए–
१. दीर्घ और ह्रस्व स्वर मिलने पर दीर्घ होता है।
२. ह्रस्व और दीर्घ स्वर मिलकर दीर्घ नहीं होता।
३. ई + इ और इ + ई मिलने पर ई नहीं होता।
४. उ + ऊ = ऊ होता है।

४. (१) ऋ और ऋ मिलकर क्या बनेगा?
(२) 'आ' का 'अ' से योग होने पर क्या बनेगा?
(३) ऐसे दो शब्द बताइये जिनके अन्त में दीर्घ ई हो तथा उनसे मिलने वाले के शुरू में भी दीर्घ ई हो।
(४) ऐसे दो शब्द मिलाइए जिनमें दोनों ओर ह्रस्व 'इ' हो।
(५) अक् प्रत्याहार से क्या समझते हैं?

2. गुण सन्धि

सूत्र–''आद्गुणः''

यदि अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ उ ऋ और ऌ आते हैं, तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ, अर् और अल् गुण हो जाता है।

जैसे–

सुर + ईशः = सुरेशः	=	अ + ई = ए
उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः	=	अ + इ = ए
राजा + इन्द्रः = राजेन्द्रः	=	आ + इ = ए
रमा + ईशः = रमेशः	=	आ + ई = ए
हित + उपदेशः = हितोपदेशः	=	अ + उ = ओ
महा + उत्सवः = महोत्सवः	=	आ + उ = ओ
पीन + ऊरुः = पीनोरुः	=	अ + ऊ = ओ
गङ्गा + ऊर्मिः = गङ्गोर्मिः	=	आ + ऊ = ओ

देव + ऋषिः = देवर्षिः	=	अ + ऋ = अर्
महा + ऋषिः = महर्षिः	=	आ + ऋ = अर्
ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः	=	अ + ऋ = अर्
तव + ऌकारः = तवल्कारः	=	अ + ऌ = अल्
गंगा + उदकम् = गंगोदकम्	=	आ + उ = ओ
नर + इन्द्रः = नरेन्द्रः	=	अ + इ = ए
सूर्य + उदयः = सूर्योदयः	=	अ + उ = ओ

अभ्यास-प्रश्न-2

१. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
महा + उत्सवः, रमा + ईशः, महा + इन्द्रः, भाग्य + उदयः, विद्या + उन्नतिः, सुर + इन्द्रः, जल + ऊर्मि, महा + ऋषिः, महा + ऌकारः, तव + लकारः, ग्रीष्म + ऋतुः।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
रमेशः, सूर्योदयः, हितोपदेशः, तवेदम्, भुवनेशः, महोदयः, महोत्सवः, महेशः, राजेशः, राजर्षिः, भाग्योदयः, जलोर्मिः, देवर्षिः, तवल्कारः।

३. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–
(१) अ + ऌ मिलकर 'अल्' रूप बनता है।
(२) ऌकारः में आदि स्वर ऌ है।
(३) कवीन्द्रः तथा रवीन्द्रः में गुण सन्धि है।
(४) देवर्षि में ऋ के कारण र् आया है।

स्वर सन्धि दर्पणम्

सन्धि का नाम	सूत्र	नियम	सिद्धान्त	उदाहरण
१. दीर्घ सन्धि	अकः सवर्णे दीर्घः	ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ से अ, इ, उ, ऋ मिलने पर दीर्घ हो जाता है।	अ, आ + अ, आ = आ। इ, ई + इ, ई = ई। उ, ऊ+उ, ऊ =ऊ। ऋ+ऋ= ॠ।	दैत्य+आकारः = दैत्याकारः। रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः। लघु+ऊर्मिः = लघूर्मिः। होतृ+ऋकारः = होतॄकारः।
२. गुण सन्धि	आद्गुणः	अ या आ के बाद इ, उ, ऋ आने पर क्रम से ए,ओ, अर् हो जाते हैं।	अ, आ+इ,ई=ए। अ, आ+उ,ऊ=ओ। अ, आ+ऋ= अर्।	उप+इन्द्रः= उपेन्द्रः। पीन+ऊरुः=पीनोरुः। देव+ऋषिः= देवर्षिः
३. यण् सन्धि	इकोयणचि	इ, उ, ऋ, ऌ के बाद असमान स्वर आने पर क्रमशः य्, व्, र्, ल् हो जाता है।	इ, ई+असमान स्वर= य्। उ, ऊ + असमान स्वर=व्। ऋ+असमान स्वर = र्। ऌ + असमान स्वर = ल्।	अभि+उदयः=अभ्युदयः। वधू+आदेशः=वध्वादेशः। धातृ+अंशः=धात्रंशः। ऌ+ आकृतिः=लाकृतिः।
४. वृद्धि सन्धि	वृद्धिरेचि	अ, आ के बाद ए, ऐ, ओ, औ आने पर ऐ, औ हो जाते हैं।	अ, आ+ए, ऐ=ऐ। अ, आ+ओ, औ=औ।	मत+ऐक्यम्=मतैक्यम्। दिव्य+औषधिः=दिव्यौषधिः।
५. अयादि सन्धि	एचोऽयवायावः	ए, ऐ, ओ, औ के बाद स्वर आने पर क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् हो जाता है।	ए+स्वर = अय्। ऐ+स्वर= आय्। ओ+स्वर= अव्। औ+स्वर = आव्।	ने+अनम्= नयनम्। नै+ अकः=नायकः। पो+इत्रम= पवित्रम्। पौ+अनः= पावनः।

3. यण् सन्धि

सूत्र– ''इकोयणचि''

यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ के बाद असमान स्वर आये तो इ, उ, ऋ, ऌ के स्थान पर क्रमशः य्, व्, र्, ल् (यण् प्रत्याहार) हो जाता है। **इकोयणचि** (इकः + यण् + अचि) का अर्थ ही है कि इक् के बाद यदि कोई अच् हो, तो उसके स्थान पर यण् हो जाता है।

जैसे–	अभि + उदयः = अभ्युदयः	=	इ + उ = य्
	यदि + अपि = यद्यपि	=	इ + अ = य्
	इति + आदि = इत्यादि	=	इ + आ = य्
	सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः	=	ई + उ = य्
	नदी + ऊर्मिः = नद्यूर्मिः	=	ई + ऊ = य्
	मधु + अरिः = मध्वरिः	=	उ + अ = व्
	सु + आगतम् = स्वागतम्	=	उ + आ = व्
	वधू + आदेशः = वध्वादेशः	=	ऊ + आ = व्
	पितृ + आदेशः = पित्रादेशः	=	ऋ + आ = र्
	धातृ + अंश = धात्रंशः	=	ऋ + अ = र्
	ऌ + आकृतिः = लाकृतिः	=	ऌ + आ = ल्
	प्रति + एकम् = प्रत्येकम्	=	इ + ए = ए
	पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा	=	ऋ + आ = र्

अभ्यास-प्रश्न-3

१. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

प्रति + एकम्, यदि + अपि, नदी + आवेगः, अति + उदारः, मधु + अरिः, अभि + उदयः, इति + एकम्, सुधी + आगमनम्, हरि + आज्ञा, पितृ + आज्ञा, यदि + एकम्, अति + आचारः।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

यद्यपि, प्रत्येकम्, इत्यादि, भ्वादिः, इत्याह, गुर्वाज्ञा, अभ्युदयः, सुध्युपास्यः, अध्यादेशः, अन्वयः, मात्रादेशः, वध्वादेशः, लाकृतिः।

३. निम्नलिखित में शुद्ध कथन पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

१. सुध्युपास्यः में यण सन्धि है।
२. स्वागतम् में दीर्घ सन्धि होती है।
३. नद्यावेगः, पित्रादेशः में एक ही सन्धि है।
४. तवल्कारः में यण सन्धि है।
५. इक् का अर्थ इ उ ऋ ऌ होता है।

4. वृद्धि सन्धि

सूत्र– ''वृद्धिरेचि''

यदि अ या आ के बाद ए या ऐ आता है तो दोनों मिलकर 'ऐ' और ओ या औ के आने पर 'औ' हो जाता है।

जैसे– मा + एवम् = मैवम् = आ + ए = ऐ।

पञ्च + एते = पञ्चैते = अ + ए = ऐ।
सदा + एव = सदैव = आ + ए = ऐ।
विद्या + ऐश्वर्यम् = विद्यैश्वर्यम् = आ + ऐ = ऐ
जल + ओघः = जलौघः = अ + ओ = औ
कन्या + ओदनम् = कन्यौदनम् = आ + ओ = औ
वन + औषधिः = वनौषधिः = अ + औ = औ
महा + औषधिः = महौषधिः = आ + औ = औ
वन + औकसः = वनौकसः = अ + औ = औ
गङ्गा + औधः = गङ्गौधः = आ + औ = औ

अभ्यास-प्रश्न-4

१. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

मम + औत्सुक्यम्, एक + एकम्, तस्य + ओषधिः, तव + औदार्यम्, अधुना + एव, अत्र + एव, कदा + एव, कन्या + ओदनम्, सुर + ऐश्वर्यम्, लता + एषा।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

जलौघः, सदैव, अधैव, अत्रैव, तथैव, विद्यैश्वर्यम्, कन्यौदनम्, ममैकः, उष्णौदकम्, महौषधिः, तस्यैव, वनौषधिः, पञ्चैते, मैवम्।

३. यण् और वृद्धि सन्धि में अन्तर बताइये।

४. निम्नलिखित में शुद्ध कथन पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

१. अत्रैव, तवैव में एक ही सन्धि है। ( )
२. वसुधैव में यण् सन्धि है। ( )
३. सीतौदार्यम् में वृद्धि सन्धि है। ( )
४. तवौषधालयः तथा उष्णौदनम् में वृद्धि सन्धि नहीं है। ( )

5. अयादि सन्धि

सूत्र– ''एचोऽयवायावः''

यदि ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई स्वर आता है, तब 'ए' के स्थान में 'अय्', 'ओ' के स्थान में 'अव्', 'ऐ' के स्थान में 'आय्', 'औ' के स्थान में 'आव्' आदेश हो जाता है।

जैसे– शे + अनम् = शयनम् = ए + अ = अय्
संचे + अनम् = संचयनम् = ए + अ = अय्
भो + अनम् = भवनम् = ओ + अ = अव्
पो + अनः = पवनः = ओ + अ = अव्
नै + अकः = नायकः = ऐ + अ = आय्

गै + अनम् = गायनम् = ऐ + अ = आय्
पौ + अक: = पावक: = औ + अ = आव
श्रौ + अक: = श्रावक: = औ + अ = आव्
पौ + अन: = पावन: = औ + अ = आव्
गै + अक: = गायक: = ऐ + अ = आय

अभ्यास-प्रश्न-5

१. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
चे + अनम्, लो + अण:, नौ + इक:, हरे + ए, गुरो + ए, भो + अति, मुने + ए, गो + एषणा।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
पवन:, नाविक:, भावुक:, शयनम्, नयनम्, पवित्रम्, चयनम्, नायक:, सायक:, श्रावक:, लवण:, पावक:।

३. अयादि और वृद्धि सन्धि में अन्तर बताइये।

४. निम्नलिखित में शुद्ध कथन पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–
१. भवनम्, गायनम् में अयादि सन्धि है। ( )
२. भो + अ + ति = भवति होता है। ( )
३. एकैकम् में अयादि सन्धि है। ( )
४. सुरेश:, रवीन्द्र, में अयादि सन्धि हैं। ( )

व्यञ्जन (हल्) सन्धि

व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन आने पर व्यञ्जन सन्धि होती है।

जैसे– सत् + चित = सच्चित्, जगत् + ईश्वर: = जगदीश्वर:। यहाँ पहले उदाहरण में 'त' के बाद व्यञ्जन और दूसरे उदाहरण में व्यञ्जन के बाद स्वर आया है।

व्यञ्जन सन्धि के भेद

१. श्चुत्व सन्धि, २. ष्टुत्व सन्धि,
३. जश्त्व सन्धि, ४. चर्त्व सन्धि,
५. अनुस्वार सन्धि, ६. परसवर्ण सन्धि।

1. श्चुत्व सन्धि

सूत्र– ''स्तोः श्चुना श्चुः''

सकार या त वर्ग (त, थ, द, ध, न) के साथ शकार या च वर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) का योग होने पर 'स' का 'श' तथा त वर्ग का च वर्ग हो जाता है। **स्तोः** का अर्थ है स् और त वर्ग का, **श्चुना** का अर्थ है श् और च वर्ग के साथ तथा **श्चुः** का अर्थ है श् और च वर्ग हो जाता है।

जैसे–
सत् + चित् = सच्चित्
रामस् + शेते = रामश्शेते
कस् + चित् = कश्चित्

सद् + जनः	=	सज्जनः
शार्ङ्गिन + जयः	=	शार्ङ्गिञ्जयः
बृहद् + झरः	=	बृहज्झरः
उत् + चारणम्	=	उच्चारणम्।

अभ्यास-प्रश्न-6

१. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

सत् + मार्ग, जगत् + जननी, कस् + चित्, सत् + चित्, कवेस् + चमत्कारः, महत् + जालम्, उत् + ज्वलम्, विपद् + जालम्, तपस् + चरणम्, तत् + चलति, मत् + चित्तम्, कत् + चित्, नस् + छलः, हरिस् + चन्द्रः, भगवत्+ चरितम्।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

उच्चारणम्, सच्चरित्रम्, उज्ज्वलम्, सज्जनः, विद्युज्ज्वाला, मज्जयः, निश्चितम्, मनश्शीतलम्, इतश्चर्चा, अनुचरश्चिनोति, जगज्जननी, शरच्चन्द्रः निश्छलम्, तच्छविः, महच्छत्रुः एतज्जलम्, उच्छेदः।

३. 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र की व्याख्या करिये।

४. निम्नलिखित में शुद्ध कथन पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

१. सत् + जनः मिलकर सज्जनः बनता है।
२. मध्वरिः में मधु + अरिः होता है।
३. उच्चारणम् में स्वर सन्धि है।
४. 'रामश्शेते' का सन्धि विच्छेद 'रामस् +शेते' होता है।
५. सच्चित्, सच्चरित्रम् दोनों में एक ही सन्धि है।

2. ष्टुत्व सन्धि

सूत्र– ''ष्टुनाष्टुः''

स् अथवा त वर्ग (त थ द ध न) के योग में ष् अथवा ट वर्ग (ट ठ ड ढ ण) के आने पर स् का ष् तथा त वर्ग के स्थान पर ट वर्ग हो जाता है।

जैसे–	रामस् + टीकते	=	रामष्टीकते (स् के स्थान पर ष्)।
	मत् + टीका	=	मट्टीका (त् के स्थान पर ट्)।
	रामस् + षष्ठः	=	रामष्षष्ठः (स् के स्थान पर ष्)।
	उद् + डयनम्	=	उड्डयनम् (द् के स्थान पर ड्)।
	तत् + टीका	=	तट्टीका (त् के स्थान पर ट्)।
	कृष् + नः	=	कृष्णः (न् के स्थान पर ण)।

अभ्यास-प्रश्न-7

१. उदाहरण सहित सूत्र की व्याख्या करिये।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

दृष्टः, तट्टीका, भवट्टीका, एतट्टंकितम्, हरिष्टीकते, उड्डयनम्।

३. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

शिवस् + टीकते, मुनिस् + षष्ठः, रामस् + षष्ठः, इष् + तम, उत् + डीयते।

४. निम्न में शुद्ध वाक्य पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

(१) ड् ट वर्ग का तीसरा वर्ण है। (२) मत् + टीका = मद् टीका होता है।

(३) सत् + जन: = सज्जन: नहीं होता। (४) धनुष् + टंकार: = धनुषटंकार: होता है।

(५) रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति होता है।

3. जश्त्व सन्धि

(अ) सूत्र– ''झलां जशोऽन्ते''

झल् प्रत्याहार (वर्गों के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे वर्ण तथा श, ष, स, ह) के बाद स्वर या व्यञ्जन के आने पर जश् प्रत्याहार (वर्गों का तीसरा वर्ण) हो जाता है।

जैसे– जगत् + ईश: = जगद् +ईश: = जगदीश: (क वर्ग का तृतीय वर्ण)

सत् + गति = सद् +गति = सद्गति (त वर्ग का तृतीय वर्ण)

अच् + अन्त: = अज् +अन्त: = अजन्त: (च वर्ग का तृतीय वर्ण)

सुप् + अन्त: = सुब् + अन्त: = सुबन्त: (प वर्ग का तीसरा वर्ण)

वाक् + ईश: = वाग् + ईश: = वागीश: (क वर्ग का तृतीय वर्ण)

मधुलिट् + गुंजति = मधुलिड् + गुंजति = मधुलिड्गुंजति (ट वर्ग का तीसरा वर्ण)।

(ब) सूत्र– ''झलां जश् झशि''

झल् प्रत्याहार (वर्गों के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे वर्ण तथा श, ष, स, ह) के बाद झश् (किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण) आये, तो पहले वाले व्यञ्जन जश् प्रत्याहार (अपने वर्ग के ज्, ब्, ग्, ड्, द्) में बदल जाते हैं।

जैसे– दोघ् + धा = दोग्धा (घ् के स्थान पर ग्)

लभ् + ध: = लब्ध: (भ् के स्थान पर ब्)

योध् + धा = योद्धा (ध् के स्थान पर द्)

आरभ् + ध: = आरब्ध: (भ् के स्थान पर ब्)

वृध् + ध: = वृद्ध: (ध् के स्थान पर द्)

4. चर्त्व सन्धि

सूत्र– खरि च

यदि झल् (वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण) के बाद वर्ग का प्रथम व द्वितीय वर्ण या श, ष, स आता है तो उनके स्थान पर चर् (अपने वर्ग का प्रथम वर्ण) हो जाता है।

जैसे– सद् + कार: = सत्कार: एतद् + करोति = एतत् करोति

सद् + पात्रम् = सत्पात्रम् दिग् + पाल: = दिक्पाल:

तज् + छिव: = तच्छिव:

5. अनुस्वार सन्धि

सूत्र– मोऽनुस्वार:

पदान्त में 'म्' के बाद कोई भी व्यञ्जन आता है, तो 'म्' के स्थान में अनुस्वार (ं) हो जाता है, किन्तु जब 'म्' के बाद कोई स्वर आता है तो म् स्वर वर्ण में मिलकर पूर्ण रूप ले लेता है।

जैसे– हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे नगरम् + आयाति = नगरमायाति

त्वम् + करोषि = त्वं करोषि माम् + एवम् = मामेवम्

रामम् + भजामि = रामं भजामि अहम् + इति = अहमिति

6. परसवर्ण सन्धि

सूत्र– अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः

अनुस्वार से परे यदि यय् प्रत्याहार (श्, ष्, स्, ह् के अतिरिक्त सभी व्यञ्जन यय् प्रत्याहार में आते हैं) का कोई भी व्यञ्जन आये तो अनुस्वार का परसवर्ण हो जाता है। अर्थात् पद के मध्य में अनुस्वार के आगे श्, ष्, स्, ह् को छोड़कर किसी भी वर्ग का कोई भी व्यञ्जन आने पर अनुस्वार के स्थान पर उस वर्ग का पञ्चम् वर्ण हो जाता है; यथा–गम् + गा = गंगा या गङ्गा।

विशेष–यह नियम प्रायः अनुस्वार सन्धि के पश्चात् लगता है। पदान्त में यह नियम विकल्प से होता है; यथा—कार्यम् + करोति = कार्यं करोति या कार्यङ्करोति।

जैसे– शाम् + तः = शान्तः
कुन् + ठितः = कुण्ठितः
अन् + चितः = अञ्चितः

अन् + कितः = अङ्कितः
गुम् + फितः = गुम्फितः

पदान्त में होने पर–

अलम् + चकार = अलं चकार या अलञ्चकार
रामम् + नमामि = रामं नमामि या रामन्नमामि
त्वम् + करोषि = त्वं करोषि या त्वङ्करोषि

अभ्यास-प्रश्न-8

१. **निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–**
वाग्दानम्, दिगन्तः, जगदीशः, सद्बन्धुः, उद्गमिष्यति, जगदाधारः, दिगीशः, चिद्रूपम्, चिदानन्दः, बुद्धिः, सिद्धः, शुद्धि, षड्दर्शनम्, दिगम्बरः, अजन्तः, भवद्ज्ञानम्।

२. **निम्नलिखित में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–**
तत् + एव, तत् + धनम्, सत् + गतिः, जगत् + ईशः, दिक् + अम्बरः, षट् + दर्शनम्, दिक् + गजः, अच् + अन्तः, सत् + धर्मः, अस्मत् + भारतम्, महत् + अन्तरम्, कृत + अन्तः, चित् + आनन्दः, दघ् + धः, बुध् + धम्, एतत् + धनम्।

३. **''झलां जशोऽन्ते'' सूत्र की व्याख्या करिये।**

अभ्यास-प्रश्न

(क)१. सन्धि किसे कहते हैं?

२. निम्नलिखित में से किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–
सदैव, गङ्गोदकम्, हरिश्शेते।

३. किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–
वागीशः, अत्यल्पः, पशुश्चलति।

४. निम्न शब्दों में दीर्घ एवं गुण सन्धि के शब्दों को अलग कीजिए तथा उनका सन्धि-विच्छेद कीजिए–
सुरेशः, राजेन्द्रः, रामावतार, महोत्सवः, विद्याभ्यास, नदीशः, पितृणम्, वधूत्सवः, विद्यार्थी।

५. निम्नांकित में से किसी एक शब्द का सन्धि-विच्छेद करके सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
लघूर्मिः, इत्यादि, सच्चरित्रम्।

६. निम्नांकित में से किसी एक शब्द का सन्धि-विच्छेद करके सन्धि का नाम लिखिए–
साधूक्तम्, राजोवाच, बालकोऽयम्।

७. निम्नलिखित में से किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
लाकृति, ब्रह्मर्षि, सच्चित्।

८. किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–
चमूर्जितम्, शयनम्, तपश्चर्या।

९. निम्नलिखित में से किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–
(अ) यद्यपि, नयनम्, तच्चितम्।
(ब) नदीशः, मुनिनोक्तम्, सदानन्दः।
(स) सुरेशः, सदैव, सच्चित्।
(द) देवैश्यर्म, जगदीश्वरः, रामश्चिनोति।
(य) वृकोदरः, नायकः, अन्यच्च।
(र) इतीव, इत्येव, इहैव।
(ल) गुर्वादेशः, वनौषधिः, गिरीशः।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के चार विकल्प दिये गये हैं। सही विकल्प चुनकर लिखिए–

१. 'दिगम्बरः' का सन्धि-विच्छेद है–
(अ) दिक् + अम्बरः (ब) दिग + अम्बरः (स) दिक + अम्बरः (द) दिग् + अम्बरः,

२. 'चयनम्' शब्द का सन्धि-विच्छेद क्या होगा?
(अ) च + अनम् (ब) चय + नम् (स) चे + अनम् (द) चे + एनम्

३. 'गङ्गा + उदकम्' की सन्धि होती है–
(अ) गङ्गुदकम् (ब) गङ्गूदकम् (स) गङ्गोदकम् (द) गङ्गौदकम्

४. 'ओ' के बाद कोई स्वर आने पर 'ओ' का होगा–
(अ) अय् (ब) अव् (स) आव् (द) आय्

५. सकार का शकार से योग होने पर क्या बनेगा?
(अ) सकार का रकार हो जाता है।
(ब) सकार का शकार हो जाता है।
(स) सकार का सकार हो जाता है।
(द) सकार का विसर्ग हो जाता है।

६. अकार और आकार का योग होने पर होता है–
अ, आ, औ।

७. ऋ के बाद ऋ होने पर हो जाता है–
ऋ, ॠ, रा, रा।

८. 'स्वागतम्' में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) यण (स) गुण (द) वृद्धि

९. लो + अणः में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) अयादि (स) यण (द) दीर्घ

१०. 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र है–
(अ) गुण सन्धि का (ब) दीर्घ सन्धि का (स) यण् सन्धि का (द) वृद्धि सन्धि का

११. 'गवेषणा' में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) यण (स) अयादि (द) पररूप

१२. अच् + अन्तः होने पर क्या बनेगा?
(अ) अझन्तः (ब) अजःअन्तः (स) अगन्तः (द) अजन्तः

१३. महेशः में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) गुण (स) अयादि (द) पूर्वरूप

१४. 'इकोयणचि' सूत्र है–
(अ) गुण सन्धि का (ब) यण् सन्धि का (स) वृद्धि सन्धि का (द) दीर्घ सन्धि का

१५. उ के बाद आ आने पर हो जाता है–
(अ) वा (ब) व (स) वु (द) वे

१६. जलौधः में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) गुण (स) वृद्धि (द) यण्

१७. गुरु + उपदेशः की सन्धि होगी–
(अ) गुरोपदेशः (ब) गुरु उपदेशः (स) गुरुपदेशः (द) गुरेपदेशः

१८. 'सुध्युपास्यः' में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) यण् (स) वृद्धि (द) पूर्वरूप

१९. काव्योत्कर्ष में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) गुण (स) यण् (द) अयादि

२०. अ के बाद ए आने पर होता है–
(अ) ओ (ब) ऐ (स) औ (द) ए

२१. 'एचोऽयवायावः' सूत्र है–
(अ) यण् सन्धि का (ब) गुण सन्धि का (स) अयादि सन्धि का (द) जश्त्व सन्धि का

२२. परमौषधि में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) वृद्धि (स) यण् (द) दीर्घ

२३. मतैक्यम् में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) वृद्धि (स) यण् (द) अयादि

२४. जल + उपरि की सन्धि होगी–
(अ) जलोपरि (ब) जलूपरि (स) जलुपरि (द) जल्वूपरि

२५. मध्वरिः में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) वृद्धि (स) यण् (द) अयादि

●●●

3 समास
(तत्पुरुष, कर्मधारय, द्वन्द्व)

दो या अधिक पदों को इस प्रकार मिलाना कि उनके आकार में कमी आ जाये और अर्थ भी पूरा-पूरा निकल जाय, इसी संक्षेप की क्रिया को समास कहते हैं;

जैसे– नराणां पतिः = नरपतिः, गङ्गः पुरुषः = गङ्गपुरुषः।

यहाँ पर 'नराणां पतिः' का वही अर्थ है, जो 'नरपतिः' का है, किन्तु 'नरपतिः' आकार में छोटा हो गया है।

समास के भेद

समास के छह भेद होते हैं–

१. अव्ययीभाव समास– पूर्व पद की प्रधानता अर्थात् पहला पद प्रधान होता है।
२. तत्पुरुष समास– उत्तर पद की प्रधानता होती है।
३. कर्मधारय समास– विशेषण और विशेष्य का समास।
४. द्विगु समास– संख्यावाचक शब्द के साथ समास।
५. बहुब्रीहि समास– अन्य पद की प्रधानता।
६. द्वन्द्व समास– दोनों पदों की प्रधानता।

1. तत्पुरुष समास

सूत्र–''उत्तरपद प्रधानः तत्पुरुषः।''

जिस समास में उत्तर पद के अर्थ की प्रधानता हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। वाक्य-प्रयोग में लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन का प्रयोग भी उत्तर पद के अनुसार ही होता है। यथा– 'देवमन्दिरम्' का विग्रह है देवानां मन्दिरम्। यहाँ पर देव और मन्दिर दो पद हैं, परन्तु इनमें मन्दिर ही प्रधान है।

अलग-अलग विभक्तियों के अनुसार तत्पुरुष समास के छह भेद होते हैं–

१. द्वितीया तत्पुरुष– इसमें पूर्व पद द्वितीया विभक्ति का होता है और समास करने पर द्वितीया विभक्ति का लोप हो जाता है।

जैसे–
कृष्णं श्रितः = कृष्णाश्रितः
दुःखम् अतीतः = दुःखातीतः
गजम् आरूढः = गजारूढः
शरणम् आगतः = शरणागतः
सुखं प्राप्तः = सुखप्राप्तः
भयम् आपन्नः = भयापन्नः।

२. तृतीया तत्पुरुष– जब तत्पुरुष समास का पूर्व पद तृतीया विभक्ति का हो और समास करने पर तृतीया विभक्ति का लोप हुआ हो।

जैसे– वाणेन आहत: = वाणाहत:
नखै: भिन्न: = नखभिन्न:
नेत्राभ्यां हीन: = नेत्रहीन:
मासेन पूर्व: = मासपूर्व:
पादेन खञ्ज: = पादखञ्ज:
गुड़ेन मिश्रम् = गुड़मिश्रम्
हरिणा त्रात: = हरित्रात:।

३. चतुर्थी तत्पुरुष–जहाँ पूर्व पद चतुर्थी विभक्ति का होता है और समास करने पर चतुर्थी विभक्ति का लोप हो जाता है।

जैसे– रक्षाय इदम् = रक्षार्थम्
भूताय बलि: = भूतबलि:
धनाय कामना = धनकामना
कुम्भाय मृत्तिका = कुम्भमृत्तिका
ब्राह्मणाय हितम् = ब्राह्मणहितम्
धनाय अर्थम् = धनार्थम्।

४. पञ्चमी तत्पुरुष–इसमें पहला पद पंचमी विभक्ति का होता है और समास करने पर पंचमी विभक्ति का लोप हो जाता है।

जैसे– अश्वात् पतित: = अश्वपतित:
चौराद् भीत: = चौरभीत:
बन्धनाद् मुक्त: = बन्धनमुक्त:
सिंहाद् भीत: = सिंहभीत:
हरे: त्रात: = हरित्रात:
मार्गात् भ्रष्ट: = मार्गभ्रष्ट:।

५. षष्ठी तत्पुरुष–इसमें पूर्व पद षष्ठी विभक्ति का होता है और समास करने पर षष्ठी विभक्ति का लोप हो जाता है।

जैसे– राज्ञ: पुरुष: = राजपुरुष:
गङ्गाया: जलम् = गङ्गाजलम्
प्रजाया: पति: = प्रजापति:
देवस्य मन्दिरम् = देवमन्दिरम्
मूर्त्या: पूजा = मूर्तिपूजा
विद्याया: आलय: = विद्यालय:।
हिमस्य आलय: = हिमालय:

विशेष– जब समस्त-पद 'अव्ययी' होता है तो विग्रह करते समय षष्ठी विभक्ति से युक्त शब्दों से पूर्व अव्ययवाचक शब्द–पूर्व, अधर, अर्ध इत्यादि शब्द आते हैं।

जैसे– पूर्वम् रागस्य = पूर्वराग:
अपरं रागस्य = अपरराग:

अधरं रागस्य = अधरराग:
अर्द्धम् फलस्य = अर्द्धफलम्।

६. सप्तमी तत्पुरुष–इसमें पूर्व पद सप्तमी विभक्ति का होता है और समास करने पर सप्तमी विभक्ति का लोप हो जाता है।

जैसे– युद्धे निपुण: = युद्धनिपुण:
कूपे पतित: = कूपपतित:
गुरौ भक्ति = गुरुभक्ति
नरेषु उत्तम: = नरोत्तम:
कलासु निपुण: = कलानिपुण:
कार्ये कुशल: = कार्यकुशल:।

अभ्यास-प्रश्न-1

१. निम्नलिखित पदों में विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए–

शरणागत:, कूपपतित:, बन्धनमुक्त:, सुखप्राप्त:, देवपुरुष:, अश्वपतित:, वाक्कलह:, मासपूर्व:, दानपात्रम्, धनार्थ:, विद्याप्रवीण:, रणकुशल:।

२. निम्नलिखित शब्दों में समास कीजिए तथा समास का नाम लिखिए–

मासेन पूर्व:, कूपे पतित:, पुत्राय हितम्, भ्रात्रे सुखम्, बाणेन विद्ध:, सुखम् आपन्न:, देवानां पति:, नराणां पति:।

३. तत्पुरुष समास किसे कहते हैं? तत्पुरुष समास के भेद लिखिए।

तत्पुरुष के अन्य भेद

उक्त भेदों के अतिरिक्त तत्पुरुष समास के तीन भेद और होते हैं–

(१) उपपद तत्पुरुष–इसके उत्तरपद में कोई क्रियावाचक शब्द होता है, इसीलिए इस समास को उपपद कहते हैं; यथा–

विग्रह	**समस्त-पद**	**अर्थ**
मर्म जानाति	मर्मज्ञ:	मर्म को जानने वाला
चर्म करोति	चर्मकार:	चमार
कम्बलं ददाति	कम्बलद:	कम्बल देने वाला
प्रभां करोति	प्रभाकर:	सूर्य

(२) नञ् तत्पुरुष–इसके पूर्वपद में निषेधार्थक 'अ' या 'अन्' शब्द का प्रयोग होता है–

न ब्राह्मण:	अब्राह्मण:	जो ब्राह्मण न हो।
न अश्व:	अनश्व:	जो घोड़ा न हो।
न उचित:	अनुचित:	जो उचित न हो।

विशेष नियम–जिस पद के साथ नञ् समास किया जाए यदि उस पद का आदि अक्षर 'अ' हो तो नञ् समास में 'अ' के आगे 'अन्' जोड़ दिया जाता है। यथा–अनश्व:।

(३) अलुक् तत्पुरुष–इस समास में पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता। विभक्ति का लोप न होने के कारण इसका नाम अलुक् समास होता है। यथा–

विग्रह	समस्त-पद	अर्थ
परस्मै पदम्	परस्मैपदम्	दूसरे के लिए पद
आत्मने पदम्	आत्मनेपदम्	अपने लिए पद
वाच: पति:	वाचस्पति:	बृहस्पति
युधि स्थिर:	युधिष्ठिर:	युद्ध में स्थिर

अभ्यास-प्रश्न-2

१. **निम्नलिखित समस्त-पदों में विग्रह करके समास का नाम लिखिए–**
अनुक्त:, अनर्थम्, अनुपस्थित:, अनागत:।

२. **अलुक् तत्पुरुष किसे कहते हैं?**

2. कर्मधारय समास

सूत्र– ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्।''

यह तत्पुरुष समास का उपभेद है। इसका पूर्व पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य होता है। विग्रह करते समय विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति और वचन के अनुसार विशेषण में लिङ्ग, वचन और विभक्ति का प्रयोग होता है।

कर्मधारय समास के ५ भेद होते हैं–

१. विशेषण पूर्वपद-कर्मधारय– इस समास में पूर्वपद विशेषण तथा उत्तर पद विशेष्य होता है।

जैसे– कृष्ण: सर्प: = कृष्णसर्प:
नीलं उत्पलम् = नीलोत्पलम्
मधुरं फलम् = मधुरफलम्
श्रेष्ठ: पुरुष: = श्रेष्ठपुरुष:
महान् देव: = महादेव:
महती नदी = महानदी
महान पुरुष: = महापुरुष:

विशेष– बुरे के अर्थ में कुत्सित शब्द के स्थान पर 'कु' हो जाता है तथा अच्छे के अर्थ में सुन्दर के स्थान पर 'सु' हो जाता है।

जैसे– सुन्दर: देश: = सुदेश:
सुन्दर: पुरुष: = सुपुरुष:
कुत्सित: पुत्र: = कुपुत्र:
कुत्सित: राजा = कुराजा।

२. उपमान-पूर्वपद कर्मधारय– जिस कर्मधारय समास में उपमान का पहले प्रयोग हो उसे उपमान पूर्वपद कर्मधारय समास कहते हैं। इसका इव के साथ प्रयोग करते हैं।

जैसे– घन इव श्याम: = घनश्याम:
दुग्धम् इव धवलं = दुग्धधवलम्
चन्द्र इव मुखम् = चन्द्रमुखम्
कमलम् इव कोमलम् = कमलकोमलम्
नीरद: इव श्याम: = नीरदश्याम:

३. उपमानोत्तरपद कर्मधारय– जिस समास में पहले उपमेय और बाद में उपमान हो, उसे उपमानोत्तरपद कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे– मुखं चन्द्रः इव = मुखचन्द्रः
नरः सिंहः इव = नरसिंहः।

४. विशेष्य-उभयपद कर्मधारय– जिस समास में दो विशेष्यों में से एक का विशेषण के समान प्रयोग होता है, वह विशेष्य-उभयपद कर्मधारय समास होता है।

जैसे– वायसौ च तौ दम्पती = वायसदम्पती।
आम्रश्चासौ वृक्षः = आम्रवृक्षः।

५. विशेषण-उभयपद कर्मधारय– जिस समास में दोनों पद विशेषण होते हैं, उसे विशेषण उभयपद कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे– रक्तश्च पीतः = रक्तपीतः
कृतं च अकृतं च = कृताकृतम्
शीतं च उष्णम् = शीतोष्णम्

अभ्यास-प्रश्न-3

१. निम्नलिखित पदों में समास कीजिए तथा समास का नाम लिखिए–

अधरः पल्लवः इव, नरः सिंह इव, महान् चासौ देवः, महांश्चासौ ऋषिः, महान् चासौ आत्मा, मुखं चन्द्र इव।

२. निम्नलिखित पदों में विग्रह करते हुए समास का नामोल्लेख कीजिए–

देवपुरुषः, महापुरुषः, घनश्यामः, शीतोष्णम्, सुपुरुषः, मधुरफलम्, नीलोत्पलम्, नीललोहितः।

3. द्वन्द्व समास

सूत्र– ''उभयपद प्रधानो द्वन्द्वः।''

जिस समास में दो या अधिक पद जुड़े हुए हों और सभी पद प्रधान हों, वह द्वन्द्व समास कहलाता है। इसमें 'च' का अर्थ छिपा रहता है।

जैसे– हरिश्च हरश्च = हरिहरौ
रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ

द्वन्द समास तीन प्रकार का होता है–

१. इतरेतर द्वन्द्व– इस समास में दो या अधिक पदों का योग होता है। दो पदों के लिए द्विवचन और अधिक पदों के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। लिङ्ग अन्तिम पद के समान प्रयोग किया जाता है।

जैसे– भीमश्च अर्जुनश्च = भीमार्जुनौ
पिता च पुत्रश्च = पितापुत्रौ
नरश्च नारी च = नरनार्यौ
रामश्च कृष्णश्च = रामकृष्णौ
बालश्च वृद्धश्च = बालवृद्धौ

२. समाहार द्वन्द्व– जिस समास में अनेक पदों के समूह का बोध होता है, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। इसमें समास करते समय नपुंसकलिङ्ग एकवचन का प्रयोग होता है।

जैसे– पाणी च पादौ च = पाणिपादम्
रथाश्च अश्वाश्च = रथाश्वम्
अहिश्च नकुलश्च = अहिनकुलम्
मथुरा च पाटलिपुत्र च = मथुरा-पाटलिपुत्रम्
अहः च रात्रि च = अहोरात्रम्

३. एकशेष द्वन्द्व– जिस सामासिक पद में समान रूप में प्रयुक्त होने वाले शब्दों में से केवल एक पद शेष रह जाता है और अपने भाव को विभक्ति व वचन के अनुसार प्रकट करता है, वहाँ एकशेष द्वन्द्व समास होता है।

जैसे– माता च पिता च = पितरौ
पुत्रश्च पुत्री च = पुत्रौ
रामश्च रामश्च = रामौ
हंसश्च हंसी च = हंसौ
युवा च युवती च = युवानौ

अभ्यास-प्रश्न-4

१. निम्नलिखित पदों में समास कीजिए तथा समास का नाम लिखिए–
पत्रम च पुष्पं च तोयम् च, वृक्षश्च वृक्षश्च, रथश्च अश्वश्च, माता च पिता च, दधि च घृतं च, पुत्रश्च पुत्री च, पाणी च पादौ च।

२. निम्नलिखित पदों में समास-विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए–
अहोरात्रः, पितरौ, गंगायमुने, हरिहरौ, सूर्यचन्द्रौ, अहर्निशम्, राधाकृष्णौ, ब्राह्मणौ।

●●●

4 कारक एवं विभक्ति

संस्कृत में **'साक्षात् क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्'** के अनुसार क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध रखने वाले शब्दों को ही कारक कहते हैं।

जैसे– 'प्रयागे राजा स्वहस्तेन कोषात् निर्धनेभ्य: वस्त्राणि ददाति।' इस वाक्य में कारकों को निम्नांकित रूप में ज्ञात कर सकते हैं–

क: ददाति?	राजा	प्रथमा विभक्ति (कर्त्ता कारक)
किं ददाति?	वस्त्राणि	द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)
केन ददाति?	हस्तेन	तृतीया विभक्ति (करण कारक)
केभ्य: ददाति?	निर्धनेभ्य:	चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)
कस्मात् ददाति?	कोषात्	पञ्चमी विभक्ति (अपादान कारक)
कुत्र ददाति?	प्रयागे	सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

उक्त वाक्य में 'राजा' आदि पदों का क्रिया के साथ सम्बन्ध है, अत: ये कारक हैं। संस्कृत में सम्बन्ध पद तथा सम्बोधन पद कारक नहीं माने जाते हैं।

जैसे– ''दशरथस्य पुत्र: वनम् अगच्छत्।''

यहाँ 'दशरथस्य' का सम्बन्ध 'पुत्र' (कर्त्ता) से तो है, किन्तु क्रिया 'अगच्छत्' से नहीं है। इसी प्रकार 'प्रभो! रक्ष' यहाँ 'रक्ष' क्रिया पद का 'प्रभो' से कोई सम्बन्ध नहीं है।

अत: संस्कृत में कारक छह प्रकार के होते हैं–

कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण।

1. कर्त्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

सूत्र–स्वतन्त्रः कर्त्ता।

किसी भी क्रिया को स्वतन्त्रतापूर्वक करने वाले को कर्त्ता कहते हैं। कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे–'राम: गृहं गच्छति।' इस वाक्य में गच्छति क्रिया को मोहन स्वतंत्र रूप से सम्पन्न कर रहा है, अत: वह कर्त्ता है।

2. कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

१. सूत्र–कर्तुरीप्सिततमं कर्म। कर्मणि द्वितीया।

नियम– जिस शब्द पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। जैसे–अहं **रामम्** पश्यामि (मैं राम को देखता हूँ)। इस वाक्य में देखने के व्यापार का फल 'राम' पर पड़ रहा है, अत: **'रामम्'** में कर्म कारक है। कर्म कारक का चिह्न 'को' है, किन्तु यह कभी-कभी अनुक्त (छिपा) भी रहता है; **जैसे–** 'राम पुस्तक पढ़ता है।' कर्तृवाच्य के कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है; **जैसे–** 'राम: **ग्रन्थं** पठति।' किन्तु कर्मवाच्य के कर्म कारक में प्रथमा विभक्ति होती है; **जैसे–** रामेण **ग्रन्थ:** पठ्यते। (राम के द्वारा ग्रन्थ पढ़ा जाता है)।

२. सूत्र– अकथितं च

नियम– दुह् (दुहना), याच् (माँगना), पच् (पकाना), दण्ड (दण्ड देना), रुध् (रोकना), प्रच्छ् (पूछना), चि (चुनना), ब्रू (बोलना), शास् (शासन करना), जि (जीतना), मथ् (मथना), मुष् (ठगना), नी (ले जाना), हृ (हरण करना), कृष् (जोतना), बह् (ढोना)। संस्कृत में ये सोलह धातुएँ हैं तथा इनके अर्थ वाली दूसरी धातुएँ 'द्विकर्मक' हैं। इनके योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

इन धातुओं से सम्बद्ध हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करते समय विशेष सावधान रहना चाहिए **जैसे–** कृष्ण गाय से दूध 'दुहता है' में 'दुहता है' (दुह्) क्रिया का 'दूध' प्रधान कर्म में और 'गाय से' में 'से' सामान्य रूप से चिह्न होने के कारण अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति) ज्ञात होती है, किन्तु 'दुह्' धातु के द्विकर्मक होने के कारण 'गाय से' की संस्कृत **'धेनोः'** (पञ्चमी) न होकर **-धेनुम्'** (द्वितीया) ही होगी और सम्पूर्ण वाक्य की संस्कृत **'कृष्णः धेनुम् दुग्धं दोग्धि'** होगी। यह दूसरा कर्म गौण (अप्रधान) कर्म कहा जाता है।

३. सूत्र–कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे।

नियम– समय तथा दूरी को बताने वाले शब्दों में निरन्तरता बतलाने के लिए द्वितीया विभक्ति होती है अर्थात् जितने समय अथवा जितनी दूरी तक कोई काम लगातार होता रहे या कोई वस्तु लगातार हो तो समय तथा दूरी वाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। **जैसे–**

समय– 'रामः **चतुर्दशवर्षाणि** वने न्यवसत्।' (राम चौदह वर्ष तक वन में रहे)। यहाँ वन में रहने का काम लगातार चौदह वर्षों तक हुआ है और 'चतुर्दश वर्ष' समयवाचक शब्द है, अतः **चतुर्दशवर्षाणि** में द्वितीया है।

दूरी– 'क्रोशम् कुटिलता नदी' (नदी एक कोस तक टेढ़ी है)। नदी एक कोस तक लगातार टेढ़ी बही है और **क्रोश** दूरीवाचक शब्द है, अतः 'क्रोशम्' में द्वितीया विभक्ति है।

४. सूत्र–अधिशीङ्स्थासां कर्म।

नियम– यदि शीङ् (सोना), स्था (ठहरना) तथा आस् (बैठना) धातुओं से पहले 'अधि' उपसर्ग आये तो इनके आधार में द्वितीया होती है; **जैसे–**

बालः **शय्यां** अधिशेते। (बालक खाट पर सोता है।)

रामः **गृहं** अधितिष्ठति। (राम घर में स्थित है।)

राजा **सिंहासनं** अध्यास्ते। (राजा सिंहासन पर बैठता है।)

विशेष– यदि शीङ्, स्था और आस् धातुओं से पहले 'अधि' उपसर्ग नहीं होगा, तो उनके आधार में सप्तमी ही होगी, द्वितीया नहीं। **जैसे–** बालः शय्याम् शेते।

५. सूत्र– अभितः परितः समया निकषा हाप्रतियोगेऽपि।

नियम– अभितः (सब ओर), परितः (चारों ओर), समया (पास), निकषा (निकट), हा (हाय) और प्रति (की ओर, को, के, लिए) के योग में द्वितीया होती है; **जैसे–**

ग्रामम् **अभितः** आम्रवृक्षाः सन्ति। (गाँव के सब तरफ (चारों ओर) आम के पेड़ हैं।)

दुर्गम् **परितः** परिखा अस्ति। (दुर्ग के चारों ओर खाई है।)

विद्यालयम् अमितः पादपः सन्ति। (विद्यालय के सब ओर पेड़ हैं।)

3. करण कारक (तृतीया विभक्ति)

१. सूत्र–साधकतमं करणम्। कर्तृकरणयोस्तृतीया।

नियम– जिसकी सहायता से कर्त्ता अपना कार्य पूरा करता है, उसमें करण कारक होता है और करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'से' तथा 'के द्वारा' होता है, **जैसे–**सः **नेत्राभ्यां** पश्यति। (वह नेत्रों से देखता है।) इसमें देखने का कार्य नेत्रों से होता है, अतः **नेत्राभ्याम्** में तृतीया है।

२. सूत्र–येनांगविकारः।

नियम– जिस अंग के द्वारा शरीरधारी में कोई विकार उत्पन्न हो जाता है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है; **जैसे–** सः

नेत्रेण काण: अस्ति। (वह आँख से काना है।) इस वाक्य में आँख के द्वारा शरीरधारी में कानेपन का विकार उत्पन्न हो गया है, अत: **'नेत्रेण'** में तृतीया है। स: पादेन खञ्ज: अस्ति। पादेन में तृतीया विभक्ति है।

३. सूत्र– सहयुक्तेऽप्रधाने।

नियम– 'साथ' में अर्थ रखने वाले 'सह', 'साकम्', 'समम्', 'सार्धम्' शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है; **जैसे–** राम: **कृष्णेन** सह गच्छति। (राम कृष्ण के साथ जाता है।) इस वाक्य में 'कृष्ण तथा सह' का योग है, क्योंकि कृष्ण के साथ जाया जाता है, अत: **कृष्णेन** में तृतीया विभक्ति है।

4. सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

१.सूत्र– कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्। चतुर्थी सम्प्रदाने।

नियम– जिसको कोई वस्तु दी जाती है, वह सम्प्रदान कारक होता है और सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'के लिए' अथवा 'को' है। **जैसे–** राजा विप्राय **धेनुं** ददाति। (राजा ब्राह्मण को गाय देता है।) इस वाक्य में विप्र को धेनु दिये जाने का वर्णन है, अत: **'विप्र'** में चतुर्थी विभक्ति हुई।

२. सूत्र– रुच्यर्थानां प्रीयमाण:।

नियम– 'रुचि' का अर्थ रखने वाली धातुओं के योग से जिसे कोई वस्तु अच्छी लगती है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है; **जैसे–रामाय पठनं** रोचते। (राम को पढ़ना अच्छा लगता है।) इस वाक्य में राम को पढ़ना अच्छा लगता है तथा रुचि अर्थ वाली धातु **'रुच्'** का योग भी है। अत: **'रामाय'** में चतुर्थी हुई।

३. सूत्र–क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोप:।

नियम– क्रुध् (गुस्सा होना), द्रुह् (द्रोह करना, शत्रुता करना), ईर्ष्या (ईर्ष्या करना), असूय् (गुणों में दोष निकालना या जलन करना) धातुओं तथा इनकी समानार्थक धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाता है, द्रोह किया जाता है, ईर्ष्या की जाती है या असूया की जाती है; उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। **जैसे–** स: **हरये** क्रुध्यति, दुह्यति, ईर्ष्यति असूयति वा। (वह हरि से क्रुद्ध होता है, द्रोह करता है, ईर्ष्या करता है अथवा असूया करता है।)

४. सूत्र– नम: स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलं वषट् योगाच्च।

नियम–नम: (नमस्कार), स्वस्ति (कल्याण), स्वाहा, स्वधा, अलम् (समर्थ, पर्याप्त, बराबर के जोड़ का) तथा वषट् (आहुति) के योग में चतुर्थी होती है; **जैसे–श्री गणेशाय नम:।** (श्री गणेश जी को नमस्कार है।) **प्रजाभ्य:** स्वस्ति। (प्रजा का कल्याण हो।) **अग्नये स्वधा।** (अग्नि के लिए बलि हैं।) गुरुवे नम:। (गुरु को नमस्कार)।

5. अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति)

१. सूत्र–ध्रुवमपायेऽपादानम्। अपादाने पञ्चमी।

नियम–जिससे प्रत्यक्ष रूप में अथवा कल्पित रूप में कोई वस्तु अलग होती है, वह अपादान कारक होता है। अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'से' है; **जैसे–वृक्षात्** पर्णानि पतन्ति। (पेड़ से पत्ते गिरते हैं।) यहाँ 'वृक्ष' से पत्तों का अलग होना पाया जाता है, अत: **वृक्षात्** में पंचमी विभक्ति है।

२. सूत्र–भीत्रार्थानां भयहेतु:।

नियम–जिससे डरा जाता है या रक्षा की जाती है, उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। **जैसे–**साधु: **पापात्** विभेति। (साधु पाप से डरता है।)। वीर: नारीम् **दुष्टात्** रक्षति। (वीर दुष्ट से नारी की रक्षा करता है)।

३. सूत्र–आख्यातोपयोगे।

नियम–जिससे नियमपूर्वक कुछ पढ़ा जाता है, उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है; **जैसे–**अहं **गुरो:** व्याकरणं पठामि। (मैं गुरुजी से व्याकरण पढ़ता हूँ)।

४. वार्तिक–जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्।

नियम–जुगुप्सा (घृणा), विराम (बन्द हो जाना, अलग हो जाना, छोड़ देना, हटना), प्रमाद (भूल या असावधानी करना)

के समानार्थक शब्दों के साथ पञ्चमी होती है; **जैसे–सः पापात्** जुगुप्सते। (वह पाप से घृणा करता है।) सः **सत्यात्** न विरमते। (वह सत्य से नहीं हटता है।) सः **धर्मात्** न प्रमदते। (वह धर्म से प्रमाद नहीं करता है।) इन वाक्यों में क्रमशः **पापात्, सत्यात्** और **धर्मात्** में पंचमी विभक्ति है।

५. सूत्र–पृथग्विना नानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्।

नियम–पृथक् (अलग), बिना और नाना शब्दों के योग में द्वितीया, तृतीया अथवा पञ्चमी होती है; **जैसे**–दशरथः **रामम्, रामेण, रामात्** (वा) पृथक् जीवितुं नाशक्नोत्। (दशरथ राम के बिना जीवित न रह सके।) **रामम्, रामेण, रामात्** (वा) बिना लक्ष्मणः गृहे नावसत्। (राम के बिना लक्ष्मण घर पर न रहे।)

6. सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

१. सूत्र–षष्ठी शेषे।

नियम–इस सूत्र का अर्थ यह है कि जो बात और विभक्तियों से नहीं बताई जा सकती, उनको बताने के लिए षष्ठी होती है। ये बातें सम्बन्ध विशेष हैं। जहाँ स्वामी तथा भृत्य (नौकर),जन्य तथा जनक, कार्य तथा कारण इत्यादि सम्बन्ध दिखाये जाते हैं, वहाँ षष्ठी होती है; जैसे–'**राज्ञः पुरुषः – राजा का पुत्र**'। यहाँ पर '**राजा**' स्वामी है, '**पुरुष**' भृत्य (नौकर) है। इस '**स्वामी तथा भृत्य**' का सम्बन्ध दिखाने के लिए '**राज्ञः**' में षष्ठी हुई है। '**बालकस्य माता – बालक की माँ।**' यहाँ पर '**बालक**' जन्य अर्थात् '**पैदा होने वाला**' है और '**माता**' जननी अर्थात् '**पैदा करने वाली**' है, एवं इसमें '**जन्य-जनक**' सम्बन्ध है और इसी को दिखाने के लिए '**बालकस्य**' में षष्ठी विभक्ति हुई है। '**मृत्तिकायाः घटः –मिट्टी का घड़ा।**' यहाँ पर '**मिट्टी**' कारण है और '**घड़ा**' कार्य है एवं इसमें '**कार्यकारण**' सम्बन्ध है और इसी को दिखाने के लिए '**मृत्तिकायाः**' में षष्ठी हुई है।

२. सूत्र–षष्ठी हेतुप्रयोगे।

नियम–जब '**हेतु**' शब्द का प्रयोग होता है, तो जो शब्द कारण या प्रयोजन रहता है, '**वह**' और '**हेतु**' शब्द–दोनों षष्ठी में रखे जाते हैं, जैसे–'**अन्नस्य हेतोः वसति**' – वह अन्न के लिए (वास्ते) रहता है, अर्थात् अन्न पाने के प्रयोजन से रहता है। यहाँ रहने का कारण या प्रयोजन '**अन्न**' है, इसलिए '**अन्नस्य**' और '**हेतोः**' दोनों में षष्ठी हुई है।

''**अध्ययनस्य हेतोः काश्यां तिष्ठति – अध्ययन के लिए काशी में रहता है।**'' यहाँ पर रहने का प्रयोजन या कारण '**अध्ययन**' है, इसलिए '**अध्ययनस्य**' और '**हेतोः**' दोनों में षष्ठी हुई है।

7. अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

१. सूत्र–आधारोऽधिकरणम्। सप्तम्यधिकरणे च।

नियम–जिस स्थान या वस्तु पर कोई कार्य होता है, उसे अधिकरण कहते हैं और अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'में' या 'पर' है। **जैसे**–बालकः **विद्यालये** पठति। (बालक विद्यालय में पढ़ता है।) यहाँ पढ़ने का कार्य 'विद्यालय' में हो रहा है। सः **स्थाल्यां** तण्डुलान् पचति। (वह पतीली में चावल पकाता है।) यहाँ पकाने का कार्य स्थाली में हो रहा है, अतः '**स्थाल्यां**' में सप्तमी विभक्ति है।

२. सूत्र–यतश्च निर्धारणम्।

नियम–जब किसी समुदाय में किसी धातु या व्यक्ति की कोई विशेषता बतलाई जाती है, तब उस समुदायवाचक शब्द में षष्ठी या सप्तमी होती है, **जैसे–गवां, गोषु** वा कृष्णा बहुक्षीरा। (गायों में काली गाय अधिक दूध देती है।) यहाँ गायों के समुदाय में 'बहुक्षीरा' विशेषण के द्वारा कृष्णा की विशेषता बतलायी गई है, अतः '**गवां तथा गोषु**' में षष्ठी और सप्तमी हुई।

३. सूत्र–साध्वसाधुप्रयोगे च।

नियम–साधु और असाधु के प्रयोग में भी सप्तमी विभक्ति होती है; **जैसे**–साधुः कृष्णो **मातरि** (कृष्ण अपनी माँ के लिए बहुत अच्छे थे।) असाधुः **मातुले** (पर अपने मामा के लिए बहुत बुरे थे।) यहाँ '**मातरि**' और '**मातुले**' में सप्तमी विभक्ति है।

अभ्यास-प्रश्न

(क) १. कारक किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

२. विभक्ति कितनी है? प्रत्येक का परिचय दीजिए।

३. सूत्र लिखकर निम्नांकित कारकों के उदाहरण दीजिए–
कर्म, करण, अपादान, अधिकरण।

४. किन्हीं तीन वाक्यों के पदों में नियमोल्लेखपूर्वक विभक्ति का कारण लिखिए–
(अ) **तिलेषु** तैलम्। (ब) रामः **जलेन** मुखं प्रक्षालयति।
(स) रामः **तापसेभ्यः** अभयं ददाति। (द) कृष्णः **प्रयागात्** काशीं गच्छति।

५. निम्नलिखित रेखाङ्कित (काले) पदों में से एक में कारक एवं विभक्ति का नामोल्लेख कीजिए–
(अ) रामः **बाणेन** रावणं हतवान्। (ब) **बालकाय** पुस्तकं ददाति।
(स) **सा** गृहं गच्छति। (द) **भवतः** नाम किम्।

६. निम्नलिखित रेखाङ्कित (काले) पदों में से किसी एक में कारक तथा विभक्ति का नाम लिखिए–
(अ) **रामेण** सह लक्ष्मणः अगच्छत्। (ब) नदी **पर्वतात्** निर्गच्छति। (स) **छात्रेषु** देवदत्तः कुशाग्रबुद्धिः।

७. 'हरिः बलिं बसुधा याचते' वाक्य के रेखांकित पद में विभक्ति का उल्लेख कीजिए।

८. 'पुरोहिताय दक्षिणां ददाति' में पुरोहिताय पद में कौन-सी विभक्ति है?
'भूमौ पतति आम्रफलं विपक्वम्' यहाँ भूमौ पद में कौन-सी विभक्ति है?

९. (क) निम्नलिखित रेखाङ्कित (काले) पदों में कारक तथा विभक्ति का नाम लिखिए–
अध्यापकः **छात्राय** पुस्तकं ददाति।
सः **गृहात्** विद्यालयं गच्छति।
अहं **पुस्तकं** पठामि।
सः **पुस्तकं** पठति।
सः **प्रकृत्या** दयालुः।
हिमालयात् गंगा प्रभवति।
माता **बालके** स्निह्यति।
बालकेन सह आगतः पिता।
ऋते **ज्ञानात्** न मुक्तिः।
बालकाय क्रीडनम् रोचते।
त्वम् **महयम्** पुस्तकं देहि।
बालकाय अपूपं रोचते।
भक्तः **शिवं** भजति।
काव्येषु नाटकं रम्यम्।
सीता **लेखन्या** अलिखत्।
सः **भिक्षुकाय** रूप्यकं यच्छति।
पिता **पुत्राय** पुस्तकं ददाति।
मुनिः **वने** वसति।
गङ्गा **हिमालयात्** निर्गच्छति।
सः **रामाय** पुस्तकं ददाति।
अहम् **रामेण** सह गच्छामि।

सम्मोहात् स्मृति विभ्रमः।
रामः **विद्यालयं** गच्छति।
नदीषु गंगा श्रेष्ठा।
रसेषु करुणः श्रेष्ठः।
रामः **वनं** गच्छति।
ब्राह्मणेभ्यः धनानि ददाति।
सः तण्डुलानि **ओदनं** पचति।
नमो **भगवते** वासुदेवाय।
सिंहात् विभेति मृगः।
बालकेभ्यः मोदकाः रोचन्ते।
शिशुः **प्रकृत्या** सरलः अस्ति।
मह्यम् पठनं रोचते।
रामः चतुर्दश वर्षाणि **वने** न्यवसत्।
गवां कृष्णा बहुक्षीरा।
रामः **ब्राह्मणेभ्यः** धनानि ददाति।
गुरुवे नमः।
कन्दुकेन क्रीडति।
वृक्षाय जलं देहि।
प्रासादात् बालिका पतति।
गां दोग्धि पयः।
रामेण **बाणेन** हतो बाली।
बालकाः **फलानि** खादति।
रामः **अश्वेन** गच्छति।
उद्याने पुष्पाणि सन्ति।
वयम् **पुस्तकं** पठामः।
जलेन सिञ्चति।
मोक्षे इच्छा अस्ति।
सा **लेखिन्या** लिखति।
सः **अक्ष्णा** काणः।
आग्नये स्वाहा।
बालकः **अश्वात्** पतति।
मेघाः **वर्षणाय** गर्जन्ति।
इमे छात्राः **ध्यानेन** पठन्ति।
सः **मातरि** स्निह्यति।

(ख) सही विकल्प चुनकर लिखिए–

१. कारक कितने होते हैं?
(अ) नौ (ब) छह (स) सात (द) आठ

२. करण कारक में कौन-सी विभक्ति होती है?
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) चतुर्थी (द) पञ्चमी

३. 'छात्राः पठनाय विद्यालयं गच्छन्ति' में 'पठनाय' शब्द में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी

४. 'गवां कृष्णा बहुक्षीरा' वाक्य में 'गवां' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया (स) षष्ठी (द) पञ्चमी

५. चतुर्थी विभक्ति है–
(अ) करण कारक में (ब) सम्प्रदान कारक में (स) कर्म कारक में

६. 'वृद्धः दण्डेन चलति' वाक्य में 'दण्डेन' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) पञ्चमी (द) षष्ठी

७. 'नृपः ब्राह्मणाय धनं ददाति' में 'ब्राह्मणाय' शब्द में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) तृतीया (ब) चतुर्थी (स) सप्तमी (द) पञ्चमी

८. 'त्वं गुरोः आज्ञां पालयेः' में 'गुरोः' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया (स) चतुर्थी (द) षष्ठी

९. 'वृक्षात् पत्राणि पतन्ति' में 'वृक्षात्' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) तृतीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी

१०. 'शिशुः प्रकृत्या सरलः भवति' इस वाक्य में 'प्रकृत्या' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) तृतीया (ब) पञ्चमी (स) प्रथमा (द) सप्तमी

११. 'सः नगरे वसति' वाक्य में 'नगरे' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) तृतीया (स) सप्तमी (द) पञ्चमी

१२. 'स्मृतिभ्रंशात् बुद्धिनाशः भवति' इस वाक्य के रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) चतुर्थी (द) पञ्चमी

१३. 'सिंहः वने वसति' में 'वने' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) सप्तमी (स) चतुर्थी

१४. 'तिलेषु तैलम्' वाक्य में 'तिलेषु' पद में प्रयुक्त विभक्ति है–
(अ) तृतीया (ब) पञ्चमी (स) सप्तमी (द) चतुर्थी

१५. 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' यहाँ रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) तृतीया (स) पञ्चमी (द) सप्तमी

१६. बुद्धिनाशात् मरणं ध्रुवम्–इस वाक्य में 'बुद्धिनाशात्' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी (द) षष्ठी

१७. 'नदी पर्वतात् निर्गच्छति।' वाक्य में पर्वतात् पद में प्रयुक्त विभक्ति है–
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) पञ्चमी (द) षष्ठी

१८. 'इदं कस्य गृहम् अस्ति' वाक्य में 'कस्य' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) षष्ठी (द) सप्तमी

१९. 'चौरात् विभेति' में चौरात् पद में कौन-सी विभक्ति है?

२०. 'नेत्राभ्याम् अश्रूणि पतन्ति।' में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) सप्तमी (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी (द) तृतीया

●●●

5 अनुवाद

किसी एक भाषा को दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों या आवश्यकतानुसार रूपान्तरित कर देना ही अनुवाद कहलाता है। इसी प्रकार अन्य भाषा के वाक्यों को संस्कृत भाषा में रूपान्तरित कर देना ही संस्कृत अनुवाद कहलायेगा। **जैसे–** मोहन पढ़ता है, यह हिन्दी वाक्य है; इसका संस्कृत अनुवाद होगा– ''मोहनः पठति।''

सभी भाषाओं में भाव प्रकाशन का माध्यम वाक्य ही होता है। कर्त्ता और क्रिया वाक्यरूपी भवन के दो दृढ़ स्तम्भ हैं, अतः कर्त्ता और क्रिया का सम्बन्ध सुदृढ़ होना चाहिए। संस्कृत में यद्यपि शब्दों के क्रम में उलटफेर करने से अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता, फिर भी अनुवाद की सरलता के लिए संस्कृत के वाक्यों का क्रम भी हिन्दी के समान ही है। पहले कर्त्ता फिर कर्म और अन्त में क्रिया।

संस्कृत में कोई भी शब्द विभक्ति-रहित नहीं प्रयुक्त होता। इसकी क्रियाओं में लिङ्ग-भेद नहीं होता है। तीनों लिङ्गों में क्रिया समान हो सकती है।

अनुवाद के कुछ आवश्यक अङ्ग निम्नलिखित हैं–

(क) वचन– संस्कृत में तीन वचन होते हैं–

(१) एकवचन (एक वस्तु के लिए)

(२) द्विवचन (दो वस्तु के लिए)

(३) बहुवचन (दो से अधिक वस्तु के लिए।)

(ख) पुरुष– संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं–

(१) प्रथम पुरुष या अन्य पुरुष– जिसके विषय में बात कही जाय।

(२) मध्यम पुरुष–जिससे बात कही जाय।

(३) उत्तम पुरुष– जो बात को कहता है।

प्रत्येक पुरुष तीनों वचनों में होते हैं। क्रियाओं के रूप भी पुरुषों के आधार पर ही चलाये जाते हैं। इसलिए प्रत्येक क्रिया के नौ रूप उदाहरणार्थ इस प्रकार होते हैं–

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

क्रियाओं के साथ प्रत्येक पुरुष के प्रत्येक वचन में जुड़ने वाले कर्त्ता भी नौ हैं–

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब)
मध्यम पुरुष	त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)
उत्तम पुरुष	अहम् (मैं, हम)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब)

(ग) कर्त्ता– क्रिया के करने वाले को कर्त्ता कहते हैं। कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। क्रिया के पहले 'कौन' लगाने से उत्तर में जो शब्द प्राप्त हो, वही कर्त्ता है।

(घ) क्रिया–जिससे किसी काम का करना या होना पाया जाय, उसे क्रिया कहते हैं।

(ङ) काल– क्रिया के तीन प्रमुख काल होते हैं–

(१) वर्तमान काल– जिससे चालू समय का बोध हो, वह वर्तमान काल है। इसके लिए लट् लकार का प्रयोग होता है।

(२) भूतकाल– जिससे बीते समय का बोध होता है, वह भूतकाल है। इसमें लङ् लकार का प्रयोग होता है।

(३) भविष्यत् काल– जिससे आने वाले समय का बोध होता है, वह भविष्यत् काल है। इसमें लृट् लकार का प्रयोग होता है।

(च) लिङ्ग– लिङ्ग तीन प्रकार के होते हैं। संस्कृत में क्रिया के ऊपर लिङ्ग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(१) पुंलिङ्ग– जिससे पुरुष जाति का बोध होता है।

(२) स्त्रीलिङ्ग– जिससे स्त्री जाति का बोध होता है।

(३) नपुंसकलिङ्ग– जिससे न पुरुष जाति का बोध हो और न स्त्री जाति का।

(छ) कारक– कारक आठ होते हैं। ये निम्नलिखित हैं—

विभक्ति	**कारक का नाम**	**चिह्न**
प्रथमा	कर्त्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, के द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पंचमी	अपादान	से (अलग होने में)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा,रे, री
सप्तमी	अधिकरण	में, पर, पे
सम्बोधन (प्रथमा)	सम्बोधन	हे, भो, अरे

लट् लकार (वर्तमान काल) प्रथम पुरुष

नियम १– वर्तमान काल में लट् लकार का प्रयोग होता है। कर्तृवाच्य में कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है, अर्थात् प्रथमा विभक्ति का रूप लिखा जाता है और उसी कर्त्ता के अनुसार क्रिया का प्रयोग होता है।

यथा–

१. बालक: पठति – लड़का पढ़ता है।
२. बालिका पठति – लड़की पढ़ती है।
३. फलं पतति – फल गिरता है।
४. सा पठति – वह पढ़ती है।
५. भवान् गच्छति – आप जाते हैं।
६. भवती लिखति – आप लिखती हैं।
७. बालकौ गच्छत: – दो लड़के जाते हैं।
८. छात्रा: पठन्ति – छात्र पढ़ते हैं।

नियम २– जब वाक्य में दो कर्त्ता होते हैं और 'च' (और) से जुड़े होते हैं, तब क्रिया द्विवचन होती है।

नियम ३– जब वाक्य में दो कर्त्ता 'वा' (अथवा) से जुड़े होते हैं, तब क्रिया द्विवचन की न होकर एकवचन की ही होती है।

नियम ४– जब वाक्य में दो से अधिक कर्त्ता 'च' से जुड़े होते हैं, तब क्रिया बहुवचन की होती है।

नियम ५– जब वाक्य में दो से अधिक कर्त्ता 'वा' से जुड़े होते हैं, तब क्रिया एकवचन की होती है।

नियम ६– 'च' 'वा' 'अथवा' आदि अव्यय हैं। हिन्दी में ये शब्द जिस शब्द के पहले आते हैं, संस्कृत में उसी शब्द के बाद प्रयुक्त होते हैं।

आदर्श वाक्य

१. रामः कृष्णश्च पठतः	–	राम और कृष्ण पढ़ते हैं।
२. रामः कृष्णः वा गच्छति	–	राम या कृष्ण जाता है।
३. रामः कृष्णः मोहनश्च लिखन्ति	–	राम, कृष्ण और मोहन लिखते हैं।
४. रामः कृष्णः हरिः वा गच्छति	–	राम या कृष्ण या हरि जाता है।
५. छात्रौ पठतः	–	दो छात्र पढ़ते हैं।
६. बालिके हसतः	–	दो लड़कियाँ हँसती हैं।
७. भवन्तः वदन्ति	–	आप लोग बोलते हैं।
८. भवत्यः पश्यन्ति	–	आप लोग देखती हैं।

अभ्यास-प्रश्न-1

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

१. वे सब जा रहे हैं। २. लड़के और लड़कियाँ लिखते हैं। ३. राम और श्याम दौड़ते हैं। ४. मोहन या सोहन खा रहा है। ५. हरि, मोहन और सुरेश हँसते हैं। ६. सीता, गीता या लता आती है। ७. वे देखते हैं। ८. दो लड़कियाँ खा रही हैं। ९. लड़कियाँ गा रही हैं। १०. हाथी जा रहे हैं।

सहायक शब्द– आती है = आगच्छति। देखते हैं = पश्यन्ति। गा रही हैं = गायन्ति।

लट् लकार (वर्तमान काल) मध्यम पुरुष

नियम १– संस्कृत में तुम, तुम दोनों, तुम सब मध्यम पुरुष के लिये 'युष्मद्' शब्द का प्रयोग 'त्वम्, युवाम्, यूयम्' होता है।

नियम २– यदि मध्यम पुरुष के साथ प्रथम पुरुष का कर्त्ता 'च' से जुड़ा हो तो क्रिया मध्यम पुरुष द्विवचनान्त होती है और यदि दो से अधिक कर्त्ता हों तो क्रिया मध्यम पुरुष बहुवचनान्त होती है।

नियम ३– यदि कई कर्त्ता में 'वा' अथवा 'या' जुड़े होते हैं, तो क्रिया अपने सबसे निकट (पास) के कर्त्ता के पुरुष तथा वचन के अनुसार होती है।

आदर्श वाक्य

१. त्वं पठसि	–	तुम पढ़ते हो, पढ़ती हो।
२. युवां पठथः	–	तुम दोनों पढ़ते हो, पढ़ती हो।
३. यूयं पठथ	–	तुम सब या तुम लोग पढ़ते हो, पढ़ती हो।
४. त्वं रामश्च गच्छथः	–	तुम और राम जाते हो।

५. युवां रामः हरिश्च गच्छथ	–	तुम, राम और हरि जाते हो।
६. यूयं महेशः सुरेशश्च गच्छथ	–	तुम लोग, महेश और सुरेश जाते हो।
७. त्वं रामः हरिः वा गच्छति	–	तुम, राम या हरि जाते हो।
८. युवां रामः ते वा गच्छन्ति	–	तुम दोनों राम या वे जाते हैं।

अभ्यास-प्रश्न-2

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

१. हम या तुम पढ़ते हैं। २. तुम लोग या वे देखते हैं। ३. तुम लोग या वह दौड़ता है। ४. वह और मैं लिखता हूँ। ५. हरि या राम खेल रहा है। ६. तुम, गंगा और गायत्री हँस रही हो। ७. तुम और गीता बोलते हो। ८. तुम दोनों खाते हो। ९. वे लोग और तुम पूछते हो। १०. तुम लोग या वे लोग आ रहे हैं।

सहायक शब्द– देखता हूँ = पश्यन्ति। दौड़ते हैं = धावन्ति। लिखता हूँ = लिखावः। हँस रही हो = हसथ। पूछते हो = पृच्छथ। आ रहे हैं = आगच्छन्ति।

लट् लकार (वर्तमान काल) उत्तम पुरुष

नियम १– संस्कृत में उत्तम पुरुष 'मैं, हम दोनों, हम सब या हम लोग' के लिए 'अस्मद्' शब्द का प्रयोग 'अहम्, आवाम्, वयम्' होता है।

नियम २– यदि वाक्य में दो से अधिक कर्त्ता हों और वे 'च' से जुड़े हों तथा वे प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष के हों, तो क्रिया उत्तम पुरुष बहुवचन की होती है।

नियम ३– यदि वाक्य में 'च' अव्यय से जुड़े हुए उत्तम और मध्यम पुरुष के दो ही कर्त्ता हों तो क्रिया उत्तम पुरुष द्विवचन की होगी।

आदर्श वाक्य

१. अहं पश्यामि	–	मैं देखता हूँ, देखती हूँ।
२. आवां पश्यावः	–	हम दोनों देखते हैं, देखती हैं।
३. वयं पश्यामः	–	हम लोग देखते हैं, देखती हैं।
४. त्वम् अहं रामश्च पठामः	–	तुम, मैं और राम पढ़ते हैं।
५. त्वम् अहं च हसावः	–	तुम और मैं हँसता हूँ।
६. सः वा त्वं वा अहं वा लिखामि	–	वह, तुम या मैं लिखता हूँ।

अभ्यास-प्रश्न-3

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

१. हम लोग खाते हैं। २. मैं बोलता हूँ। ३. हम दोनों दौड़ते हैं। ४. हम, तुम और गोपाल पूछते हैं। ५. तुम और मैं देखता हूँ। ६. हरि या तुम आते हो। ७. तुम हरि और मैं रक्षा करता हूँ। ८. हम लोग या वे लोग सोते हैं। ९. वे दोनों और हम दोनों गिरते हैं। १०. तुम दोनों और हम लोग पाते हैं।

सहायक शब्द– पूछते हैं = पृच्छामः। देखता हूँ = पश्यावः। आते हो = आगच्छसि। रक्षा करता हूँ = रक्षामः। सोते हैं = शेरते। गिरते हैं = पतामः। पीते हैं = पिबामः।

लङ् लकार (भूतकाल) सभी पुरुष

नियम १– जो काम बीते हुए समय में हो चुका है, उस काल (समय) को भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के लिए संस्कृत में लङ् लकार का प्रयोग होता है।

नियम २– कभी-कभी वर्तमान काल के प्रथम पुरुष की क्रिया में 'स्म' जोड़कर भूतकाल व्यक्त किया जाता है। यह प्राय: 'था' के लिए प्रयुक्त होता हैं। जैसे– पठति स्म = पढ़ रहा था, हसति स्म = हँसता था।

आदर्श वाक्य

१. छात्र: अगच्छत्	–	छात्र चला गया।
२. छात्रा अगच्छत्	–	छात्रा चली गयी।
३. फलम् अपतत्	–	फल गिरा।
४. स: अपश्यत्	–	उसने देखा।
५. यूयम् अपतत्	–	तुम लोग गिर गये।
६. आवाम् अकथयाव	–	हम दोनों ने कहा।
७. बालक: गच्छति स्म	–	लड़का जा रहा था।
८. बालिका लिखति स्म	–	लड़की लिख रही थी।

अभ्यास-प्रश्न-4

१. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

१. लड़कों ने खा लिया। २. वे लोग चले गये। ३. हमने देखा। ४. लड़कियाँ रो रही थीं। ५. चोर भाग गये। ६. आप लोगों ने देखा। ७. श्याम ने लिखा। ८. वे दौड़ रहे थे। ९. हम लोगों ने सुना। १०. छात्रों ने याद किया।

सहायक शब्द– देखा = अपश्यन्। भाग गये = अपलायन्। दौड़ रहे थे = धावन्ति स्म। सुना = अशृणुम। याद किया = स्मरन्।

२. कोष्ठक में दी हुई क्रिया को लङ् लकार में बदलो–

(१) त्वं (लिखसि)। (२) तौ कुत्र (गच्छत:)। (३) बालकौ (स्मरत:)। (४) ते (हसन्ति)। ५. शिष्या: (नमन्ति)। ६. सा (गच्छति)। ७. युवां (पचथ:)। ८. मालाकार: (सिञ्चति)। ९. अहं (पृच्छामि)।

लृट् लकार (भविष्यत्काल) सभी पुरुष

नियम– जब कोई काम आगे आने वाले समय में होता है, तब वह भविष्य काल में होता है और भविष्यकाल में लृट् लकार का प्रयोग होता है। इसके रूप लट् लकार के समान होते हैं। केवल 'ति' 'त' आदि प्रत्ययों के पहले 'स्य' जुड़ जाता है। जैसे– पठति–पठिष्यति।

आदर्श वाक्य

१. स: पठिष्यति	–	वह पढ़ेगा।
२. सा पठिष्यति	–	वह पढ़ेगी।
३. फलं पतिष्यति	–	फल गिरेगा।
४. राम: श्यामश्च गमिष्यत:	–	राम और श्याम जायेंगे।
५. श्याम: हरि: वा भक्षयिष्यति	–	श्याम या हरि खायेगा।
६. भवन्त: द्रिक्ष्यन्ति	–	आप लोग देखेंगे।
७. भवती गमिष्यति	–	आप जायेंगी।

अभ्यास-प्रश्न-5

१. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

१. लड़के जायेंगे। २. आप लोग लिखेंगे। ३. गीता खायेगी। ४. हम दोनों ठहरेंगे। ५. सतीश या शेखर पूछेगा। ६. तुम दोनों दोगे। ७. गणेश हँसेगा। ८. वे लोग आवेंगे। ९. मोहन, सोहन और रमेश देखेंगे। १० हम लोग याद करेंगे।

२. कोष्ठक में दी गयी हिन्दी क्रियाओं को संस्कृत में बदल कर लिखें–

(१) आवां (जायेंगे)। (२) भवन्त: (लिखेंगी)। (३) सीता (पढ़ेगी)। (४) गुरु: (उपदेश देंगे)। (५) कन्या: (पकायेंगी)। (६) अहं (बैठूँगा)। (७) लता (गायेगी)। (८) पुत्र: (होगा) (९) बालिका (नाचेगी)। (१०) शुकौ (बोलेंगे)।

लोट् लकार, सभी पुरुष

नियम १– लोट् लकार का प्रयोग आज्ञा, इच्छा, प्रार्थना, अनुमति, आशीर्वाद आदि अर्थों में होता है।

नियम २– प्रथम पुरुष में इस लकार का प्रयोग प्राय: इच्छा प्रार्थना अर्थ में होता है।

नियम ३– मध्यम पुरुष में इसका प्रयोग आज्ञा, आशीर्वाद अर्थ में होता है। कभी-कभी आज्ञा में 'तुम' कर्त्ता छिपा रहता है। ऐसी दशा में क्रिया छिपे हुए कर्त्ता के अनुसार मध्यम पुरुष की होती है।

नियम ४– उत्तम पुरुष में इसका प्रयोग इच्छा और प्रश्न अर्थ में होता हैं।

आदर्श वाक्य

१. स: लिखतु	–	वह लिखे
२. सा पठतु	–	वह पढ़े
३. भवान् आगच्छत्	–	आप आयें
४. त्वं पठ	–	तुम पढ़ो
५. चिरंजीवी भव	–	दीर्घायु हो
६. अहं गच्छानि	–	मैं जाऊँ
७. किम् अहं लिखानि	–	क्या मैं लिखूँ?

अभ्यास-प्रश्न-6

१. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

१. तुम लोग जाओ। २. क्या मैं पढ़ूँ। ३. आप लोग कहें। ४. लड़के जायें। ५. आप प्रसन्न हों। ६. तुम दोनों ठहरो। ७. हाथी जाय। ८. वे लोग आवें। ९. पानी बरसे। १०. सेवक देखें।

सहायक शब्द– कहें = कथयन्तु। **बैठो** = तिष्ठतम् । **बरसे** = वर्षसु।

२. कोष्ठांकित धातु का रिक्त स्थान में लोट् लकार रूप लिखें–

(१) राम ..... (पठ्)। (२) जना: ..... (गम्)। (३) शिष्यौ ..... (नम्)। (४) पुत्रा: ..... (नम्)। (५) अहं ..... (लिख्)। (६) अत्र ..... (उप + विश्)। (७) त्वं बहि: मा ..... (गम्)।

विधिलिङ् लकार (चाहिए) सभी पुरुष

नियम– विधिवाक्य (जिसमें 'चाहिए' शब्द का प्रयोग होता है)। इच्छा प्रकट करना, अनुमति, प्रार्थना, सम्भावना, सामर्थ्य प्रकट करना इत्यादि अर्थों में तथा यदि के साथ विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

विशेष– इन अर्थों में कहीं-कहीं लोट् लकार का भी प्रयोग किया जाता है। 'चाहिए' से युक्त वाक्यों में कर्त्ता में 'को' का चिह्न लगा रहता है, उसे कर्म का चिह्न नहीं समझना चाहिए।

आदर्श वाक्य

१. बालक: पठेत् – लड़के को पढ़ना चाहिए या लड़का पढ़े।
२. बालिका पठेत् – लड़की को पढ़ना चाहिए या लड़की पढ़े।
३. बालका: पठेयु: – लड़कों को पढ़ना चाहिए या लड़के पढ़ें।
४. छात्र: तत्र पठेत् – छात्र को वहाँ पढ़ना चाहिए या छात्र वहाँ पढ़ें।
५. बालक: किं कुर्यात् – लड़का क्या करे?
६. किम् अहं पठानि – क्या मैं पढ़ूँ।

अभ्यास-प्रश्न-7

१. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

१. उसे जाना चाहिए। २. तुम लोगों को पढ़ना चाहिए। ३. यदि लड़के वहाँ आयें। ४. क्या वे जायँ। ५. उन लोगों को पीना चाहिए। ६. हम लोगों को दौड़ना चाहिए। ७. तुम्हें हँसना चाहिए। ८. लड़कियों को नाचना चाहिए। ९. हम दोनों को सोना चाहिए। १०. आप को सुनना चाहिए।

सहायक शब्द– पठेत् = पढ़ना चाहिए। धावेम् = दौड़ना चाहिए।

२. रिक्त स्थानों में कोष्ठांकित धातु का विधिलिङ् लकार में उचित रूप लिखें–

(१) भवन्त: ..... (पठ्)। (२) भवन्त: ..... (गम्)। (३) त्वम् ..... (नम्)। (४) सेवकौ ..... (नी)। (५) अहं ..... (दृश)। (६) ऋषि ..... (तप्)।

अव्यय का प्रयोग

नियम– अव्यय शब्दों का रूप नहीं बदलता। इसलिए वे वाक्य में ज्यों का त्यों लिखे जाते हैं। 'च' 'वा' कुत्र, यत्र, तत्र, सर्वत्र, यदा, तदा, कदा, तर्हि आदि अनेक अव्यय शब्द हैं।

आदर्श वाक्य

१. इदानीं त्वं कुत्र गच्छसि – इस समय तुम कहाँ जा रहे हो?
२. वयम् अद्य न पठिष्याम: – हम लोग आज नहीं पढ़ते?
३. ते अत्र कदा आगच्छन्ति – वे यहाँ कब आते हैं?
४. यत्र त्वम् इच्छसि तत्र गच्छ – जहाँ तुम चाहते हो, वहाँ जाओ।

अभ्यास-प्रश्न-8

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

१. लड़के वहाँ नहीं जायेंगे। २. ईश्वर सब जगह हैं। ३. वे यहाँ कब आयेंगे। ४. जैसा चाहते हो, वैसा होगा। ५. आप लोग जहाँ चाहें वहाँ ठहरें। ६. तुम लोग यहाँ मत आना। ७. तुम लोगों ने वहाँ क्या देखा। ८. वह नित्य सबेरे पढ़ता है। ९. जब वह गया, तब फिर नहीं आया। १०. उसे कल जाना चाहिए।

सहायक शब्द– जैसा = यथा। वैसा = तथा। चाहें = इच्छेत। क्या = किम्। सबेरे = प्रात:। फिर = पुन:। कल = श्व।

सर्वनाम का प्रयोग

नियम– १– तद् (वह), यद् (जो), इदम् (यह), एतत् (यह), किम् (कौन, क्या), सर्व (सब), युष्मद् (तुम), अस्मद् (मैं, हम), अदस् (वह) आदि शब्द सर्वनाम हैं। इसमें युष्मद् और अस्मद् क्रमशः मध्यम तथा उत्तम पुरुष के हैं। शेष सभी प्रथम पुरुष के हैं।

नियम २– सर्वनामों का प्रयोग विशेषणों की तरह होता है। जहाँ ये विशेषणों की तरह काम में आते हैं वहाँ उनके लिङ्ग, वचन और विभक्ति अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं।

नियम ३– सर्वनाम शब्दों का प्रयोग संज्ञाओं के स्थान पर होता है, अतः इनके रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

आदर्श वाक्य

१. का लिखति	–	कौन लिखती है?
२. का गच्छति	–	कौन जा रही है?
३. इयं हसति	–	यह हँसती है।
४. के गच्छन्ति	–	कौन जा रहे हैं?
५. सर्वे पश्यन्ति	–	सब देख रहे हैं।
६. अयं कः अस्ति	–	यह कौन है?

अभ्यास-प्रश्न-9

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

१. जो चलता है, वह गिरता है। २. ये लोग कहाँ जा रहे हैं? ३. वहाँ कौन जायेगा? ४. वह कौन लिख रही है? ५. यहाँ कौन आया था? ६. सब लोग वहाँ बैठे हैं। ७. कौन रो रही है? ८. जो लिखेगा वह पढ़ेगा। ९. वह कौन देख रही है? १०. वह यहाँ नहीं आया।

सहायक शब्द– ये लोग = इमे। कौन = का (स्त्रीलिङ्ग)। जो = यः (पुंलिङ्ग)।

विशेषण का प्रयोग

नियम १– जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जिसकी विशेषता प्रकट की जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं। **जैसे–** सुन्दरः बालकः– सुन्दर लड़का, इसमें लड़का विशेष्य और सुन्दर विशेषण हुआ।

नियम २– जो लिङ्ग, वचन और कारक विशेष्य में होता है, वही लिङ्ग, वचन और कारक (विभक्ति) उसके विशेषण में भी होता है (**जैसे–** सुन्दरः पुरुषः – सुन्दर पुरुष (पुंलिङ्ग)। सुन्दरी नारी - सुन्दर स्त्री (स्त्रीलिङ्ग)। सुन्दरम् गृहम् (नपुंसकलिङ्ग)।

नियम ३– तद्, यद्, इदम्, अदस्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, सर्व आदि सर्वनाम शब्दों का प्रयोग भी विशेषण की तरह होता है। जहाँ ये विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं वहाँ इनके लिङ्ग, वचन तथा कारक (विभक्ति) अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं। **जैसे–** अयं बालकः – यह लड़का (पुंलिङ्ग), इयं बालिका– यह लड़की (स्त्रीलिङ्ग), इदम् फलम्– यह फल (नपुंसकलिङ्ग)।

नियम ४– संस्कृत में किम् (क्या) शब्द के आगे 'चित्' जोड़ देने से उसका अर्थ 'किसी' हो जाता है। ऐसे स्थान पर किम् शब्द का रूप उसके विशेष्य के अनुसार बनाकर' 'चित्' जोड़ा जाता है तथा आवश्यकतानुसार संधि भी करनी पड़ती है। **जैसे–**कस्मिंश्चिद् वने–किसी वन में, आदि।

आदर्श वाक्य

१. श्यामः बुद्धिमान् बालकः अस्ति	– श्याम बुद्धिमान लड़का है।
२. श्यामा बुद्धिमती बालिका अस्ति	– श्यामा चतुर लड़की है।

३. इदं गृहं सुन्दरं वर्तते – यह घर सुन्दर है।
४. काशी विशाला नगरी अस्ति – काशी बड़ी नगरी है।

अभ्यास-प्रश्न-10

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

१. यह उत्तम छात्र है। २. जो लड़का जा रहा है वह मोटा है। ३. रावण बड़ा दुष्ट था। ४. वह लड़की चली गई। ५. यह मनोहर फूल है। ६. राधा सुन्दर नारी थी। ७. रमेश बुद्धिमान छात्र है। ८. भगवद्गीता उत्तम पुस्तक है। ९. यह वस्त्र पीला है। १०. यह चन्द्रमा है।

सहायक शब्द– मोटा = स्थूलः। पीला = पीतम्। बड़ा = अति।

संख्यावाचक विशेषण

नियम १– संख्यावाचक (एक, द्वि, त्रि, चतुर, पंचन्) आदि शब्द विशेषण होते हैं। अतः इनके रूप अपने विशेष्य के अनुसार तीनों लिङ्गों में होते हैं। **जैसे–**एकः बालकः (एक लड़का), एका बालिका (एक लड़की)। एकम् नगरम्– (एक नगर) आदि।

नियम २– प्रथमः (पहला), द्वितीयः (दूसरा), तृतीयः (तीसरा), चतुर्थः (चौथा), पंचमः (पांचवाँ), षष्ठः आदि क्रमबोधक संख्यावाचक विशेषण सभी लिङ्गों और वचनों में अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं। **जैसे–**प्रथमः बालकः (पहला लड़का), द्वितीयः पुरुष (दूसरा आदमी), तृतीयः पुष्पम् (तीसरा फूल) आदि।

आदर्श वाक्य

१. अयम् एकः गजः अस्ति – यह एक हाथी है।
२. द्वितीयः कः पुरुषः अस्ति – दूसरा कौन आदमी है।
३. इयम् एका बालिका आगच्छति – यह एक लड़की आ रही है।
४. इदम् एकं पुष्पम् अस्ति – यह एक फूल है।
५. तृतीया बालिका किं करोति – तीसरी लड़की क्या कर रही है?

अभ्यास-प्रश्न-11

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

१. एक लड़का है। २. पहला घोड़ा दौड़ रहा है। ३. दूसरी स्त्री कहाँ जायेगी। ४. एक घर गिर गया। ५. यह एक मनोहर फूल है। ६. ये तीन फल हैं। ७. महेश एक अच्छा लड़का है। ८. तीसरी लड़की यहाँ आयेगी। ९. यह नवीं कक्षा है। १०. पहला आदमी मोटा है।

सहायक शब्द– घोड़ा = अश्वः। घर = गृहम्। अच्छा = उत्तम। यह = इदम्।

कर्त्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

नियम १– क्रिया करने वाले को कर्त्ता कहते हैं और कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। इसका चिह्न (पहचान) 'ने' है। यह कहीं-कहीं छिपा रहता है। **जैसे–** राम लिखता है–रामः लिखति (कर्तृवाच्य) में 'ने' छिपा है और रामः प्रथमा विभक्ति का शब्द है।

नियम २– संस्कृत में बिना विभक्ति लगाये शब्द निरर्थक होते हैं। अतः अर्थ बताने के लिए संज्ञा शब्दों में प्रथमा विभक्ति आती है। **जैसे–**रामः = राम। गजः = हाथी, शुकः = तोता, आदि।

नियम ३– पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग बनाने के लिए भी प्रथमा विभक्ति आती है। **जैसे–** तट: (पुंलिङ्ग), तटी (स्त्रीलिङ्ग), तटम् (नपुंसकलिङ्ग)– किनारा आदि।

नियम ४– अव्ययों के साथ तथा केवल नाम के कथन में प्रथमा विभक्ति होती है। **जैसे–** गाँधी 'बापू' इति प्रसिद्ध: अस्ति – गाँधी बापू इस (नाम से) प्रसिद्ध हैं।

आदर्श वाक्य

१. बालक: बालिका च पठत:	–	लड़का और लड़की पढ़ रहे हैं।
२. भानु: शशि: वा गच्छति	–	भानु या शशि जाता है।
३. शुक: एक: पक्षी अस्ति	–	तोता एक चिड़िया है।
४. इदम् एकं नगरम् अस्ति	–	यह एक नगर है।
५. इयम् एका नगरी अस्ति	–	यह एक नगरी है।
६. संस्कृत देवभाषा इति प्रसिद्धा अस्ति	–	संस्कृत देवभाषा के नाम से प्रसिद्ध है।

अभ्यास-प्रश्न-12

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए।

१. अशोक 'प्रियदर्शी' इस नाम से प्रसिद्ध था। २. राम और लक्ष्मण भाई थे। ३. गीता और रेखा चली गयीं। ४. सीता या रीता नहीं आवेगी। ५. यह एक सुन्दर उपवन है। ६. हम और तुम वहाँ कब चलेंगे। ७. सीता सती नारी थी। ८. वे लोग वहाँ जायें।

सहायक शब्द– इस नाम से = इति। भाई = भ्रातरौ।

कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

नियम १– किसी वाक्य में प्रयोग किये गये पदार्थों में से कर्त्ता जिसको सबसे अधिक चाहता है, उसे कर्म कहते हैं, अर्थात् जिस पर क्रिया का फल समाप्त होता है (पड़ता) है, उसे कर्म कहते हैं। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। **जैसे–** बालक: वानरं ताडयति–लड़का बन्दर को मारता है। यहाँ 'ताडयति' क्रिया का फल वानर पर पड़ता है, अत: उसमें द्वितीया विभक्ति हुई है।

विशेष– क्रिया के पहले 'किसको' अथवा 'क्या' लगाने से जो उत्तर में आता है, वह कर्म होता है। हिन्दी में 'कर्म' का चिह्न 'को' है। यह कहीं-कहीं छिपा भी रहता है। जैसे–राम: पुस्तकं पठति– राम पुस्तक पढ़ता है। यहाँ कर्म का चिह्न 'को' छिपा है। यहाँ वाक्य में 'क्या' लगाने से 'क्या पढ़ता है', उत्तर में 'पुस्तक' आती है। अत: इसमें द्वितीया विभक्ति होगी।

वाक्य में यदि कर्म एक होता है तो उसमें एकवचन, दो हों तो द्विवचन और दो से अधिक हों तो बहुवचन होता है। **जैसे–** अहं गणेशं नमामि–मैं गणेश को प्रणाम करता हूँ। बालका: फलानि खादन्ति—लड़के फल खाते हैं, आदि। **यथा–**

१. बालक: नाटकम् अपश्यत्	–	लड़के ने नाटक देखा।
२. बालिका: गीतं गायन्ति	–	लड़कियाँ गीत गाती हैं।
३. अहं सूर्यं पश्यामि	–	मैं सूर्य को देखता हूँ।
४. शिक्षक: छात्रान् ताडयति	–	अध्यापक छात्रों को पीटता है।

नियम २–याच् (माँगना), पच् (पकाना), पृच्छ (पूछना), ब्रू (बोलना), नी (ले जाना), हृ (चुराना) आदि और इनके अर्थ वाली अन्य धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे–गुरु: छात्रं प्रश्नं पृच्छति–गुरुजी छात्र से प्रश्न पूछते हैं। यहाँ 'छात्र से' कर्म कारक नहीं है, किन्तु इस विशेष नियम से 'छात्र' में द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

अन्य उदाहरण–

१. शिशुः मातरं मोदकं याचते – बच्चा माँ से लड्डू माँगता है।
२. सः तण्डुलान् ओदनं पचति – वह चावलों से भात पकाता है।
३. अध्यापकः छात्रं प्रश्नं पृच्छति – अध्यापक छात्र से प्रश्न पूछता है।
४. गोपालः पुस्तकं गृहं नयति – गोपाल पुस्तक घर ले जाता है।

नियम ३–गमनार्थक धातु के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। **जैसे**–बालकः गृहं गच्छति–लड़का घर में जाता है।

नियम ४–शी (सोना), स्था (ठहरना) तथा आस् (बैठना) धातु से पहले यदि 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो इनके आधार में द्वितीया विभक्ति हो जाती है। **जैसे**–रामः शिलाम् अधि- शेते–राम शिला पर सोता है।

नियम ५–अभितः (सब तरफ), परितः (चारो तरफ), सर्वतः (सब तरफ), उभयतः (दोनों ओर), हा, धिक, प्रति, बिना आदि के योग में (इन शब्दों की जिससे निकटता प्रतीत होती है, उनमें) द्वितीया विभक्ति होती है।

आदर्श वाक्य

१. कपिः वृक्षम् आरोहति – बन्दर पेड़ पर चढ़ता है।
२. सिंहः वनम् अटति – सिंह वन में घूमता है।
३. राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति – राजा सिंहासन पर स्थित है।
४. विद्यालयम् उभयतः एका नदी बहति – विद्यालय के दोनों ओर एक नदी बहती है।
५. व्याधः मृगं प्रति अपश्यत् – बहेलिये ने हिरन की ओर देखा।
६. मम् ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति – मेरे गाँव के चारों ओर पेड़ हैं।

अभ्यास-प्रश्न-13

१. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

१. सड़क के दोनों ओर पेड़ हैं। २. विद्यार्थी गुरु के चारों ओर बैठे हैं। ३. तुम्हारे प्रति कोई ध्यान करेगा। ४. लंका के चारों ओर समुद्र है। ५. राम ने रावण को मारा। ६. रमेश पुस्तक लाता है। ७. सुरेश शिक्षक को प्रणाम करता है। ८. छात्र अध्यापक से पुस्तक माँगते हैं। ९. नौकर गाँव से बकरी चुराता है। १०. वे लोग फल खाएँगे।

२. कोष्ठांकित शब्दों में उचित विभक्ति लगाओ–

(१) (नगर) परितः जलं अस्ति।
(२) मुनिः (कुशासन) अधितिष्ठति।
(३) हरिः (वैकुण्ठ) अधितिष्ठति।
(४) मम विद्यालयः (गृह) निकषा अस्ति।
(५) (लवण) बिना भोजन स्वादु न भवति।

करण कारक (तृतीया विभक्ति)

नियम १–जिसकी सहायता से कर्त्ता अपना कार्य पूरा करता है, उसे करण कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। उसकी पहचान 'से' या 'द्वारा' है। **जैसे**–छात्रः मुखेन खादति–छात्र मुख से खाता है। यहाँ कर्त्ता छात्र मुख से अपना काम पूरा कर रहा है, अतः वह करण कारक है और उसमें तृतीया विभक्ति 'मुखेन' हुई।

विशेष– आँख, कान, हाथ, पैर प्रत्येक आदमी के दो होते हैं। अतः जब एक के लिए इसका प्रयोग होता है, तब ये सदा द्विवचन में ही आते हैं। **जैसे**–अहं नेत्राभ्यां पश्यामि–मैं आँख से देखता हूँ।

जहाँ इनका प्रयोग एक से अधिक के लिए होता है, वहाँ इसमें द्विवचन और बहुवचन दोनों ही हो सकते हैं। जैसे– **वयं कर्णाभ्याम्** (द्विवचन) अथवा **कर्णैः** (बहुवचन) **शृणुमः–** हम लोग कान से सुनते हैं। यहाँ द्विवचन या बहुवचन दोनों हो सकता है।

यथा–

(१) सीता नाक से फूल सूँघती है।	सीता नासिकया पुष्पं जिघ्रति।
(२) मैं गेंद से खेलता हूँ।	अहं कन्दुकेन क्रीडामि।
(३) मैं मुँह से बोलता हूँ।	अहं मुखेन वदामि।
(४) हम सब आँखों से देखते हैं।	वयं नेत्राभ्यां पश्यामः।
(५) किसान हल से खेत जोतता है।	कृषकः हलेन क्षेत्रं कर्षति।

नियम २– 'साथ' का अर्थ रखने वाले सह, साकम्, सार्द्धम्, समम् शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

नियम ३– जिस शब्द से शरीर के किसी अंग का विकार सूचित होता है, उस अंगवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है।

नियम ४– समानार्थक तुल्यः, समः, समानः शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

नियम ५– किसी वस्तु के मूल्य में तृतीया विभक्ति होती है।

नियम ६–निषेधार्थक 'अलम्' के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

नियम ७–किम्, कार्यम्, कोऽर्थः, प्रयोजनम् के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

आदर्श वाक्य

(१) सीता राम के साथ वन गयी।	सीता रामेण सह वनम् अगच्छत्।
(२) मैं पिताजी के साथ बाजार जाता हूँ।	अहं जनकेन साकं/समं आपणं गच्छामि।
(३) राम नेत्र से काणा है।	रामः नेत्रेण काणः अस्ति।
(४) पैर से लंगड़ा वह पुरुष चल नहीं सकता।	पादेन खञ्जः सः जनः चलितुं न शक्नोति।
(५) अर्जुन के समान धनुर्धारी नहीं था।	अर्जुनेन समः धनुर्धारी न आसीत्।
(६) सीता का मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है।	सीतायाः मुखं चन्द्रेण तुल्यम् अस्ति।
(७) विवाद मत करो।	विवादेन अलम्।
(८) मूर्खों को पुस्तकों से क्या प्रयोजन?	मूर्खाणां पुस्तकैः किं प्रयोजनम्?

अभ्यास-प्रश्न-14

(१) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(१) ग्वाले कृष्ण के साथ खेलते हैं। (२) मैं गेंद से खेलता हूँ। (३) तुम कलम से लिखते हो। (४) पुत्र पिता को मस्तक से नमस्कार करता है। (५) राम पैर से लँगड़ा है। (६) कानों से बहरा संगीत की ध्वनि नहीं सुनता है। (७) वे डण्डे से मारते हैं। (८) भीम गदा से प्रहार करता है। (९) कर्ण के समान दानी नहीं था (१०) रोओ मत।

(२) नीचे दिये गये शब्दों में से चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

नेत्राभ्याम्, कर्णाभ्याम्, हस्तेन, कन्दुकेन, वाणेन, हलेन, विद्या, विनयेन, ज्ञानेन।

(१) अहं ..... क्रीडामि। (२) वृषभौ ..... भूमिं कर्षतः। (३) नरः ..... प्रतिष्ठां प्राप्नोति। (४) बालकः ..... पश्यति। (५) रामः ..... हन्ति। (६) कृषकः ..... ताडयति। (७) रामः ..... शृणोति। (८) अहं ..... लिखामि। (९) मनुष्यस्य शोभा ..... अस्ति।

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

नियम १–जिसको कोई वस्तु दी जाती है या जिसके लिए कोई कार्य किया जाता है, उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। सम्प्रदान का चिह्न 'को' या 'के लिए' है।

यथा–

(१) मैं तेरे लिए पुस्तक लाऊँगा।	अहं तुभ्यं पुस्तकम् आनेष्यामि।
(२) वह दरिद्रों को धन देता है।	सः दरिद्रेभ्यः धनं यच्छति।
(३) राजा भिक्षुओं को भोजन देता है।	नृपः भिक्षुकेभ्यः भोजनं ददाति।
(४) वे हमें फल देते हैं।	ते अस्मभ्यं फलानि यच्छन्ति।
(५) वे दोनों राम के लिए जल लाते हैं।	तौ रामाय जलम् आनयतः।

नियम २–'रुच्' धातु या उसके समान अर्थ वाली धातु के योग में, प्रसन्न होने में चतुर्थी विभक्ति होती है।

नियम ३–स्पृह् धातु के योग में ईप्सित पदार्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है।

नियम ४–क्रुध्, दुह्, ईर्ष्य्, असूय् धातुओं के योग में, जिसके प्रति क्रोध आदि किया जाता है, चतुर्थी विभक्ति होती है।

नियम ५–नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा तथा अलम् के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

आदर्श वाक्य

(१) मुझे लड्डू अच्छे लगते हैं।	मह्यं मोदकाः रोचन्ते।
(२) उसे पूआ अच्छा लगता है।	तस्मै अपूपः स्वदते।
(३) पिता पुत्र पर गुस्सा होता है।	जनकः पुत्राय क्रुध्यति।
(४) रावण राम से द्रोह करता है।	रावणः रामाय द्रुह्यति।
(५) दुर्जन सज्जनों से ईर्ष्या करते हैं।	दुर्जनाः सज्जनेभ्यः ईर्ष्यन्ति।
(६) गुरु को नमस्कार।	गुरुवे नमः।
(७) पुत्र का कल्याण।	पुत्राय स्वस्ति।
(८) भूतों के लिए बलि।	भूतेभ्यः बलिः।
(९) अग्नि के लिए स्वाहा।	अग्नये स्वाहा।

अभ्यास-प्रश्न-15

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

१. दुष्ट सज्जनों से ईर्ष्या करते हैं। २. तुम लड़कों से द्रोह करते हो। ३. कौरव पाण्डवों पर क्रोध करते थे। ४. इस समय छात्रों को पढ़ना अच्छा नहीं लगता। ५. सज्जनों को विवाद अच्छा नहीं लगता। ६. भगवान शिव को नमस्कार है। ७. शाम को टहलना सबको अच्छा लगता है। ८. राम ने कृष्ण को गेंद दी। ९. नौकर स्वामी के लिए फल लाया।

सहायक शब्द–सज्जनों से = सज्जनेभ्यः। द्रोह करते हो = द्रुह्यसि। पढ़ना = पठनम्, अध्ययनम्। अच्छा नहीं लगता = न रोचते। टहलना = भ्रमणम्।

अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति)

नियम १–जिससे किसी वस्तु का प्रत्यक्ष अथवा कल्पित रूप से अलग होना प्रकट होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। इसकी पहचान (चिह्न) 'से' है। जैसे–**हरि अश्वात् अपतत्**–हरि घोड़े से गिर पड़ा। इस वाक्य में 'घोड़े से' हरि अलग हो गया है। अतः अश्व में पञ्चमी विभक्ति हुई।

अन्य उदाहरण–

१. मम हस्तात् पुस्तकम् अपतत्	–	मेरे हाथ से किताब गिर गयी।
२. छात्रा: गृहात् आगच्छन्ति	–	छात्र घर से आते हैं।
३. अशोक: वृक्षात् अवतरति	–	अशोक पेड़ से उतरता है।
४. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति	–	पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
५. कूपात् जलम् आनय	–	कुएँ से पानी लाओ।

नियम २–जिससे डरा जाता है या रक्षा की जाती है, उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–**स: चौरात् विभेति–**वह चोर से डरता है। **पिता पुत्रं पापात् त्रायते–**पिता पुत्र को पाप से बचाता है।

नियम ३– जिसमें कोई वस्तु हटायी जाती है उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे– **गुरु: शिष्यं कुमार्गात् निवारयति–** गुरु शिष्य को कुमार्ग से रोकता है।

नियम ४– जिससे नियमपूर्वक पढ़ा जाता है, उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे– **अहं गुरो: व्याकरण पठामि–** मैं गुरुजी से व्याकरण पढ़ता हूँ।

नियम ५– अन्य (सिवाय) दूर, इतर (दूसरा) ऋते (बिना) दिशावाचक तथा कालवाचक शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–**ग्रामात् पूर्व नदी बहति–**गाँव से पूर्व नदी बहती है।

आदर्श वाक्य

१. जना: सिंहात् विभ्यति	–	लोग सिंह से डरते हैं।
२. त्वं चौरात् बालं रक्ष	–	तुम चोर से बालक को बचाओ।
३. कृषका: क्षेत्रात् पशून् निवारयन्ति	–	किसान खेत से पशुओं को रोकते हैं।
४. बालक: अध्यापकात् गणितं पठन्ति	–	लड़के अध्यापक से गणित पढ़ते हैं।
५. ज्ञानात् ऋते न मुक्ति:	–	ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।
६. गंगा हिमालयात् प्रभवति	–	गंगा हिमालय से निकलती है।

अभ्यास-प्रश्न-16

१. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

१. आजकल विद्यार्थी अध्यापक से नहीं डरते हैं। २. चूहे बिल्ली से डरते हैं। ३. तालाब में कमल पैदा होते हैं। ४. मैं अपने मित्र के साथ पढ़ता हूँ। ५. माली बाग से जानवरों को निकालता है। ६. चैत के पहले फाल्गुन आता है। ७. कृष्ण के सिवाय मेरी रक्षा कौन करेगा? ८. मेरे गाँव से दूर एक पहाड़ है।

सहायक शब्द– आजकल = इदानीम्। चूहे = मूषका:। पैदा होते हैं = प्रभवन्ति। आता है = आयाति। कृष्ण के सिवाय = कृष्णात् अन्य:।

२. कोष्ठांकित शब्दों में उचित विभक्ति लगाइए–

(१) यमुना (हिमालय) प्रभवति। (२) शिष्य (अध्यापक) निलीयते। (३) (फाल्गुन) अनन्तरं चैत्र: आयाति। (४) (धन) ऋते सुखं न अस्ति। (५) बालिका (सर्प) त्रसति।

सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

जब दो या अधिक शब्दों में सम्बन्ध दिखाया जाता है, उसमें षष्ठी विभक्ति होती है। विभक्ति के चिह्न 'का, के, की; रा, रे, री' है।

आदर्श वाक्य

(१) कृष्ण वसुदेव के पुत्र थे।	कृष्ण: वसुदेवस्य पुत्र: आसीत्।
(२) राम भरत के बड़े भाई थे।	राम: भरतस्य ज्येष्ठ: भ्राता आसीत्।
(३) कौशल्या दशरथ की रानी थी।	कौशल्या दशरथस्य राज्ञी आसीत्।
(४) रामू नरेश का नौकर है।	रामू नरेशस्य सेवक: अस्ति:।
(५) कुएँ का जल मीठा है।	कूपस्य जलं मधुरम् अस्ति।
(६) समुद्र का पानी खारा होता है।	समुद्रस्य जलं क्षारं भवति।
(७) यह किसान का खेत है।	एतत् कृषकस्य क्षेत्रम् अस्ति।
(८) हमारा विद्यालय नगर के मध्य है।	अस्माकं विद्यालय: नगरस्य मध्ये अस्ति।
(९) रामायण के रचयिता वाल्मीकि हैं।	रामायणस्य रचयिता वाल्मीकि: अस्ति।
(१०) गंगा का जल पवित्र होता है।	गंगाया: जलं पवित्रं भवति।

अभ्यास-प्रश्न-17

(१) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

(१) यह राम का घर है। (२) यह कृष्ण की पुस्तक है। (३) यह लाल फूलों की माला है। (४) लक्ष्मण राम के भाई थे। (५) कृष्ण सुदामा के मित्र थे। (६) गाँव के पास बगीचा है।

अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

जिस स्थान में कोई कार्य होता है, उसमें अधिकरण कारक होता है। अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। अधिकरण के चिह्न 'में, पर, पे' है।

नियम १–जिस पर स्नेह किया जाता है, जिसमें भक्ति या विश्वास किया जाता है, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है।

नियम २–जब किसी एक कार्य के हो जाने पर दूसरे कार्य का होना प्रतीत हो, तब पहले हो चुके कार्य में तथा उसके कर्त्ता में सप्तमी विभक्ति होती है।

नियम ३–जिस समय कोई काम होता है, समयवाचक शब्द सप्तमी विभक्ति में रखा जाता है।

नियम ४–जब किसी वस्तु की अपने समूह में विशेषता प्रकट की जाती है तो समूहवाचक शब्द में सप्तमी विभक्ति या षष्ठी विभक्ति होती है।

नियम ५–कुशल, निपुण, पटु आदि अर्थवाची शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है।

आदर्श वाक्य

(१) मैं आसन पर बैठा हूँ।	अहम् आसने उपविशामि।
(२) वह नगर में रहता है।	स: नगरे वसति।
(३) खेत में अन्न उत्पन्न होता है।	क्षेत्रे अन्नम् उत्पन्नं भवति।
(४) तालाब में कमल खिलते हैं।	सरोवरे कमलानि विकसन्ति।
(५) पात्र में जल है।	पात्रे जलम् अस्ति।
(६) मैं सवेरे घूमता हूँ।	अहम् प्रात:काले भ्रमणामि।
(७) वे दो बजे यहाँ आये।	ते द्विवादनसमये अत्र आगच्छन् ।
(८) माँ बालक से प्यार करती है।	माता बालके स्निह्यति।
(९) रमेश माँ के लिए अच्छा है।	रमेश: मातु: साधु:।

अभ्यास-प्रश्न-18

१. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(१) मैं विद्यालय में पढ़ता हूँ। (२) फूलों पर भौंरे गूँजते हैं। (३) वृक्षों पर पक्षी बैठे हैं। (४) सैनिक पर्वत पर खड़ा है। (५) राम के चले जाने पर भरत अयोध्या आये।

२. कोष्ठांकित शब्दों का सप्तमी विभक्ति में उचित रूप लिखो–

(१) सः (गृह) वसति। (२) (नगर) एकः विद्यालयः अस्ति। (३) मम (कक्षा) त्रिंशत् छात्राः पठन्ति। (४) पिता (पुत्र) स्निह्यति। (५) अहं (मध्याह्न) नगरं गमिष्यामि।

सम्बोधन

नियम १– जिसे पुकारा जाता है उसमें सम्बोधन होता है। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। इसका चिह्न हे, अरे, ए, आदि हैं। ये चिह्न शब्द से पहले लगते हैं। **जैसे–** हे राम! भो बालक!– हे राम अरे लड़के, आदि।

नियम २– संस्कृत में सम्बोधन के एकवचन का रूप बदलता है, शेष में कर्त्ता कारक के समान होता है।

विशेष– सर्वनाम शब्दों में सम्बोधन नहीं होता है।

आदर्श वाक्य

१. भो पुत्र ! त्वं कुत्र गच्छसि– अरे बेटा! तुम कहाँ जा रहे हो?

२. बालकाः प्रतिदिनं प्रातः उद्यानं भ्रमत– लड़कों प्रतिदिन सबेरे बगीचे में भ्रमण करो।

अभ्यास-प्रश्न-19

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

१. छात्रों! परिश्रम से पढ़ो। २. गुरुदेव! चित्र में क्या है? ३. हे राम ! मेरी रक्षा करो। ४. महर्षि ! आप सब कुछ जानते हैं। ५. विद्यार्थियों! अपने आसन पर बैठ जाओ।

अनुवाद-अभ्यास

हिन्दी अनुच्छेद का संस्कृत में अनुवाद

१– महाराज दशरथ अयोध्या के राजा थे। दशरथ की तीन रानियाँ– कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा थीं। जब तीनों रानियों से कोई सन्तान उत्पन्न नहीं हुई तो महाराज दशरथ ने ऋषियों को बुलाकर पुत्रेष्टि यज्ञ कराया। इसके बाद कौशल्या ने राम को जन्म दिया। कैकेयी ने भरत को उत्पन्न किया। सुमित्रा के गर्भ से लक्ष्मण और शत्रुघ्न ने जन्म लिया।

संस्कृतानुवादः– महाराजः दशरथः अयोध्यायाः नृपः आसीत्। दशरथस्य तिस्रः राज्ञयः– कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा च आसन्। यदा तिसृभ्यः राज्ञीभ्यः कोऽपि सन्ततिः उत्पन्नः न अभवत्, तदा महाराजेन दशरथेन ऋषीन् आहूय पुत्रेष्टिः यज्ञः कारितः। एतदन्तरम् कौसल्या रामं जन्म दत्तवती। कैकेयी भरतम् उदपादयत। सुमित्रायाः गर्भात् लक्ष्मणः शत्रुघ्नश्च जन्म अलभताम्।

२– प्रयाग तीर्थों का राजा है। यहाँ त्रिवेणी बहती है। इसका महत्त्व अति प्राचीन है। कुलपति भारद्वाज का आश्रम यहीं है। अशोक का प्रसिद्ध दुर्ग, यमुना के तट पर स्थित है। प्रयाग के प्रभाव का कोई वर्णन नहीं कर सकता है।

संस्कृतानुवादः– प्रयागः तीर्थानां राजा अस्ति। अत्र त्रिवेणी प्रवहति। अस्य महत्त्वं अति प्राचीनमस्ति। कुलपति भारद्वाजस्य आश्रमं अत्रैवस्ति। अशोकस्य प्रसिद्ध दुर्गः यमुनायाः तटे स्थितः अस्ति। प्रयागस्य महत्त्वं कोऽपि वर्णितुं न शक्नोति।

३– इस समय हमारा देश स्वतंत्र है। भारतवर्ष ने १५ अगस्त सन् १९४७ को स्वतन्त्रता प्राप्त की। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू थे। २६ जनवरी सन् १९५० को भारत गणतन्त्र देश घोषित किया गया। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद थे। भारत विश्व का सबसे बड़ा जनतान्त्रिक देश है। इस समय भारत के प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह हैं। इस समय भारत के राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी हैं।

संस्कृतानुवादः– अस्मिन् समये अस्माकं देशः स्वतंत्रः अस्ति। भारतवर्षः सप्तचत्वारिंशदुत्तरैकोनविंशतिमस्य अगस्त्य मासस्य पञ्चदशम्यां तिथौ स्वतन्त्रतां प्राप्तवान्। भारतस्य प्रथमः प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू महोदयः आसीत्। पञ्चाशदुत्तरैकोनविंशतिमस्य वर्षस्य जनवरी मासस्य षड्विंशे दिनाङ्के भारतः गणतन्त्र देशः घोषितः कृतः। भारतस्य प्रथमः राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसादः आसीत्। भारतः विश्वस्य सर्वेभ्यः विशालः प्रजातान्त्रिकः देशः वर्तते। अस्मिन् समये भारतस्य प्रधानमन्त्री डॉ० मनमोहन सिंह महोदयः अस्ति। अस्मिन समये भारतस्य राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी महोदयः अस्ति।

४– संस्कृत भाषा भारत की अमूल्य निधि है। हमारे देश के जीवन पर उसका गहरा प्रभाव हैं। भारतीय संस्कृति उससे पूर्णतया अनुप्राणित है। ऐसी देशप्राण भाषा को मृत कहना उसके प्रति अन्याय करना हैं। देववाणी पद से विभूषित होकर वह आज भी भारतीय जनता के हृदय में श्रद्धा का संचार करती है।

संस्कृतानुवादः– संस्कृत भाषा भारतस्य अमूल्या निधि वर्तते। अस्माकं देशस्य जीवने तस्या गम्भीरः प्रभावः अस्ति। भारतीया संस्कृतिः तया पूर्णतः अनुप्राणिता अस्ति। ईदृशी देशप्राण भाषां मृत कथनम् तां प्रति अन्याय करणम् अस्ति। देववाणी पदेन विभूषिता सा अद्यापि भारतीया जनानां हृदयेषु श्रद्धायाः संचारं करोति।

५– महाकवि भास संस्कृत नाट्य साहित्य में अपना अन्यतम स्थान रखते हैं। स्वयं महाकवि कालिदास ने उनकी प्रशंसा की है। उनके द्वारा लिखित नाटकों की संख्या तेरह है। महाकवि भास की भाषा प्रभावोत्पादक एवं सुभाषितपूर्ण है। वे संस्कृत नाटक लेखकों के प्रकाशस्तम्भ हैं।

संस्कृतानुवादः– महाकविः भाषः संस्कृतनाट्यसाहित्ये अद्वितीयः। महाकवि कालिदासेन सः प्रशंसितः। सः त्रयोदशनाटकानि विरचितानि। महाकवि भासस्य भाषा प्रभावोत्पादक सुभाषिता बहुला चास्ति। सः संस्कृत नाटक लेखकानां प्रकाशस्तम्भः अस्ति।

६– महाकवि भवभूति ने संस्कृत के तीन नाटक लिखे हैं। उनमें 'उत्तररामचरित' अतिश्लाघनीय है। यह नाटक करुण रस प्रधान है। ऐसा कवियों एवं आलोचकों का कथन है कि भवभूति के करुण रस के वर्णन में वज्र-सा हृदय भी रो देता है। यह कवि करुण रस के वर्णन में महाकवि कालिदास से भी आगे हैं।

संस्कृतानुवादः– महाकवि भवभूतिः संस्कृत भाषायां त्रीणि नाटकानि विरचितानि। तेषु 'उत्तररामचरितं' प्रशंसनीयः अस्ति। इदं नाटकम् करुणरस प्रधानमस्ति। कवयः आलोचकश्च कथयन्ति यत् भवभूतेः करुण रसस्य वर्णने वज्रोपम हृदयः अपि रोदिति। अयं कविः करुणरसस्य वर्णने महाकवि कालिदासाद् अग्रगण्यः।

७– कालिदास संस्कृत के महान् कवि थे। उनकी काव्यकला अनुपम है। उनकी नाट्यकला भी वैसी ही उत्कृष्ट है। अभिज्ञानशाकुन्तल कालिदास का सर्वस्व है। शकुन्तला प्रकृतिकन्या है।

संस्कृतानुवादः– कालिदासः संस्कृतसाहित्यस्य महान् कविः अस्ति। तस्य काव्यकला अपि निरुपमा अस्ति। तस्य नाट्यकला अपि तथैव उत्कृष्टा अस्ति। अभिज्ञानशाकुन्तल कालिदासस्य सर्वस्वं अस्ति। शकुन्तला प्रकृति-कन्या अस्ति।

८– तुलसीदास हिन्दी साहित्य के महान् कवि हैं। रामचरितमानस उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसमें राम के उत्तम चरित्र का वर्णन मिलता है। यह चरित्र हमारे लिए आदर्श है। इसके अनुशीलन से हमारा जीवन सुखी होगा।

संस्कृतानुवादः– तुलसीदासः हिन्दी साहित्यस्य महाकविः अस्ति। रामचरितमानस तस्य श्रेष्ठतमा कृतिः। श्रीरामस्य उत्तम चरित्रस्य वर्णनम् अत्र प्राप्यते। अयं चरित्रः अस्माकं कृते आदर्शः अस्ति। अस्य अनुशीलनेन अस्माकं जीवनं सुखमयं भविष्यति।

९– दशरथ अयोध्या के राजा थे। उनके चार पुत्र थे। चारों पुत्रों में राम सबसे बड़े थे। राम पिता की आज्ञा से सीता और लक्ष्मण के साथ वन गये। वहाँ रावण ने सीता का हरण कर लिया।

संस्कृतानुवादः– दशरथः अयोध्यायाः अधिपतिः आसीत्। तस्य चत्वारः पुत्राः आसन्। चतुः पुत्रेषु रामः सर्वेषु ज्येष्ठः आसीत्। रामः पित्रोः आज्ञया सीता-लक्ष्मणेन सह वनं अगच्छत्। तत्र रावणः सीतायाः हरणम् अकरोत्।

१०– (क) हम सब पढ़ते थे।

(ख) श्रम के बिना विद्या नहीं होती।

(ग) वह पाप से घृणा करता है।

(घ) मनुष्य को धर्म का आचरण करना चाहिए।

(ङ) विद्यालय के पास उद्यान है।

संस्कृतानुवादः– (क) वयम् अपठाम।

(ख) श्रमेण बिना विद्या न भवति।

(ग) सः पापेन घृणां करोति।

(घ) मनुष्यं धर्मस्य आचरणं कुर्यात्।

(ङ) विद्यालयस्य समीपे उद्यानः अस्ति।

● विद्यार्थी गत परीक्षाओं में आये निम्न हिन्दी-अनुच्छेदों का संस्कृत में अनुवाद स्वयं कर अभ्यास करें।

(११) अयोध्या एक सुन्दर नगरी थी। दशरथ अयोध्या के राजा थे, जिनके चार पुत्र थे। राम सभी पुत्रों में ज्येष्ठ थे। राम की माता कौशल्या थी। राम सीता और लक्ष्मण के साथ वन गये।

(१२) संस्कृत भाषा एक प्राचीन भाषा है। भारत के प्रमुख ग्रन्थ संस्कृत में हैं। यह एक वैज्ञानिक भाषा है। इसका व्याकरण बहुत समृद्ध है। भास, कालिदास, बाण आदि कवियों ने इस भाषा को समृद्ध बनाया है।

(१३) इस समय हमारा देश स्वतन्त्र है। भारतवर्ष ने १५ अगस्त सन् १९४७ को स्वतन्त्रता प्राप्त की। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू जी थे। भारत विश्व का सबसे बड़ा जनतान्त्रिक देश है। इस समय भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह हैं।

(१४) परिश्रम एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य महान् कार्य कर सकता है। कठिनाइयाँ सहन कर सकता है। मनुष्य को संघर्ष करके अपने जीवन को ऊँचा उठाना चाहिए। परिश्रम द्वारा मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

(१५) शूद्रक नाम के एक राजा थे। एक दिन दरबार में आकर एक चाण्डाल कन्या ने राजा को एक तोता भेंट किया। राजा उसे दुलार करने लगा। वह भी अपनी भाषा में बोलने लगा। वह कह रहा था कि मैं अपने पूर्वजन्मों में पुण्डरीक और वैशम्पायन था। महाश्वेता ने मेरे प्रेम-प्रस्ताव से रुष्ट होकर शाप दिया था।

(१६) भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ अधिकतर लोग खेती करते हैं। जो खेती करता है, वह किसान कहलाता है। भारतीय किसान गाँव में रहते हैं। किसान की दिनचर्या ही उसके जीवन का दर्पण है।

(१७) मेरा घर गाँव में है। गाँव के पास ही हमारा बगीचा है। इस बगीचे में अनेक प्रकार के वृक्ष हैं। उनमें अनेक प्रकार के पुष्पों के वृक्ष भी हैं। इस वाटिका में सुन्दर पुष्प तथा मधुर फल हैं। मैं प्रतिदिन छोटे भाई के साथ वहाँ जाकर परिश्रम करता हूँ।

(१८) कृष्ण का जन्म कंस के कारागार में हुआ। कंस मथुरा का राजा था। उसने अपने चाचा उग्रसेन को बंदीगृह में डालकर राज्य पर अधिकार कर लिया था। कृष्ण की माता देवकी कंस की बहन थी। देवकी का विवाह वसुदेव के साथ हुआ।

(१९) महर्षि वाल्मीकि एक महान् ऋषि थे। उन्होंने रामायण नामक महाकाव्य लिखा था। राम ने सीता का परित्याग कर दिया था। सीता उन्हीं के आश्रम में रहीं। वहीं पर लव और कुश का जन्म हुआ।

(२०) हमारा देश भारत कृषि प्रधान है। यहाँ अधिकतर प्रजा गाँवों में रहती है। गाँवों में रहकर कृषि कार्य करती है। कृषि कार्य करने वाले को कृषक कहते हैं। कृषक बैलों के द्वारा हल से खेत जोतते हैं। अन्न उत्पन्न कर कृषक हमारी सेवा करते हैं। भारतीय कृषक आज भी बहुत परिश्रम करता है।

(२१) बालकों का स्वभाव सरल होता है। वे क्रोध और प्रसन्नता को प्रकट कर देते हैं। बालकों को खेलना अच्छा लगता है। उन्हें खेलने का अवसर देना चाहिए। ये बालक देश के भावी कर्णधार हैं।

(२२) सज्जनों की रुचि परोपकार में होती है। वे कभी अपकार नहीं करते। दुर्जन अपकार ही करता है। इस प्रकार सज्जन और दुर्जन का स्वभाव परस्पर विपरीत होता है। इसलिए दुर्जनों से दूर रहो।

(२३) गंगा एक पवित्र नदी है। उसमें निर्मल पानी बहता है। प्रतिवर्ष बहुत से लोग गंगा में स्नान करते हैं। गंगा का पानी रोग को नष्ट करने वाला है। इसलिए गंगा सबके लिए आराध्य हैं।

(२४) एक दिन मैं जंगल में गया। वहाँ वृक्षों पर पक्षी कूजन करते थे। एक नील गाय को दौड़ते हुए देखा। वह अत्यन्त सुन्दर पशु है। उसी समय एक पका आम मेरे सामने गिरा। मैंने उसे उठा लिया।

(२५) (i) उग्रसेन मथुरा के शासक थे। (ii) वामन बलि से पृथ्वी माँगता है। (iii) रमेश मित्र के साथ बाजार जाता है। (iv) महेश चटाई पर बैठा है।

(२६) (i) श्रम के बिना विद्या नहीं आती। (ii) वह पाप से घृणा करता है। (iii) तुलसीदास हिन्दी साहित्य के महान कवि हैं। (iv) वह आँख से अन्धा है। (v) संस्कृत भाषा भारत की अमूल्य निधि है।

(२७) राम दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनका विवाह सीता के साथ हुआ। सीता राजा जनक की पुत्री थी। राम ने चौदह वर्ष तक वनवास किया। राम का आचरण सबके लिए अनुकरणीय है। इसलिए वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।

(२८) आज आतंकवाद सर्वत्र व्याप्त है। हमारा देश भी प्रभावित है। सेना के साथ हमें सहयोग करना चाहिए। सबके समर्थन से समस्या का समाधान होगा। शासन की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

(२९) कन्यापिता असहाय है। उसका सम्बन्धी अधिक धन चाहता है। वर ने हस्तक्षेप किया। उसने कन्या का पाणिग्रहण किया। सबके म्लान मुख प्रफुल्लित हो गये।

(३०) मान्धाता बलशाली राजा थे। वह चावलों से भात पकाता है। हम सब नेत्रों से देखते हैं। वह हमें फल देवें। अग्नि के लिए स्वाहा।

(३१) भारतवर्ष में बहुत से तीर्थ हैं। तीर्थों का राजा प्रयागराज उत्तर प्रदेश के प्रयाग नगर में स्थित है। प्रयाग नगर में गङ्गा, यमुना और सरस्वती तीनों नदियाँ मिलती हैं। इन नदियों के पवित्र संगम पर असंख्य लोग प्रतिवर्ष स्नान करते हैं और पुण्य अर्जित करते हैं। प्रयागराज का महत्त्व अत्यन्त प्राचीन काल से है।

(३२) छात्र अध्यापक के साथ विद्यालय जाता है। राम जल से खेत सींचता है। हम सब मन्दिर चलें। जल आकाश से धरती पर गिरता है। प्रात: स्नान करना चाहिए।

(३३) हमारा देश स्वतन्त्र है। अब हम सुख से अपना काम करेंगे। कोई भी जीव पराधीनता नहीं चाहता। मनुष्य तो गुलाम नहीं हो सकता है। वह स्वतन्त्र पैदा होता है और स्वतन्त्र मरता है।

(३४) रावण लंका का राजा था। राम ने बाण से रावण को मारा। रावण को मारकर राम लक्ष्मण के साथ आये। अयोध्या में हर नागरिक खुश हो गया। धर्म हमेशा विजयी होता है।

●●●

6 अव्यय एवं उपसर्ग

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्नव्येति तदव्ययम्।।

जिन शब्दों पर लिङ्ग, वचन, कारक आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, उन्हें अव्यय कहते हैं। अव्यय शब्द ज्यों-के-त्यों प्रयोग किये जाते हैं, उनमें कोई विभक्ति नहीं लगती।

अव्यय चार प्रकार के हैं–(१) उपसर्ग, (२) क्रिया विशेषण, (३) समुच्चय-बोधक, (४) मनोविकार-सूचक (विस्मय-बोधक)।

१. उपसर्ग

उपसर्ग को 'गति' भी कहते हैं। संज्ञा, विशेषण और क्रिया पदों के पहले जुड़कर उनके अर्थ में कहीं कुछ परिवर्तन कर देना ही उपसर्ग का विशेष प्रयोजन है। सामान्यत: जो शब्द किसी अन्य शब्द के पहले जुड़कर उसमें विशेषता उत्पन्न कर दें अथवा उसके अर्थ को बदल दें, उन्हें उपसर्ग कहते हैं, **जैसे–**

१. भवति = होता है।
अनु + भवति = अनुभव करता है।
प्र + भवति = प्रभवति = निकलता है।

२. गच्छति = जाता है।
आ + गच्छति = आता है।
उप + गच्छति = पास पहुँचा है।

३. हरति = चुराता है।
आ + हरति = आहरति = लाता है।
वि + हरति = विहरति = विहार करता है।
प्र + हरति = प्रहरति = प्रहार करता है।

४. वदति = कहता है।
अनु + वदति = अनुवाद करता है।
सं + वदति = बात करता है।
प्रति + वदति = उत्तर देता है।

५. चरति = चरता है, विचरण करता है।
उप + चरति = उपचार अर्थात् इलाज करता है।
उत् + चरति = उच्चरति = उच्चारण करता है।
अनु + चरति = अनुचरति = अनुगमन करता है।

उपसर्ग निम्नलिखित हैं–

	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
१.	**प्र**	विशेष रूप से	प्रचारः, प्रसारः, प्रख्यातम्, प्रहारः।
२.	**परा**	पीछे, विपरीत	पराक्रमः, परामर्शः, पराजयः, पराकाष्ठा।
३.	**अप**	दूर, विरोध	अपकारः, अपयशः, अपशब्दः, अपकर्षः।
४.	**सम्**	साथ, विशेष रूप से	संकल्पः, संसर्गः, सम्मोह, संग्रह।
५.	**अनु**	पीछे, साथ-साथ	अनुजः, अनुचरः, अनुभवः, अनुनय।
६.	**अव**	दूर, अनादर	अवगुणः, अवनति, अवलोकनम्, अवतारः।
७.	**निस्**	वियोग, बाहर, बिना	निस्सारः, निश्शंकः, निस्तत्वम्, निश्चितः।
८.	**दुस्**	बुरा, हीन, कठिन	दुस्तरः, दुष्करः, दुस्साहस।
९.	**वि**	विशेषता, अलग	विवादः, विरोधः, विदेशः, विज्ञानम्।
१०.	**आङ्(आ)**	स्वीकृति, दुःख, निकट	आरम्भः, आचारः, आग्रहः, आगमनम्।
११.	**नि**	नीचापन, समूह, निषेध	निवारणम्, निषेधः, नियुक्तः, निबन्धः।
१२.	**अधि**	ऊपर, विषय में, प्रधान	अधिकृतः, अधिभारः, अध्यक्षः, अध्यात्म।
१३.	**अति**	अधिक, बाहर	अतिशयः, अत्युत्तम्, अत्यन्तम्, अतिरिक्तम्।
१४.	**सु**	अच्छा, अत्यधिक	स्वागतम्, सुवेषः, सुस्वरः, सूक्तिः।
१५.	**उत्**	ऊपर, श्रेष्ठ	उत्पतिः, उन्नतिः, उत्तमः, उत्तरम्।
१६.	**अभि**	ओर, ऊपर	अभिमुखम्, अभियानम्, अभ्यागतः।
१७.	**प्रति**	ओर, पीछे, विरोध	प्रतिकूलम्, प्रत्युत्तरम्, प्रतिष्ठा, प्रतिध्वनिः।
१८.	**परि**	चारों ओर, और भी	परिचयः, परिजनः, परिवादः, परिश्रमः।
१९.	**उप**	निकट, शक्ति, दोष	उपदेशः, उपकारः, उपाधिः, उपदेयता।
२०.	**अपि**	निकट	अपिधान, अपिगीर्ण, अपिधि।
२१.	**निर्**	निषेध, रहित, बाहर	निरपराध, निर्गच्छति, निरक्षर।
२२.	**दुर्**	बुरा	दुराचारः, दुराग्रह, दुर्गति।

२. क्रिया-विशेषण

क्रिया-विशेषण अपने नाम के अनुसार किसी क्रियापद की विशेषता प्रकट करते हैं। इनसे साधारणतः ज्ञात होता है कि (१) क्रिया कैसे हुई? (२) कब हुई? (३) कहाँ हुई? और (४) क्यों हुई? कुछ महत्त्वपूर्ण क्रिया-विशेषण अर्थ के साथ नीचे दिये गये हैं–

क्रिया-विशेषण	अर्थ
अद्य	आज
अतः	इसलिए
अत्र	यहाँ
अजस्र	लगातार

सर्वत्र	सब जगह
अध:	नीचे
अधुना	अब
अभित:	सब ओर
इत:	यहाँ से
ओम्	ऐसा ही हो, हाँ
इतरेद्यु:	दूसरे दिन
किल	अवश्य ही

३. समुच्चय-बोधक

वाक्यों या पदों को जोड़ने, पृथक्करण आदि के लिए जिन पदों का प्रयोग होता है, उन्हें समुच्चय-बोधक कहते हैं।

प्रयोजन की दृष्टि से इसे दो भागों में बाँट सकते हैं–

(क) संयोजनात्मक–च = और; अथच = तब; इति = इस प्रकार; तथापि = फिर भी।

(ख) पृथक्करणात्मक–तु = तो; वा, अथवा = या।

४. मनोविकार-सूचक

मानसिक प्रतीतियों के प्रगाढ़ आवेश को कभी-कभी केवल एक शब्द से प्रकट करने के लिए जिन अव्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें मनोविकार-सूचक अथवा विस्मय-बोधक कहते हैं। साधारणत: प्रयुक्त होने वाले ऐसे अव्यय नीचे दिये गये हैं–

(क) आश्चर्य और शोक सूचक–अहा, अहो, हा, अहह।

(ख) आनन्द तथा करुणासूचक–हन्त।

(ग) घृणा सूचक–किम्, धिक्।

(घ) दु:ख सूचक–हा, हन्त।

(ङ) कुछ विस्मय-बोधक पद पुकारने के लिए प्रयुक्त होते हैं–**यथा–**अये, अहो, रे, अरे। देवताओं के सम्बोधन के लिए–स्वाहा, स्वधा।

अभ्यास-प्रश्न

१. अव्यय किसे कहते हैं?

२. उपसर्ग क्या है?

३. उपसर्ग कहाँ लगते हैं?

(क) धातुओं के बाद (ख) धातुओं के पूर्व

(ग) धातुओं के मध्य (घ) धातु और प्रत्यय के मध्य।

४. 'अनुभवति' पद में लगा हुआ उपसर्ग है–

(क) अनु (ख) अन् (ग) अ (घ) आप्

५. 'आगच्छति' पद में लगा हुआ उपसर्ग है–

(क) आग (ख) आ (ग) अ (घ) अप्

६. धातुओं से पूर्व उपसर्ग लगाने से धातुओं के अर्थ पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(क) अर्थ बदल जाता है (ख) अर्थ ज्यों का त्यों रहता है।

(ग) अर्थ कम होता है (घ) अर्थ बढ़ता है।

७. निम्नलिखित में उपसर्ग लिखिए–

विचरित, अपवदति, प्रयाग, निर्णयति, आचरति, प्रहरति, अनुगच्छति, प्रभवति।

८. उपसर्ग होते हैं–

(क) ३० (ख) २२ (ग) २४ (घ) १८

●●●

7 शब्द-रूप
(संज्ञा, सर्वनाम तथा संख्यावाचक शब्दों के तीनों लिंगों के रूप)

संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से शब्द दो प्रकार के माने जाते हैं— (१) अजन्त, (२) हलन्त।

जो शब्द अपने अन्त में स्वर रखते हैं, उन्हें अजन्त या स्वरान्त कहते हैं। **जैसे–** राम, कृष्ण, हरि, लता आदि।

जिन शब्दों के अन्त में व्यंजन होता है, उन्हें हलन्त या व्यंजनान्त कहते हैं। **जैसे–** दिश्, वाक्, सरित् आदि।

इन दोनों प्रकार के शब्दों में तीनों लिङ्ग के शब्द होते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण शब्दों को निम्नलिखित भागों में विभक्त किया जाता है–

(१) अजन्त पुंलिङ्ग, (२) हलन्त पुंलिङ्ग, (३) अजन्त स्त्रीलिङ्ग, (४) हलन्त स्त्रीलिङ्ग, (५) अजन्त नपुंसकलिङ्ग, (६) हलन्त नपुंसकलिङ्ग।

रूपों को स्मरण करने का सरल तरीका यह है कि पहले किसी एक शब्द को अच्छी तरह समझकर याद करना चाहिए। फिर नवीन शब्दों को बनाने के लिए यह देखना चाहिए कि शब्द का लिङ्ग क्या है और उसके अन्त में कौन-सा स्वर या व्यंजन है। फिर उसी लिङ्ग के उसी स्वर या व्यंजन को अन्त में रखने वाले शब्द के अनुसार उसका रूप बना लेना चाहिए। **जैसे–** बालक शब्द का तृतीया के 'एकवचन' का रूप ज्ञात करना है, तो 'बालक' शब्द पुंलिङ्ग है और उसके अन्त में अ है, अत: पुंलिङ्ग में 'अ' अन्त में रखनेवाले 'राम' का तृतीया एकवचन का रूप 'रामेण' को ध्यान में रखकर हमें बालक का 'बालकेन' रूप ज्ञात कर लेना चाहिए।

(अ) पुंलिङ्ग
राम (अकारान्त)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राम:	रामौ	रामा:
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामै:
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्य:
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्य:
षष्ठी	रामस्य	रामयो:	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयो:	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामा:!

नोट–बालक, छात्र, नृप, नर, पुत्र, मूषक, मातुल, गज, सर्प, कूप, तड़ाग, वृक्ष, चन्द्र, अश्व, वानर, सुर, देव, इन्द्र, गणेश, मयूर, सिंह, नाग, जन, जनक, खग, सुत, कर (हाथ), पाद (पैर) आदि शब्दों के रूप राम के समान ही होते हैं।

हरि (इकारान्त)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरयः

नोट–कपि, मुनि, कवि, यति, ऋषि, निधि, रवि, अग्नि, मणि, जलधि, पयोधि, अरि, व्याधि, उदधि, गिरि आदि रूप हरि के समान ही होते हैं।

गुरु (उकारान्त)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरो!	हे गुरू!	हे गुरवः!

नोट– रिपु, वायु, शिशु, भानु, राहु, विष्णु, विधु, साधु, ऋतु, शम्भु, जन्तु, तरु, बाहु, इन्दु, परशु आदि के रूप गुरु की तरह होते हैं।

रमा (लक्ष्मी) आकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः।

नोट– लता, माया, सीता, विद्या, शोभा, बालिका, माला, दया, कान्ता, कन्या, गंगा, बाला, राधा, चिन्ता, आज्ञा, कमला, छात्रा, शिवा, कोकिला, धरा, सुषमा, संध्या आदि के रूप रमा की तरह ही होते हैं।

मति (बुद्धि) इकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मतये, मत्यै	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते!	हे मती!	हे मतयः।

नोट– बुद्धि, यति, श्रुति, रात्रि, सम्पत्ति, विपत्ति, कान्ति, मुक्ति, उक्ति, भक्ति, आदि के रूप मति की तरह ही होते हैं।

वाच् (वाणी) चकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक् वाग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्!	हे वाचौ!	हे वाचः।

नोट–ऋच्, त्वच्, रुच् (कान्ति), शुच् (शोक) आदि के रूप इसी तरह होते हैं।

(स) नपुंसकलिङ्ग

सर्व (सब)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

तद् (वह)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन्	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

अस्मद् (मैं, हम)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः, नौ	अस्मासु

युष्मद् (तू, तुम)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाय्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः, वाम्	युष्मासु

संस्कृत के एक से १०० तक संख्यावाचक शब्द

१. एक (एकः, एका, एकम्)	८. अष्टन्	१५. पञ्चदशन्
२. द्वि (द्वौ, द्वे, द्वे)	९. नवन्	१६. षोडशन्
३. त्रि (त्रयः, त्रिस्रः, त्रीणि)	१०. दशन्	१७. सप्तदशन्
४. चतुर् (चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि)	११. एकादशन्	१८. अष्टदशन्
५. पञ्चन्	१२. द्वादशन्	१९. नवदशन्
६. षट्	१३. त्रयोदशन्	(एकोनविंशति, ऊनविंशति,
७. सप्तन्	१४. चतुर्दशन्	एकान्नविंशति)

२०. विंशति
२१. एकविंशति
२२. द्वाविंशति
२३. त्रयोविंशति
२४. चतुर्विंशति
२५. पञ्चविंशति
२६. षड्विंशति
२७. सप्तविंशति
२८. अष्टाविंशति
२९. नवविंशति (एकोनत्रिंशत्, ऊनत्रिंशत्, एकान्नत्रिंशत्)
३०. त्रिंशत्
३१. एकत्रिंशत्
३२. द्वात्रिंशत्
३३. त्रयस्त्रिंशत्
३४. चतुस्त्रिंशत्
३५. पञ्चत्रिंशत्
३६. षट्त्रिंशत्
३७. सप्तत्रिंशत्
३८. अष्टात्रिंशत्
३९. नवत्रिंशत्
४०. चत्वारिंशत्
४१. एकचत्वारिंशत्
४२. द्विचत्वारिंशत्
४३. त्रिचत्वारिंशत् (द्वाचत्वारिंशत्)
४४. चतुश्चत्वारिंशत्
४५. पञ्चचत्वारिंशत्
४६. षट्चत्वारिंशत्
४७. सप्तचत्वारिंशत्
४८. अष्टचत्वारिंशत्
४९. नवचत्वारिंशत् (ऊनपञ्चाशत्, एकोनपञ्चाशत्)
५०. पञ्चाशत्
५१. एकपञ्चाशत्
५२. द्विपञ्चाशत् (द्वापञ्चाशत्)
५३. त्रिपञ्चाशत् (त्रय:पञ्चाशत्)
५४. चतु:पञ्चाशत्
५५. पञ्चपञ्चाशत्
५६. षट्पञ्चाशत्
५७. सप्तपञ्चाशत्
५८. अष्टापञ्चाशत् (अष्टपञ्चाशत्)
५९. नवपञ्चाशत् (ऊनषष्टि, एकोनषष्टि, एकान्नषष्टि)
६०. षष्टि
६१. एकषष्टि
६२. द्विषष्टि (द्वाषष्टि)
६३. त्रिषष्टि (त्रय:षष्टि)
६४. चतुष्षष्टि
६५. पञ्चषष्टि
६६. षट्षष्टि
६७. सप्तषष्टि
६८. अष्टषष्टि (अष्टाषष्टि)
६९. नवषष्टि (ऊनसप्तति, एकोनसप्तति, एकान्नसप्तति)
७०. सप्तति
७१. एकसप्तति
७२. द्विसप्तति (द्वासप्तति)
७३. त्रिसप्तति (त्रयस्सप्तति)
७४. चतुस्सप्तति
७५. पञ्चसप्तति
७६. षट्सप्तति
७७. सप्तसप्तति
७८. अष्टसप्तति (अष्टासप्तति)
७९. नवसप्तति (ऊनाशीति, एकोनाशीति, एकान्नाशीति)
८०. अशीति
८१. एकाशीति
८२. द्वयशीति
८३. त्र्यशीति
८४. चतुरशीति
८५. पञ्चाशीति
८६. षडशीति
८७. सप्ताशीति
८८. अष्टाशीति
८९. नवाशीति (ऊननवति, एकोननवति, एकान्ननवति)
९०. नवति
९१. एकनवति
९२. द्विनवति (द्वानवति)
९३. त्रिनवति (त्रयोनवति)
९४. चतुर्नवति
९५. पञ्चनवति
९६. षण्णवति
९७. सप्तनवति
९८. अष्टनवति (अष्टानवति)
९९. नवनवति (एकोनशत)
१००. शत।

सौ से अधिक कोटि (करोड़) तक संख्यावाची शब्द

१००	—	शत (सौ)	१,००,०००	—	लक्ष (लाख)
१,०००	—	सहस्र (हजार)	१०,००,०००	—	प्रयुत (दस लाख)
१०,०००	—	अयुत (दस हजार)	१,००,००,०००	—	कोटि (करोड़)

अभ्यास-प्रश्न

(क) १. निम्नलिखित में से किसी एक का रूप लिखिए–

(अ) 'राम' शब्द का तृतीया विभक्ति का एकवचन, बहुवचन तथा सप्तमी विभक्ति का एकवचन, द्विवचन।

(आ) 'मति' शब्द का चतुर्थी विभक्ति का द्विवचन, बहुवचन तथा षष्ठी विभक्ति का एकवचन, बहुवचन।

(इ) 'वाच' शब्द का द्वितीया विभक्ति का द्विवचन, बहुवचन तथा पञ्चमी विभक्ति का एकवचन, द्विवचन।

२. निम्नलिखित में से किसी एक का शब्द-रूप लिखिए–

(अ) सर्व (पुं०) शब्द के तृतीया विभक्ति के सभी वचनों में।

(आ) मति शब्द के पञ्चमी एकवचन तथा द्वितीया बहुवचन में।

(इ) गुरु शब्द के चतुर्थी एकवचन में।

३. निम्नलिखित में से किसी एक का रूप लिखिए–

(अ) गुरु शब्द के चतुर्थी विभक्ति के सभी वचनों का रूप।

(आ) रमा शब्द के द्वितीया विभक्ति एकवचन व सप्तमी द्विवचन के रूप।

(इ) युष्मत् शब्द के तृतीया विभक्ति के तीनों वचनों व षष्ठी एकवचन का रूप।

४. निम्नलिखित शब्दों के पञ्चमी विभक्ति के तीनों वचन में रूप लिखिए–

रमा, वाच, इदम्, युष्मद्, हरि, गुरु।

५. निम्नलिखित में से किसी एक का शब्द-रूप लिखिए–

(अ) 'रमा' शब्द के पञ्चमी और षष्ठी विभक्तियों के तीनों वचनों में।

(आ) 'युष्मद्' शब्द के द्वितीया द्विवचन तथा चतुर्थी बहुवचन में।

६. निम्नलिखित में से किसी एक का रूप लिखिए–

(अ) तद् (पुंलिङ्ग) का तृतीया एवं चतुर्थी विभक्ति के एकवचन तथा बहुवचन में।

(आ) 'मति' का द्वितीया विभक्ति के सभी वचनों तथा तृतीया विभक्ति के एकवचन में।

(इ) गुरु (पुं०) का चतुर्थी के एकवचन तथा पञ्चमी विभक्ति के सभी वचनों में।

७. निम्नलिखित में से किसी एक का रूप लिखिए–

(अ) 'राम' के तृतीया विभक्ति तथा पञ्चमी विभक्ति के द्विवचन व बहुवचन।

(आ) 'रमा' के चतुर्थी विभक्ति तथा षष्ठी विभक्ति के एकवचन व द्विवचन।

(इ) 'वाच्' शब्द का द्वितीया तथा सप्तमी के द्विवचन व बहुवचन।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए–

१. 'मत्याः' रूप किस विभक्ति व वचन का है?

(अ) तृतीया विभक्ति बहुवचन **(ब)** पञ्चमी विभक्ति एकवचन

(स) सप्तमी विभक्ति बहुवचन **(द)** द्वितीया विभक्ति द्विवचन।

२. 'रमायै' रूप है नदी शब्द का–

(अ) तृतीया एकवचन **(ब)** द्वितीया एकवचन

(स) चतुर्थी एकवचन **(द)** षष्ठी एकवचन

३. 'सर्वस्य' रूप किस विभक्ति व वचन का रूप है?

(अ) द्वितीया विभक्ति बहुवचन **(ब)** षष्ठी, सप्तमी के द्विवचन

(स) पञ्चमी एकवचन **(द)** प्रथमा द्विवचन

४. गुरवे किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?

(अ) द्वितीया विभक्ति एकवचन **(ब)** चतुर्थी विभक्ति एकवचन

(स) षष्ठी विभक्ति एकवचन **(द)** सप्तमी विभक्ति एकवचन

५. तत् सर्वनाम तस्मिन् रूप किस विभक्ति में बनता है?

(अ) पञ्चमी **(ब)** चतुर्थी

(स) षष्ठी **(द)** सप्तमी

६. 'मया' रूप किस विभक्ति का है?

(अ) तृतीया **(ब)** चतुर्थी **(स)** पञ्चमी **(द)** षष्ठी

७. सर्व शब्द का 'सर्वस्मै' रूप किस विभक्ति में बनता है?

(अ) तृतीया में **(ब)** चतुर्थी में **(स)** पञ्चमी में **(द)** षष्ठी में

८. 'अस्मत्' किस विभक्ति व वचन का रूप है?

(अ) चतुर्थी विभक्ति बहुवचन **(ब)** पञ्चमी विभक्ति एकवचन

(स) षष्ठी विभक्ति एकवचन **(द)** सप्तमी विभक्ति द्विवचन

९. गुरु शब्द का गुरोः रूप किस विभक्ति में बनता है?

(अ) द्वितीया में **(ब)** चतुर्थी में **(स)** षष्ठी में **(द)** पञ्चमी में

१०. 'रमाभ्याम्' किन-किन विभक्तियों के किस वचन का है?

११. तस्मात् किस विभक्ति व वचन का रूप है?

(अ) द्वितीया विभक्ति **(ब)** सप्तमी विभक्ति का एकवचन

(स) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन **(द)** तृतीया विभक्ति, एकवचन

१२. त्वत् किस विभक्ति व वचन का रूप है?

(अ) पञ्चमी विभक्ति, बहुवचन **(ब)** द्वितीया विभक्ति, एकवचन

(स) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन **(द)** प्रथमा विभक्ति, एकवचन

१३. तद् शब्द (पुंलिंग) के चतुर्थी विभक्ति एक वचन का क्या रूप है?

(अ) तस्मै **(ब)** तस्यै **(स)** तयोः **(द)** तेषाम्

१४. मत्योः रूप किस विभक्ति के किस वचन का है?

१५. मति शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप है–

(अ) मत्यै **(ब)** मत्या **(स)** मतेः **(द)** मत्याम्

●●●

8 धातु-रूप
(परस्मैपद, आत्मनेपद तथा उभयपद के धातुओं के रूप)

जिस शब्द के द्वारा किसी काम का करना या होना पाया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं। संस्कृत की क्रियाएँ जिन मूल (सबसे पहले के) रूपों से बनती हैं, उन्हें धातु कहते हैं। **जैसे–** पठति– पढ़ता है, में पढ़ने का होना पाया जाता है। अत: 'पठति' क्रिया है। यह 'पठ्' मूल से बनती है, अत: पठ् धातु है।

क्रिया के भेद

कर्म के अनुसार क्रिया के दो भेद होते हैं– १. सकर्मक और २. अकर्मक।

(१) सकर्मक– जिन क्रियाओं के व्यापार का फल कर्त्ता को छोड़कर किसी अन्य पर पड़ता है, उन्हें सकर्मक कहते हैं। क्रिया के आगे 'क्या' अथवा 'किसको' लगाने पर उत्तर में आनेवाला शब्द 'कर्म' होता है। **जैसे–** राम: पुस्तकं पठति– राम पुस्तक पढ़ता है, में 'पठति' क्रिया का फल 'पुस्तकम्' पर पड़ रहा है और क्या पढ़ता है? के उत्तर में भी 'पुस्तकम्' आता है, अत: 'पुस्तक' कर्म और 'पठति' सकर्मक क्रिया है।

(२) अकर्मक– जिन क्रियाओं का फल कर्त्ता पर ही पड़ता है, वे अकर्मक क्रियाएँ कही जाती हैं। **जैसे–** राम: शेते– राम सोता है, में सोने का फल राम पर है; अत: 'शेते' क्रिया अकर्मक है। लज्जा (लजाना), सत्ता (होना), स्थिति (ठहरना), जागरण (जागना), वृद्धि (बढ़ना), क्षय (घटना), भय (डरना), जीवित (जीना), मरण (मरना), शयन (सोना), क्रीड़ा (खेलना), रुचि (इच्छा), दीप्ति (प्रकाश) अर्थ रखनेवाली धातुएँ प्राय: अकर्मक होती हैं।

लकार

प्रत्येक क्रिया किसी-न-किसी समय में होती है। इस काल को सूचित करने के लिए संस्कृत में दस लकारों की कल्पना की गयी है। ये लकार हैं– लट्, लृट्, लङ्, लुङ्, लिट्, लोट्, लिङ् लकार (विधिलिङ् एवं आशीर्लिङ्) लुट, लृङ्, लेट् किन्तु, पाठ्यक्रमानुसार यहाँ केवल लट्, लङ्, लृट्, लोट्, विधिलिङ्– इन पाँच लकारों का ही विवेचन किया गया है।

(१) लट्– वर्तमान काल– इसका प्रयोग वर्तमान काल में होनेवाले किसी भी कार्य को बताने के लिए होता है। **जैसे–** स: पठति– वह पढ़ता है।

(२) लृट्– सामान्य भविष्यत् काल को प्रकट करने के लिए इसका प्रयोग होता है। **जैसे–** स: गृहं गमिष्यति– वह घर जायेगा।

(३) लङ्– जो क्रिया आज से पूर्व हो चुकी हो, उसमें इस लकार का प्रयोग होता है। **जैसे–** राम: गृहम् अगच्छत्– राम घर गया।

(४) लोट्– आज्ञा, प्रार्थना, अनुमति, आशीर्वाद आदि अर्थों में इसका प्रयोग होता है। **जैसे–** स्वगृहं गच्छ– अपने घर जाओ (आज्ञा)।

(५) विधिलिङ्– सामान्यतया 'चाहिए' के अर्थ में इस लकार का प्रयोग होता है। **जैसे–** सत्यं ब्रूयात्– सत्य बोलना चाहिए।

पाठ्यक्रमानुसार इन लकारों में कुछ धातुओं के रूप यहाँ दिये जा रहे हैं। उन्हीं के अनुसार अनेक अन्य धातुओं के रूप चलाये जाते हैं। पद के अनुसार धातुएँ (क्रियाएँ) तीन प्रकार की होती हैं– (१) परस्मैपदी, (२) आत्मनेपदी, (३) उभयपदी।

१– परस्मैपदी– वाक्य में जिस धातु का फल कर्त्ता को न मिले, किसी दूसरे को मिले, उसे परस्मैपदी कहते हैं। **जैसे–** मोहनः पठति। इस वाक्य में पढ़ने का फल मोहन को न मिलकर दूसरे को मिलता है, जिसके लिए वह पढ़ रहा है।

२– आत्मनेपदी– वाक्य में जिस धातु का फल कर्त्ता को मिले, उसे आत्मनेपदी कहते हैं। **जैसे–** अहं भुञ्जे– मैं खाता हूँ। इस वाक्य में खाने का फल 'अहम्' कर्त्ता को मिल रहा है।

३– उभयपदी– वाक्य में जिस धातु का फल कर्त्ता को और दूसरे को भी मिले, उसे उभयपदी कहते हैं। **जैसे–** अध्यापकः कथयति– अध्यापक कहता है। इस वाक्य में कहने का फल अध्यापक को मिलता है और उसके लिए भी जिससे कहा गया है।

धातु-रूप (परस्मैपदी)

१. पठ् (पढ़ना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठति	पठतः	पठन्ति
म० पु०	पठसि	पठथः	पठथ
उ० पु०	पठामि	पठावः	पठामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म० पु०	अपठः	अपठतम् **[2006 BI]**	अपठत
उ० पु०	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट् लकार

प्र० पु०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म० पु०	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ० पु०	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट् लकार

प्र० पु०	पठतु	पठताम्	पठन्तु
म० पु०	पठ	पठतम्	पठत
उ० पु०	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
म० पु०	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ० पु०	पठेयम्	पठेव	पठेम

२. गम्, गच्छ (जाना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छति	गच्छत:	गच्छन्ति
म० पु०	गच्छसि	गच्छथ:	गच्छथ
उ० पु०	गच्छामि	गच्छाव:	गच्छाम:

लङ् लकार

प्र० पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म० पु०	अगच्छ:	अगच्छतम्	अगच्छत
उ० पु०	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट् लकार

प्र० पु०	गमिष्यति	गमिष्यत:	गमिष्यन्ति
म० पु०	गमिष्यसि	गमिष्यथ:	गमिष्यथ
उ० पु०	गमिष्यामि	गमिष्याव:	गमिष्याम:

लोट् लकार

प्र० पु०	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
म० पु०	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उ० पु०	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयु:
म० पु०	गच्छे:	गच्छेतम्	गच्छेत
उ० पु०	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

३. अस् (होना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अस्ति	स्त:	सन्ति
म० पु०	असि	स्थ:	स्थ
उ० पु०	अस्मि	स्व:	स्म:

लङ् लकार

प्र० पु०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म० पु०	आसी:	आस्तम्	आस्त
उ० पु०	आसम्	आस्व	आस्म

लृट् लकार

प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

लोट् लकार

प्र० पु०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
म० पु०	एधि	स्तम्	स्त
उ० पु०	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	स्यात्	स्याताम्	स्यु:
म० पु०	स्या:	स्यातम्	स्यात
उ० पु०	स्याम्	स्याव	स्याम

४. शक् (सकना)

लट् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र० पु०	शक्नोति	शक्नुत:	शक्नुवन्ति
म० पु०	शक्नोषि	शक्नुथ:	शक्नुथ
उ० पु०	शक्नोमि	शक्नुव:	शक्नुम:

लङ् लकार

प्र० पु०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
म० पु०	अशक्नो:	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उ० पु०	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

लृट् लकार

प्र० पु०	शक्ष्यति	शक्ष्यत:	शक्ष्यन्ति
म० पु०	शक्ष्यसि	शक्ष्यथ:	शक्ष्यथ
उ० पु०	शक्ष्यामि	शक्ष्याव:	शक्ष्याम:

लोट् लकार

प्र० पु०	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
म० पु०	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उ० पु०	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
म० पु०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उ० पु०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

५. प्रच्छ्, पृच्छ् (पूछना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
म० पु०	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उ० पु०	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
म० पु०	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उ० पु०	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लोट् लकार

प्र० पु०	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
म० पु०	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उ० पु०	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
म० पु०	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उ० पु०	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

लृट् लकार

प्र० पु०	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
म० पु०	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उ० पु०	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

धातु-रूप (आत्मनेपदी)

लभ् (पाना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लभते	लभेते	लभन्ते
म० पु०	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ० पु०	लभे	लभावहे	लभामहे

लृट् लकार

प्र० पु०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म० पु०	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ० पु०	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट् लकार

प्र० पु०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म० पु०	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ० पु०	लभै	लभावहै	लभामहै

लङ् लकार

प्र० पु०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म० पु०	अलभथा:	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ० पु०	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म० पु०	लभेथा:	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ० पु०	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

धातु-रूप (उभयपदी)

१. याच् (माँगना)

(परस्मैपदी)

लट् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र० पु०	याचति	याचत:	याचन्ति
म० पु०	याचसि	याचथ:	याचथ
उ० पु०	याचामि	याचाव:	याचाम:

लोट् लकार

प्र० पु०	याचतु	याचताम्	याचन्तु
म० पु०	याच	याचतम्	याचत
उ० पु०	याचानि	याचाव	याचाम

(आत्मनेपदी)

लट् लकार

एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
याचते	याचेते	याचन्ते
याचसे	याचेथे	याचध्वे
याचे	याचावहे	याचामहे

लोट् लकार

याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
याचै	याचावहै	याचामहै

लङ् लकार

प्र० पु०	अयाचत्	अयाचताम्	अयाचन्	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
म० पु०	अयाच:	अयाचतम्	अयाचत्	अयाचथा:	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उ० पु०	अयाचम्	अयाचाव	अयाचाम	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	याचेत्	याचेताम्	याचेयु:	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
म० पु०	याचे:	याचेतम्	याचेत	याचेथा:	याचेयाथम्	याचेध्वम्
उ० पु०	याचेयम्	याचेव	याचेम	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

लृट् लकार

प्र० पु०	याचिष्यति	याचिष्यत:	याचिष्यन्ति	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
म० पु०	याचिष्यसि	याचिष्यथ:	याचिष्यथ	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उ० पु०	याचिष्यामि	याचिष्याव:	याचिष्याम:	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

२. ग्रह् (लेना, ग्रहण करना)

(परस्मैपदी)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गृह्णाति	गृह्णीत:	गृह्णन्ति
म० पु०	गृह्णासि	गृह्णीथ:	गृह्णीथ
उ० पु०	गृह्णामि	गृह्णीव:	गृह्णीम:

लङ् लकार

प्र० पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म० पु०	अगृह्णा:	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ० पु०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

लृट् लकार

प्र० पु०	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यत:	ग्रहीष्यन्ति
म० पु०	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथ:	ग्रहीष्यथ
उ० पु०	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्याव:	ग्रहीष्याम:

लोट् लकार

प्र० पु०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म० पु०	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उ० पु०	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
म० पु०	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उ० पु०	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

(आत्मनेपदी)

लट् लकार

प्र० पु०	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
म० पु०	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
उ० पु०	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लोट् लकार

प्र० पु०	गृह्णीताम्	गृह्णीताम्	गृह्णताम्
म० पु०	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ० पु०	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

लङ् लकार

प्र० पु०	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
म० पु०	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
उ० पु०	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

लृट् लकार

प्र० पु०	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
म० पु०	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे
उ० पु०	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
म० पु०	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ० पु०	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

३. कथ् (कहना)

(परस्मैपदी)

लट् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र० पु०	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
म० पु०	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उ० पु०	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
म० पु०	अकथय:	अकथयतम्	अकथयत
उ० पु०	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

लृट् लकार

प्र० पु०	कथयिष्यति	कथयिष्यत:	कथयिष्यन्ति
म० पु०	कथयिष्यसि	कथयिष्यथ:	कथयिष्यथ
उ० पु०	कथयिष्यामि	कथयिष्याव:	कथयिष्याम:

लोट् लकार

प्र० पु०	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
म० पु०	कथय	कथयतम्	कथयत
उ० पु०	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयु:
म० पु०	कथये:	कथयेतम्	कथयेत
उ० पु०	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

(आत्मनेपदी)

लट् लकार

प्र० पु०	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
म० पु०	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
उ० पु०	कथये	कथयावहे	कथयामहे

लङ् लकार

प्र० पु०	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
म० पु०	अकथयथा:	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्
उ० पु०	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि

लृट् लकार

प्र० पु०	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते
म० पु०	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे
उ० पु०	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे

लोट् लकार

प्र० पु०	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्
म० पु०	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्
उ० पु०	कथयै	कथयावहै	कथयामहै

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्
म० पु०	कथयेथाः	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
उ० पु०	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि

अभ्यास-प्रश्न

(क) १. किसी एक धातु का रूप लिखिए–

(अ) 'पठ्' धातु का लट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन तथा द्विवचन में।

(आ) 'गम्' धातु का लोट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन तथा बहुवचन में।

(इ) 'शक्' धातु (परस्मैपद) विधिलिङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन तथा बहुवचन में।

२. निम्नलिखित में से किसी एक धातु का रूप लिखिए–

(अ) 'प्रच्छ' धातु विधिलिङ् लकार उत्तम पुरुष के तीनों वचन।

(आ) 'गम्' धातु लट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन।

(इ) 'अस्' धातु लृट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन व बहुवचन।

३. 'शक्' धातु लट् लकार उत्तम पुरुष के एकवचन तथा द्विवचन में क्या रूप होगा?

४. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिए–

(अ) 'प्रच्छ' धातु लट् लकार, मध्यम पुरुष एकवचन।

(आ) 'गम्' धातु लृट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन।

५. निम्नलिखित में से किसी एक धातु का रूप लिखिए–

(अ) 'पठ्' धातु का लोट् लकार उत्तम पुरुष द्विवचन तथा बहुवचन में।

(आ) 'अस्' धातु का लङ् लकार मध्यम पुरुष एकवचन तथा द्विवचन में।

(इ) 'प्रच्छ' धातु का लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन तथा द्विवचन में।

६. किसी एक धातु का रूप लिखिए–

(अ) 'लभ्' धातु का लङ् लकार उत्तम पुरुष द्विवचन तथा बहुवचन में।

(आ) 'याच' धातु का लट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन तथा बहुवचन में।

(इ) 'कथ्' धातु (परस्मैपद) विधिलिङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन तथा बहुवचन में।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए–

१. 'पठामः' धातु रूप का पुरुष व वचन है–

(अ) प्रथम पुरुष बहुवचन (ब) मध्यम पुरुष एकवचन

(स) उत्तम पुरुष बहुवचन (द) प्रथम पुरुष एकवचन।

२. 'अस्ति' किस लकार का रूप है?

(अ) लृट् (ब) लट् (स) लङ् (द) लोट्

३. 'एधि' रूप किस लकार का है?

(अ) लृट् का (ब) लङ् का (स) विधिलिङ्ग का (द) लोट् का

४. 'गमिष्यति' किस लकार का रूप है?

(अ) लट् (ब) लङ् (स) लृट् (द) लोट्

५. लृट् लकार सम्बन्धित है–

(अ) वर्तमान काल से (ब) भविष्यत् काल से

(स) आज्ञार्थक से (द) भूतकाल से।

६. 'प्रक्ष्यति' किस लकार का रूप है?

(अ) लोट् लकार (ब) लृट् लकार (स) लट् लकार (द) लङ् लकार

७. 'पठामः' धातु-रूप का पुरुष व वचन है–

(अ) प्रथम पुरुष, बहुवचन (ब) मध्यम पुरुष, एकवचन

(स) उत्तम पुरुष, बहुवचन (द) प्रथम पुरुष, एकवचन

८. 'गमिष्यामि' धातुरूप का पुरुष और वचन है–

(अ) प्रथम पुरुष, बहुवचन (ब) मध्यम पुरुष, एकवचन

(स) उत्तम पुरुष, एकवचन (द) प्रथम पुरुष, बहुवचन

९. 'अपठत्' रूप किस लकार का है?

(अ) लट् लकार का (ब) लोट् लकार का

(स) लङ् लकार का (द) विधिलिङ् लकार का

१०. 'पठत' किस लकार का रूप है?

(अ) लट् (ब) लोट् (स) विधिलिङ् (द) लङ्

११. 'पृच्छानि' रूप किस लकार का है?

(अ) लट् लकार (ब) लोट् लकार (स) लृट् लकार (द) लङ् लकार

१२. 'गृह्णाति' धातु रूप का पुरुष व वचन है–

(अ) प्रथम पुरुष एकवचन (ब) मध्यम पुरुष एकवचन

(स) उत्तम पुरुष द्विवचन (द) इनमें से कोई नहीं

१३. 'गच्छेव' किस पुरुष और वचन का रूप है?

(अ) प्रथम पुरुष बहुवचन (ब) मध्यम पुरुष बहुवचन

(स) उत्तम पुरुष एकवचन (द) उत्तम पुरुष द्विवचन

१४. 'भविष्यति' रूप किस लकार का है?

(अ) लट् (ब) लोट् (स) लङ् (द) लृट्

१५. 'गच्छतु' रूप किस लकार का है?

(अ) लोट् (ब) विधिलिङ् (स) लङ् (द) लृट्

१६. गच्छानि रूप किस लकार का है?

(अ) लट्लकार (ब) लोट्लकार (स) लृट्लकार (द) लङ्लकार

१७. 'पृच्छामः' रूप में पुरुष एवं वचन लिखिए।

(अ) उत्तम पुरुष बहुवचन (ब) प्रथम पुरुष बहुवचन

(स) मध्यम पुरुष बहुवचन (द) उत्तम पुरुष एकवचन

१८. पठेयुः किस लकार का रूप है?

(अ) लट्लकार (ब) लोट्लकार

(स) लृट्लकार (द) विधिलिङ् लकार

१९. पठिष्यति रूप किस लकार का है?

(अ) लट् का (ब) लृट् का (स) लोट् का (द) लङ् का

२०. 'गच्छेयम्' रूप किस लकार का है?

(अ) लट् लकार (ब) लृट् लकार

(स) लोट् लकार (द) विधिलिङ् लकार

२१. पठन्तु किस लकार के किस पुरुष व वचन का रूप है?

(अ) लोट्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन (ब) लङ्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन

(स) लट्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन (द) लट्लकार मध्यम पुरुष बहुवचन

२२. 'गच्छन्तु' रूप किस लकार का है?

(अ) लट्लकार (ब) लृट्लकार (स) लोट्लकार (द) विधिलिङ्लकार

२३. 'अस्ति' रूप 'दा' धातु के लट्लकार के किस वचन का है?

(अ) एकवचन (ब) द्विवचन (स) बहुवचन (द) इनमें से कोई नहीं

२४. पृच्छेयुः किस लकार का रूप है?

(अ) लट् (ब) लोट् (स) विधिलिङ् (द) लृट्

२५. 'अगच्छताम्' किस विभक्ति व वचन का रूप है?

(अ) प्रथम पुरुष द्विवचन (ब) मध्यम पुरुष एकवचन

(स) मध्यम पुरुष द्विवचन (द) उत्तम पुरुष एकवचन

२६. 'भविष्यामि' रूप किस लकार का है?

(अ) लट्लकार (ब) लोट्लकार (स) लृट्लकार (द) लङ्लकार

२७. 'गच्छेत्' रूप किस लकार का है?

(अ) लृट् (ब) विधिलिङ (स) लोट् (द) लङ्

२८. 'अस्तु' किस लकार के किस पुरुष का रूप है?

(अ) लोट्लकार प्रथम पुरुष (ब) लट्लकार मध्यम पुरुष

(स) लङ्लकार मध्यम पुरुष (द) विधिलिङ्लकार प्रथम पुरुष

२९. 'असानि' रूप किस लकार का है?

(अ) लट्लकार (ब) लोट्लकार (स) लृट्लकार (द) विधिलिङ्लकार

३०. 'स्युः' रूप किस लकार के किस पुरुष तथा किस वचन का है?

(अ) लट्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (ब) लोट्लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन

(स) लृट्लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन (द) विधिलिङ्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन

३१. 'एधि' किस लकार के किस पुरुष व वचन का रूप है?

(अ) लोट्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन (ब) लृट्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन

(स) लृट्लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन (द) विधिलिङ्लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन

३२. 'स्तः' रूप किस लकार का है?

(अ) लट्लकार (ब) लोट्लकार (स) लृट्लकार (द) लङ्लकार

३३. 'लभेम्' रूप में पुरुष व वचन बताइए–

(अ) मध्यम पुरुष, एकवचन (ब) उत्तम पुरुष, बहुवचन

(स) मध्यम पुरुष, बहुवचन (द) उत्तम पुरुष, एकवचन

३४. 'आसीत्' रूप किस लकार का है?

(अ) लट्लकार (ब) लोट्लकार (स) लङ्लकार (द) लृट्लकार

३५. 'पृच्छन्ति' रूप किस लकार के किस पुरुष व वचन का है?

(अ) लङ्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ब) लृट्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन

(स) लृट्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन (द) लोट्लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन

३६. 'पृच्छेव' किस पुरुष व वचन का रूप है?

(अ) प्रथम पुरुष, एकवचन (ब) मध्यम पुरुष, एकवचन

(स) उत्तम पुरुष, एकवचन (द) उत्तम पुरुष, द्विवचन

●●●

9 संस्कृत पदों का वाक्यों में प्रयोग

जिस प्रकार हिन्दी के वाक्यों में शब्द रहते हैं, उसी प्रकार संस्कृत के वाक्यों में भी। साधारणत: हिन्दी के वाक्यों के एक-एक पद के स्थान पर यदि उसी पद का संस्कृत अनुवाद दे दिया जाय तो पूरे हिन्दी वाक्य का संस्कृत अनुवाद हो जाता है। दिये गये शब्द का वाक्य में प्रयोग करते समय सबसे पहले संस्कृत शब्द को ध्यान में रखते हुए हिन्दी-वाक्य बना लें और फिर अनुवाद के नियम से संस्कृत वाक्य बना लेना चाहिए।

विभिन्न प्रकार के संस्कृत शब्दों के वाक्य प्रयोग यहाँ दिये जा रहे हैं–

संज्ञा प्रयोग

	शब्द	वाक्य-प्रयोग
(१)	हिमालये	**हिमालये** हिमं पतति।
(२)	बालका:	**बालका:** क्रीडन्ति।
(३)	राजान:	**राजान:** प्रजां पालयन्ति।
(४)	वृक्षे:	**वृक्षे:** खगा: तिष्ठन्ति।
(५)	उद्याने	**उद्याने** बहव: वृक्षा: सन्ति।
(६)	मित्रम्	मम **मित्रम्** पठति।
(७)	सूर्य:	**सूर्य:** उदयति।
(८)	काक:	**काक:** वृक्षे तिष्ठति।
(९)	नेत्राभ्याम्	अहं **नेत्राभ्याम्** पश्यामि।
(१०)	नद्या:	**नद्या:** जलं मधुरं अस्ति।
(११)	बालकाय	**बालकाय** मोदकानि रुच्यते।
(१२)	विद्यालयेषु	बालका: **विद्यालयेषु** पठन्ति।
(१३)	पण्डित:	**पण्डित:** यज्ञं करोति।
(१४)	गणेशाय	श्री **गणेशाय** नम:।
(१५)	सिंहात्	वीर: **सिंहात्** बालकं रक्षति।
(१६)	वृक्षात्	**वृक्षात्** पत्राणि पतन्ति।
(१७)	विद्यालये	स: **विद्यालये** पठति।
(१८)	पुत्र:	राम कृष्णस्य **पुत्र:** अस्ति।
(१९)	कृषक:	**कृषक:** विश्वस्य पिता अस्ति।
(२०)	विद्यालयम्	स: **विद्यालयं** गच्छति।
(२१)	रामाय	**रामाय** मोदकं रोचते।

सर्वनाम प्रयोग

	शब्द	वाक्य-प्रयोग
(१)	त्वम्	**त्वम्** पठसि।
(२)	युष्माकम्	अहं **युष्माकं** पुस्तकं पठामि।
(३)	केन्	सः **केन्** ताडयति?
(४)	इमे	**इमे** पठन्ति।
(५)	सर्वाणि	**सर्वाणि** पतन्ति।
(६)	तस्याः	**तस्याः** वचनं मधुरं अस्ति।
(७)	अनेन	**अनेन** सह गच्छ।
(८)	मया	**मया** सह गच्छति।
(९)	तान्	अहं **तान्** पश्यामि।
(१०)	सः	**सः** तत्र गच्छति।
(११)	भवतः	**भवतः** पिता अत्र आगच्छत्।
(१२)	सा	**सा** तत्र गच्छति।
(१३)	ते	**ते** पठन्ति।
(१४)	तस्य	एतत् **तस्य** गृहम् अस्ति।
(१५)	यूयम्	**यूयम्** पुस्तकं पठथ।
(१६)	अस्माभिः	सः **अस्माभिः** सह क्रीडति।
(१७)	तस्मिन्	**तस्मिन्** वने सिंहः वसति।
(१८)	भवान्	**भवान्** पुस्तकं पठति।
(१९)	त्वां	सः **त्वां** वदति।
(२०)	तम्	अहं **तम्** वृक्षं पश्यामि।
(२१)	तव	**तव** जनकः कुत्र गच्छति?
(२२)	त्वत्	सः **त्वत्** गणितं पठति।
(२३)	वयम्	**वयम्** पुस्तकं पठामः।
(२४)	माम	सः **माम्** वदति।
(२५)	तौ	**तौ** शुकौ वसतः।
(२६)	युष्मासु	**युष्मासु** कः फलं खादिष्यति?
(२७)	कया	सः **कया** सह गच्छति?
(२८)	मह्यम्	**मह्यम्** पुस्तकं देहि।
(२९)	मम	इदं **मम** गृहम् अस्ति।
(३०)	अस्माकं	**अस्माकं** देशः विशालः अस्ति।

विशेषण प्रयोग

	शब्द	वाक्य-प्रयोग
(१)	निर्मले	**निर्मले** आकाशे चन्द्रः उदयति।
(२)	मधुरम्	गंगा जलं **मधुरं** अस्ति।
(३)	सुन्दरम्	मम पुस्तकं **सुन्दरं** अस्ति।
(४)	मनोहरः	अयं श्लोकः **मनोहरः** अस्ति।
(५)	ज्येष्ठः	राम दशरथस्य **ज्येष्ठः** पुत्रः आसीत्।
(६)	उत्तमः	**उत्तमः** छात्रः गुरुं प्रणमति।
(७)	स्थूलः	सः **स्थूलः** अस्ति।
(८)	उष्णम्	**उष्णम्** दुग्धं कः पिबति।
(९)	शीतलता	विश्वस्य **शीतलता** प्रयोगः अस्ति।
(१०)	लघु	अद्य मम **लघु** भ्राता आगच्छत्।
(११)	बुद्धिमती	**बुद्धिमती** बालिका पठति।
(१२)	उच्चतमः	हिमालयः पर्वतेषु **उच्चतमः** अस्ति।
(१३)	चतुरतरः	रामात् सोहनः **चतुरतरः** अस्ति।
(१४)	क्रन्दनम्	बालकाः **क्रन्दनम्** कुर्वन्ति।
(१५)	सुन्दरी	राधा **सुन्दरी** अस्ति।

अव्यय प्रयोग

	शब्द	वाक्य-प्रयोग
(१)	सदा	रामः **सदा** सत्यं वदति।
(२)	सर्वत्र	ईश्वरः **सर्वत्र** अस्ति।
(३)	प्रतिदिनम्	अहं **प्रतिदिनं** दुग्धं पिबामि।
(४)	यदा तदा	**यदा** कृष्णः आगच्छति। **तदा** मोहनः गच्छति।
(५)	अत्र	सः **अत्र** अगच्छत्।
(६)	तत्र	सः **तत्र** अगच्छत् ।
(७)	श्वः	अहम् **श्वः** विद्यालयं गमिष्यामि।
(८)	कुत्र	बालकाः **कुत्र** निवसन्ति?
(९)	एवम्	जनाः **एवम्** कथयन्ति।
(१०)	कथम्	सा **कथम्** लिखति?
(११)	अद्यैव	रामः **अद्यैव** गमिष्यति।
(१२)	प्रातः	**प्रातः** सूर्यः उदयति।
(१३)	यथाशक्ति:	रामः **यथाशक्तिः** सत्यं वदति।
(१४)	अधः	बालकः **अधः** अपतत् ।

(१५)	एकदा	**एकदा** रामः तत्र अगच्छत् ।
(१६)	स्वयमेव	सः **स्वयमेव** धनं दास्यति।
(१७)	विना	मोहनः लेखन्या **विना** कथं लिखति?
(१८)	सायम्	चन्द्रः **सायम्** उदयति।
(१९)	नमः	श्री गणेशाय **नमः**।
(२०)	नक्तम्	**नक्तं** भोजनं न करोति।
(२१)	दिवा	सोहनः **दिवा** न पठति।
(२२)	अधुना	राजेन्द्रः **अधुना** न पठति।
(२३)	अचिरम्	**अचिरम्** सः गतवान् ।
(२४)	उभयतः	विद्यालयं **उभयतः** वृक्षाः सन्ति।
(२५)	परस्परम्	मूर्खाः **परस्परम्** कलहं कुर्वन्ति।
(२६)	वा	बालः वृद्धः **वा** फलं खादति।
(२७)	उपरि	वृक्षाणाम् **उपरि** खगाः तिष्ठन्ति।
(२८)	अकस्मात्	सः **अकस्मात्** अत्र आगच्छत् ।
(२९)	इह	सः **इह** पठति।
(३०)	ह्यः	**ह्यः** अहम् विद्यालयं गमिष्यामि।
(३१)	सह	सीता रामेण **सह** वनं गच्छति।
(३२)	कदा	सः **कदा** विद्यालयं गच्छति?

संख्यावाचक शब्दों का प्रयोग

(१)	द्वौ	**द्वौ** वानरौ नृत्यतः।
(२)	द्वितीयः	**द्वितीयः** पुरुषः गच्छति।
(३)	एकः	**एकः** मृगः वने वसति।
(४)	त्रयः	**त्रयः** बालकाः पठन्ति।
(५)	द्वै	**द्वै** वस्त्रे नवीने स्तः।
(६)	त्रीणि	**त्रीणि** पुस्तकानि सन्ति।
(७)	चत्वारि	**चत्वारि** फलानि सन्ति।
(८)	द्वाभ्याम्	**द्वाभ्याम्** वृक्षाभ्यां फलानि पतन्ति।
(९)	शतं	**शतं** छात्राः क्रीडन्ति।
(१०)	पञ्च	**पञ्च** पुरुषाः गच्छन्ति।
(११)	चत्वारः	**चत्वारः** ब्राह्मणाः गच्छन्ति।
(१२)	एका	**एका** नारी अत्र आगच्छति।
(१३)	चतुर्णाम्	अयं **चतुर्णाम्** बालकानां पिता अस्ति।
(१४)	अष्टौ	**अष्टौ** गुणाः पुरुषं दीपयन्ति।
(१५)	त्रिषु	**त्रिषु** लोकेषु विद्या श्रेष्ठं धनं अस्ति।

क्रिया का प्रयोग

(१)	पठन्ति	छात्रा: **पठन्ति**।
(२)	अखादत्	मोहन: फलं **अखादत्** ।
(३)	पश्यसि	त्वं चित्रं **पश्यसि**।
(४)	उद्गच्छति	गंगा हिमालयात् **उद्गच्छति**।
(५)	प्रभवति	लोभात् क्रोध: **प्रभवति**।
(६)	गच्छाम:	वयं कानपुरं **गच्छाम:**।
(७)	करोमि	अहं कार्यं **करोमि**।
(८)	करोति	राम: कार्यं **करोति**।
(९)	क्रीडामि	अहं क्रीडाक्षेत्रे **क्रीडामि**।
(१०)	गच्छति	सोहन: गृहं **गच्छति**।
(११)	गच्छन्ति	छात्रा: विद्यालयं **गच्छन्ति**।
(१२)	लिखामि	अहं पुस्तकं **लिखामि**।
(१३)	कुरु	त्वम् स्वकार्यं समयेन **कुरु**।
(१४)	हन्ति	राम: रावणं **हन्ति**।
(१५)	अपठत्	सुरेन्द्र: पुस्तकं **अपठत्**।
(१६)	पठति	सुरेश: **पठति**।
(१७)	अपचन्	ते भोजनं **अपचन्**।
(१८)	रोचते	मध्यं पठनं **रोचते**।
(१९)	अपठन्	बालका: **अपठन्** ।
(२०)	गच्छताम्	तौ गृहं **गच्छताम्** ।
(२१)	क्रुध्यति	राम: **क्रुध्यति**।
(२२)	रक्षति	सुरेश: **रक्षति**।
(२३)	अकुर्म	वयं कृत्यं **अकुर्म**।
(२४)	प्राहरत्	भीम: दुर्योधनं **प्राहरत्** ।
(२५)	तिष्ठेत्	अशोक: अत्र **तिष्ठेत्** ।
(२६)	पतन्ति	वृक्षात् पत्राणि **पतन्ति**।
(२७)	पश्य	इदं चित्रं **पश्य**।

प्रत्यय प्रयोग

(१)	पीत्वा	स: जलं **पीत्वा** आगच्छति।
(२)	हसन्	**हसन्** बालक: गच्छति।
(३)	पश्यन्	राम: **पश्यन्** कृष्ण: आगच्छति।
(४)	हसनीयम्	रामेण न **हसनीयम्** ।
(५)	आलोक्य	राम: नाटकं **आलोक्य** आगच्छति।

(६)	कृतम्	तेन कार्यं **कृतम्** ।
(७)	कृत्वा	रामः भोजनं **कृत्वा** विद्यालयं गच्छति।
(८)	कर्तुम्	मोहनः कार्यं **कर्तुम्** गच्छति।
(९)	लिखामि	अहं पत्रं **लिखामि**।
(१०)	लब्ध्वा	धनं **लब्ध्वा** सुखी भवेत् ।
(११)	दातुम्	अहं धनं **दातुम्** इच्छामि।
(१२)	पठति	रामः पुस्तकं **पठति**।
(१३)	गतः	सः गृहम् **गतः**।
(१४)	गतवान्	रामः वनं **गतवान्**।
(१५)	गच्छन्	रामः नगरं **गच्छन्** एकं मृगम् अपश्यत्।
(१६)	पठितव्यम्	मया पुस्तकं **पठितव्यम्**।
(१७)	श्रोतव्यम्	अनुसूया आख्यानं **श्रोतव्यम्**।
(१८)	गन्तव्यम्	त्वया गृहं **गन्तव्यम्**।
(१९)	करिष्यामि	अहं कार्यं **करिष्यामि**।
(२०)	भवितव्यम्	रामेण अत्र **भवितव्यम्**।
(२१)	भक्षितव्यानि	तेन फलानि **भक्षितव्यानि**।
(२२)	पीतवती	सा जलं **पीतवती**।
(२३)	पतनीयम्	बालक न **पतनीयम्**।
(२४)	दानीयम्	मोहनेन पुस्तकं **दानीयम्**।
(२५)	आगच्छ	**आगच्छ** कन्दुकेन क्रीडेम।
(२६)	आदाय	चौरः धनं **आदाय** धावति।
(२७)	प्रष्टुम्	सः प्रश्नं **प्रष्टुम्** आगच्छति।
(२८)	श्रोतुम्	कृष्णः कथां **श्रोतुम्** इच्छति।
(२९)	विहाय	मम **विहाय** सः अगच्छत्।
(३०)	पातुम्	रामः जलं **पातुम्** इच्छति।
(३१)	पठित्वा	सः पुस्तकं **पठित्वा** विद्यालयं गच्छति।
(३२)	लिखित्वा	अहं पत्रं **लिखित्वा** कार्यं करोमि।
(३३)	गमिष्यामि	अहं गृहं **गमिष्यामि**।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच शब्दों का संस्कृत-वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

अस्माकं, मासस्य, वर्तते, सन्ति, प्राप्तवान्, गन्तव्यम्, आसम्, ताः, वयम्, अद्यतनम्।

२. 'वृक्षात्' का वाक्य-प्रयोग है–

(क) वृक्षात् पत्रम् पतन्ति (ख) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति

(ग) वृक्षात् पत्राणि पतति (घ) वृक्षात् पत्राय पतसि।

३. निम्न में से किन्हीं पाँच शब्दों के प्रयोग संस्कृत वाक्यों में कीजिए–
त्वम्, सः, सुन्दरम्, एका, सह, परितः, मम्, च, भोः!, गच्छामि।

४. 'रामेण.....सीता वनं अगच्छत्' वाक्य में रिक्त स्थान पर होगा–
(क) लक्ष्मणेन (ख) सः (ग) सह (घ) अयोध्यायाम् ।

५. निम्न में से किन्हीं पाँच शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
राज्ञः, अस्मिन्, श्रुत्वा, लिखन्तु, ददाति, ज्ञास्यथ, आवाम्, पठितुं, पठनीयम्, गुरोः।

६. निम्न में से किन्हीं पाँच शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
इमाः पठन्ति, कुत्र, अपिबन्, पत्राणि, अनयत्, आगम्य, दुष्टः, सकलः, सह।

७. निम्न में से किन्हीं पाँच शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
सर्वे, अत्र, मम, पठन्ति, गन्तुम् , कृत्वा, विद्यालये, किम् , छात्राय, यदा।

८. निम्न में से किन्हीं पाँच शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
गच्छसि, गणेशाय, सूर्यः, कृत्वा, अभितः, गमिष्यन्ति, ददति, अत्र, पठितुम्, दशरथस्य।

९. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं पाँच शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
नाविकः, शुकः, कः, अस्मिन्, परिश्रमम्, प्रातः, अहो, रात्रौ, नदी, प्रतिदिनम्।

१०. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
अहम्, गुरवे, गत्वा, पित्रां, कृष्णेन, बालकाय, वैकुण्ठम, वृक्षात्, राज्ञः, शिलाम्।

११. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच शब्दों के संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
पण्डिताः, यूयम्, भवति, गत्वा, तिस्रः, अपठत्, गच्छेः, भगवान्, कर्णेन, स्वधा।

१२. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच शब्दों के संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
त्रिसः, द्वे, कलत्राणि, अन्नं, पतन्ति, कस्मै, अस्यां, अद्यत्वे, ज्येष्ठा, सर्वेषु।

१३. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
गतवान्, रामाय, श्रुत्वा, वृक्षेषु, ओदनम्, अनुजः, सुतः, सह, पृथक्, रिपुः।

१४. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच शब्दों के संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
एकदा, यदि, यदा, चेत्, यतः, अतः, कुत, यत्र, केषाञ्चित्, कुत्रचित्।

१५. निम्नलिखित पदों में से किन्हीं पाँच पदों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
गन्तुम्, पीत्वा, करणीयम्, प्राप्तः, इतः, यतोहि, यदि, यदा, यत्र, यतः।

●●●

10 संस्कृत वाक्य-शुद्धि

संस्कृत के वाक्यों को शुद्ध करते समय सबसे पहले यह देख लेना चाहिए कि वह किस लकार, पुरुष, वचन या विभक्ति से सम्बन्ध रखता है। उसके बाद उस वाक्य में अशुद्ध शब्द को शुद्ध करके लिख देना चाहिए। उदाहरण के लिए 'तौ विद्यालयं गच्छति' अशुद्ध वाक्य है। इसमें हम देखते हैं कि 'तौ' प्रथम पुरुष का द्विवचन है, जबकि 'गच्छति' गम् धातु के प्रथम पुरुष का एकवचन है। अत: गच्छति के स्थान पर द्विवचन का शब्द 'गच्छत:' रख देते हैं। इस प्रकार शुद्ध वाक्य हुआ–'तौ विद्यालयं गच्छत:'।

कुछ अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध वाक्य नीचे दिये गये हैं–

लकारों के आधार पर वाक्य-शुद्धि

लट् लकार (वर्तमान काल)

	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
१.	रमेश: पुस्तकं पठसि।	रमेश: पुस्तकं पठति।
२.	अहं विद्यालयं गच्छति।	अहं विद्यालयं गच्छामि।
३.	त्वम् कुत्र निवसति?	त्वम् कुत्र निवससि?
४.	स: पुस्तकं ददासि।	स: पुस्तकं ददाति।
५.	वयं क्रीडन्ति।	वयं क्रीडाम:।

विधिलिङ्ग लकार ('चाहिए' के अर्थ में)

६.	स: पुस्तकं पठेतम्।	स: पुस्तकं पठेत्।
७.	सदा सत्यं वदेयु:।	सदा सत्यं वदेत्।
८.	रमेश: सुरेश: च पठेत्।	रमेश: सुरेश: च पठेताम्।
९.	वयं स्वकार्यं कुर्यात्।	वयं स्वकार्यं कुर्याम्।

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

१०.	स: पुस्तकं पठिष्याम:।	स: पुस्तकं पठिष्यति।
११.	रमा संस्कृतं पठिष्यसि।	रमा संस्कृतं पठिष्यति।
१२.	अहं ग्रामं गमिष्यति।	अहं ग्रामं गमिष्यामि।
१३.	छात्रा: विद्यालये पठिष्यति।	छात्रा: विद्यालये पठिष्यन्ति।

लङ् लकार (भूतकाल)

१४.	अहं हिमालयम् अगच्छ:।	अहं हिमालयम् अगच्छम्।

१५.	ते पुस्तकानि अपठत्।	ते पुस्तकानि अपठन्।
१६.	त्वं नगरम् अगच्छत्।	त्वं नगरम् अगच्छः।
१७.	अहं ग्रामम् अगच्छाम्।	अहं ग्रामम् अगच्छम्।

लोट् लकार (आज्ञा, इच्छा आदि)

१८.	त्वं मया सह पठत।	त्वं मया सह पठ।
१९.	यूयं विद्यालयम् गच्छतम्।	यूयं विद्यालयम् गच्छत्।
२०.	अहं तव गृहम् गच्छाम।	अहं तव गृहम् गच्छानि।
२१.	वयं सदा सत्यं वदाव।	वयं सदा सत्यं वदाम्।
२२.	तौ पठन्तु।	तौ पठताम्।

विभक्तियों के आधार पर वाक्य-शुद्धि

कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

	अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**
२३.	त्वं गृहे गच्छसि।	त्वं गृहं गच्छसि।
२४.	छात्राः विद्यालये गच्छन्ति।	छात्राः विद्यालयं गच्छन्ति।
२५.	सः गुरवे प्रणमति।	सः गुरुं प्रणमति।
२६.	रमेशः नद्यः पश्यति।	रमेशः नदीं पश्यति।

करण कारक (तृतीया विभक्ति)

२७.	रामः बाणात् बालिनम् हतवान्।	रामः बाणेन बालिनम् हतवान्।
२८.	अहं नेत्राद् पश्यामि।	अहं नेत्रेन पश्यामि।
२९.	सः हस्तात् लिखति।	सः हस्तेन लिखति।
३०.	आवां कन्दुकाय क्रीडावः।	आवां कन्दुकेन क्रीडावः।

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

३१.	सः पुष्पाणां स्पृहयति।	सः पुष्पाय स्पृहयति।
३२.	नृपः ब्राह्मणान् धेनुः अयच्छत्।	नृपः ब्राह्मणाय धेनुः अयच्छत्।
३३.	कृषकः अन्नस्य क्षेत्रम् कर्षति।	कृषकः अन्नाय क्षेत्रम् कर्षति।
३४.	छात्राः ज्ञानं पुस्तकम् पठन्ति।	छात्राः ज्ञानाय पुस्तकम् पठन्ति।

अपादान कारक (पंचमी विभक्ति)

३५.	त्वं विद्यालयेन आगच्छसि।	त्वं विद्यालयात् आगच्छसि।
३६.	वानरः वृक्षस्य पतति।	वानरः वृक्षात् पतति।
३७.	नदी पर्वतेन निःसरति।	नदी पर्वतात् निःसरति।
३८.	तौ अध्यापकेन पठिष्यतः।	तौ अध्यापकात् पठिष्यतः।

सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

३९.	बालकः मातरम् स्मरति।	बालकः मातुः स्मरति।

४०.	अर्जुन: पाण्डुना पुत्र: आसीत्।	अर्जुन: पाण्डुनस्य पुत्र: आसीत्।
४१.	इदं रामं पुस्तकं अस्ति।	इदं रामस्य पुस्तकं अस्ति।
४२.	राम: दशरथेन पुत्र: आसीत्।	राम: दशरथस्य पुत्र: आसीत्।

अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

४३.	स: प्रयागं निवसति।	स: प्रयागे निवसति।
४४.	बालक: कार्यस्य कुशल: अस्ति।	बालक: कार्ये कुशल: अस्ति।
४५.	एकलव्यस्य द्रोणाचार्यस्य भक्ति: आसीत्।	एकलव्यस्य द्रोणाचार्ये भक्ति: आसीत्।
४६.	रमेश: विद्यालयम् पठति।	रमेश: विद्यालये पठति।
४७.	सिंह: वनं वसति।	सिंह: वने वसति।
४८.	सुरेश: अस्मिन् गृहस्य निवसति।	सुरेश: अस्मिन् गृहे निवसति।
४९.	त्वं ग्रामं निवससि।	त्वं ग्रामे निवससि।
५०.	भानु: प्रातकालेन उदयति।	भानु: प्रात:काले उदयति।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए–

(क) छात्र: गृहे गच्छति।
(ख) स: मुखं भोजनं करोति।
(ग) स: छात्रं गृहे निवसति।
(घ) त्वं विद्यालयात् गच्छसि।
(ङ) अहं गृहेण गच्छामि।

२. शुद्ध वाक्य पर सही (✓) का चिह्न लगाइये–

(क) त्वं पठामि। ( )
(ख) वयं धावन्ति। ( )
(ग) तौ पठत:। ( )
(घ) युवां गच्छाव:। ( )
(ङ) यूयं पठथ। ( )
(च) दिनेश: पुस्तकं पठति। ( )

३. 'आवाम्' के साथ गम् धातु के लट् लकार में होगा–

(क) गच्छथ (ख) गच्छाव: (ग) गच्छत: (घ) गच्छसि।

●●●

11 पत्र-लेखन
(संस्कृत में आवेदन-पत्र तथा निमंत्रण-पत्र)

(संस्कृत में आवेदन-पत्र तथा निमंत्रण-पत्र)

पत्र वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने हृदय के भाव एवं विचारों का आदान-प्रदान लिखित रूप में करता है। पत्र कई प्रकार के होते हैं, किन्तु पाठ्यक्रमानुसार आवेदन-पत्र एवं निमन्त्रण पत्र का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है।

१. आकस्मिक अवकाश के लिए प्रधानाचार्य को पत्र

सेवायाम्,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदयः
दिगम्बर जैन इण्टर कालेज
बड़ौत नगर

महोदय!

सविनयम् निवेदनम् अस्ति, यद् दिनद्वयात् अहं सहसा विषूचिकया पीडितः अभवम्। येन विद्यालयम् उपस्थातुम् असमर्थः अस्मि। अतः कृपया एकादश-द्वादश दिनांकयोः अवकाशं स्वीकुर्वन्तु भवन्तः।

भवताम् शिष्यः
राकेशः
नवम कक्षीयः

१०.५.२०--

२. विवाहोत्सव में सम्मिलित होने के लिए अवकाश हेतु प्रधानाचार्य को पत्र

सेवायाम्,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदयः
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयः
प्रयाग

महोदय!

विनयपुरस्सरं निवेदनम् अस्ति यद् मम् अग्रजायाः भगिन्याः विवाहोत्सवः नगरे एव आयोज्यते, यस्मात् चतुर्दिनपर्यन्तम् अहं विद्यालयम् आगन्तुम् असमर्थः। अतः २६.४.२०-- दिनांकात् २९.४.२०-- दिनांक पर्यन्तं चतुर्णां दिनानाम् अवकाशं दत्वा अनुगृहणन्तु श्रीमन्तः।

भवदीयः आज्ञाकारी
मनोजः
दशम कक्षीयः

२५.४.२०--

३. ग्राम की स्वच्छता के लिए ग्राम-प्रधान को पत्र

सेवायाम्,

ग्राम-प्रधान महोदयः

शिवपुरम्,

वाराणसी।

महोदय!

मम् ग्रामे जलप्रवाहाय प्रवाहिण्याः नालिकाः न सन्ति। सम्प्रति अधिकवर्षणेन सर्वत्र दूषितम् जलम् भरितम् अस्ति। जलस्य निर्गमाय कृपया प्रबन्ध करणीयः। ग्रामे स्वच्छजलवाय्वोः महती आवश्यकता अस्ति।

भवदीयः

१०.६.२०–– रामः

शिवपुरम्, वाराणसी।

४. पिता के लिए पत्र

श्रद्धेय पितृमहाभागाः!

सादरम् चरणावनतयः।

सकुशलोऽहम् कुशलम् प्रार्थये। भवतः शुभाशिषा सावधानतया अध्ययनरतः अस्मि। निवेदनमस्ति यत् अस्मिन् वर्षे मई मासस्य प्रथम दिनांकतः विद्यालयस्य सत्रारम्भः जायते। मई-जून-मासयोः शुल्कः देयः अस्ति, अतः कृपया शतं रूप्यकाणि प्रेषयितुम् अनुकम्पताम्। मात्रे सादरम् प्रणामाः अनुजाय च आयुष्कामना।

भवदीयः पुत्र

पुनीतः

१५.४.२०–– राजकीय विद्यालयः

प्रयागः

५. पुस्तक मँगाने के लिए पत्र

सेवायाम्,

प्रकाशकः

चौखम्भा संस्कृत पुस्तकालयः

वाराणसी।

महोदय!

कृपया सम्पूर्णानन्द संस्कृतविश्वविद्यालयस्य पूर्वमध्यमायाः प्रथमखण्डस्य परीक्षा हेतोः भट्टिकाव्यस्य द्वयोः सर्गयोः एकाम् प्रतिम् मध्यकौमुद्याः च एकाम् प्रतिम् शीघ्रम् प्रेषयतु। धन्यवादः!

भवदीयः

१५. २. २०–– कृष्णः

हनुमत् संस्कृत महाविद्यालयः

प्रयागः

६. छोटे भाई के लिए पत्र

प्रिय अनुज रवि!

शुभाशिषः।

अहं सकुशलं प्रयागम् अद्य प्राप्तः। अत्र सर्वं पूर्ववत् विद्यते। परिवारस्य मधुरस्मृतयः मां भृशं पीडयन्ति। मम प्रस्थानकाले माता किञ्चित् अस्वस्था आसीत्। तस्याः स्वास्थ्यस्य आत्मनः अध्ययनस्य चिन्ता त्वया सावधानतया कर्तव्या। परिवारस्य कुशलवार्ताः पत्रेण सूचनीयाः।

भवदीयः अग्रजः
४.२.२०-- दिनेश कुमारः
प्रयाग विश्वविद्यालयः

७. मामा के लिए पत्र

आदरणीय मातुल! वाराणसीतः

प्रणामः।

ममानुजस्य मनोजस्य द्वादशं जन्मदिनं जनवरी मासस्य एकादशे दिनाङ्के आयोज्यते। अस्मिन् अवसरे माता त्वां द्रष्टुम् इच्छति। अग्रजः अपि हरिद्वारात् आगमिष्यति।

भवान् अवसरेऽस्मिन् अवश्यं सहभागी भविष्यति आयोजनस्य शोभां वर्द्धयिष्यति इति विश्वसिमि।

४.९.२०-- भवदीयः भागिनेयः
कमलाकान्तः

८. पुत्र के जन्मदिन में सम्मिलित होने के लिए मित्रों को पत्र

सुहृद्वराः!

अद्य मम पुत्रस्य गिरीशस्य नवमः जन्मदिनोत्सवः सायं षड्वादने मम सदने आयोज्यते। भवन्तः कृपया, ममावासम् आगत्य शुभाशिषा पुत्रम् अभिषिच्य माम् अनुगृह्णन्तु।

भवदीयः
१२.६.२०-- रमेशः

९. विद्यालय के वार्षिक उत्सव में सम्मिलित होने के लिए जिलाधिकारी को पत्र

सेवायाम्,

माननीय जिलाधिकारी महोदयः

प्रयागः

महोदय!

जनवरी मासस्य पञ्चमे दिनांके अस्माकं विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः आयोज्यते। सायंकाले सप्तवादने कालिदासस्य 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटकं छात्रैः अभिनीयते, तदनन्तरं पुरस्कार वितरणं विधास्यते।

भवन्तः कृपया अस्योत्सवस्य प्रमुखातिथित्वं वोढुं स्वकरकमलैः पुरस्कारान् च वितरितुम् आत्मनः स्वीकृत्या अस्मान् अनुगृह्णन्तु।

भवदीयः
विनयः
छात्रसंघस्य अध्यक्षः
प्रयाग विद्यापीठः, प्रयागः

१.१.२०--

१०. प्रधानाचार्या को आर्थिक सहायता के लिए आवेदन-पत्र

सेवायाम्,

श्रीमति प्रधानाचार्या महोदये,
हरिश्चन्द्र कन्या इण्टर कालेज
लक्ष्मणपुरम्

महोदये!

सेवायां सविनयमिदं निवेदनं यत् अहम् एका निर्धना असहाया बालिका अस्मि। मदीया जननी अस्मान् पालयति। अर्थाभावात् मम समीपे पुस्तकानि अपि न सन्ति। इदानीं विद्यालयस्य मासिक शुल्क प्रदानेऽपि सर्वथा असमर्था अस्मि।

अतः प्रार्थये यत् भवती मह्यं किंचित् आर्थिकसहाय्यं दत्वा माम् अनुगृह्णातु।

भवदीया
काशीतः
आज्ञाकारिणी छात्रा निर्मला
नवम् ''अ'' कक्षेयः

८-८-२०--

११. शुल्क-मुक्ति के लिए प्रधानाचार्य को आवेदन-पत्र

सेवायाम्,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
महाराजा अग्रसेन इण्टर कालेज,
आगरास्थ।

श्रीमान्,

सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् अहं भवतां विद्यालये नवम्यां कक्षायां पठामि। मम पिता एकः निर्धनः कृषकः अस्ति। सः मम शिक्षण शुल्कं दातुम् असमर्थः अस्ति। मम परीक्षापरिणामः सदैव उत्तमः अभवत्। अतः अहं अनुरोधपूर्वकं प्रार्थ्ये यत् माम् शिक्षा–शुल्क-मुक्तं कृत्वा अनुगृह्णातु भवान्।

भवदीयः आज्ञाकारिः शिष्यः
राजेश कुमारः
नवम् 'अ' कक्षेयः

१४-३-२०--

१२. भाई को परीक्षा में उत्तीर्ण होने की सूचना

भातृवर्य वाराणसी

सादरं प्रणमामि! ६–६–.....

अत्र सर्वे कुशलं तथास्तु। भगवत्कृपया अहं हाईस्कूल परीक्षायां प्रथम श्रेण्यामुत्तीर्णः अभवम्। परिवारस्य सर्वे कुशलिनः सन्ति। भवान् गृहं कदा आगमिष्यति इति पृच्छन्ति सर्वे जनाः।

भवदनुजः

राकेश दत्तः

१३. पुत्र के विवाह में सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रण-पत्र

श्री विश्वासदीक्षित महोदय !

आगामिदिसम्बर मासस्य षष्ठदिनांके आगरानगरस्थस्य श्री रघुनन्दनमिश्र महोदयस्य कुमारी वीणानामिकया पुत्र्या सह सम्पद्यमानस्य मम ज्येष्ठपुत्रस्य चिरंजीविनः मधुरकुमार शर्मणः विवाहोत्सवे कार्यक्रमानुसारं भागं गृहीत्वा मम अनुगृह्णातु।

चोथियाना मैनपुरीतः भवदीयदर्शनाभिलाषिः

२१-११-२०–– नरेन्द्र शर्मा

कार्यक्रम

मण्डपः	रविवारः	५–१२–२०––	मध्याह्नम्
वरयात्रा प्रस्थानम्	सोमवारः	६–१२–२०––	प्रातः सप्तवादनम्
विवाहः	सोमवारः	६–१२–२०––	रात्रौ द्वाद्वशवादनम्
वरयात्राप्रत्यावर्तनम्	मंगलवारः	७–१२–२०––	प्रातः अष्टवादनम्
प्रीतिभोजः	गुरुवारः	९–१२–२०––	सायं सप्तवादनम्

१४. प्रीतिभोज में सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रण-पत्र

श्रीमन् ,

मम् पुत्रस्य चिरंजीविनः राजकुमारगुप्तस्य कर्णबिधन संस्कारस्यउपलक्षे मई मासस्य सप्तमदिनांके सायं सप्तवादनसमये संपद्यमाने प्रीतिभोजे समागत्य माम् अनुगृह्णातु।

१६८ प्रेमनगर, आगरातः भवदीयः दर्शनाभिलाषि

१-५-२०–– भानुकुमार गुप्तः

विशेष– अस्मै पत्राय एव आव्हान–पदमान्यता ददात् श्रीमन्।

१५. मित्र को उत्सव में सम्मिलित होने के लिए निमंत्रण-पत्र

सुहृद्वर,

सादरं वन्दे,

एतद् विदित्वा नूनं हर्षमनुभविष्यति भवान्, यत्परमात्मन: महत्यनुकम्पया मम ज्येष्ठपुत्र:सतीश: आई. ए. एस. परीक्षायां सफलो घोषित:। तस्य उपलक्षे आयोजिते उत्सवे अद्य सायंकाले चतुर्वादन समये समागत्य बालकस्य उत्साहवृद्धिं कुर्यात्। अल्पाहारे च सम्मिलितो भूत्वा अनुग्रहतातु माम्।

जगदीशचन्द्र तव सखा

भानुपुरम् हरिशंकर:

१६. विद्यालय के वार्षिकोत्सव में आने के लिए मित्र को पत्र

प्रिय मित्र दिनेश,

नमस्कार:।

अत्र कुशलं तत्रास्तु। मम विद्यालयस्य वार्षिकोत्सव: आगामि जनवरी मासस्य पंचमे दिनांके आयोज्यते। सायंकाले सप्तवादने कालिदासस्य अभिज्ञान शकुन्तलं नाटकं छात्रै: अभिनीयते। तस्मिन् अहमपि अभिनयामि।

अत: त्वं तद् द्रष्टुम् अवश्यम् आगमिष्यसि इति आशयेन सूचयामि।

१-१-२०--

तव सखा

रमेश:

सेवा समिति विद्यालय:, प्रयाग:

●●●